CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरि ॥

गीता-दैनन्दिनी

सन् १९९६ ई०

(संवत् २०५२-५३)

गीताप्रेस, गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भुवनेश्वरी शरणं
कण्ठेहरिसाँ - 'गौरस'
श्रीजयनारायण मिश्रस्य पुस्तकं.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती

बी 3/175, शिवालाघाट
वाराणसी
१.१.७५.

स्वाध्याय-सेवार्थ - 10851

"सन्तः स्वयं परहिते विहिताभियोगाः"
- भर्तृहरि

"एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान्-
- परित्यज्य ये" - भर्तृहरि

"बुद्धि का जो स्तर सत्यबोध में है,
प्रज्ञा का वही स्तर नैतिक-बोध
में है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"गुणवद् वाक्यमादत्ते हंसः
— क्षीरमिवाम्भसः।"

× × ×

"सत को जानती है बुद्धि और
शिव को पहचानती है प्रज्ञा."

× × ×

"बुद्धि का श्रेष्ठ स्तर सत्यबोध में है,
प्रज्ञा का वही स्तर नैतिक-बोध है।"

"सभी व्यक्तियों में समानरूप से रहने वाली प्रज्ञा लोक-बुद्धि है। जब बुद्धि तेजोमय हो जाती है और स्वार्थ-वासना के सीमित क्षेत्र से ऊपर उठकर लोककल्याण में निरत होती है तो यही लोक-बुद्धि लोकात्मा कही जाती है।

× × ×

"सद्गुण वह है जो मानव-प्रकृति के अनुरूप हो। यहाँ मानव-प्रकृति से तात्पर्य यथार्थ-प्रकृति न होकर आदर्श-प्रकृति है। आदर्श प्रकृति के अनुरूप जो कार्य होता है, वही सत्कर्म है।

मनुष्य में परीक्षा और प्रज्ञा की ... जाता है। ... कार्य ... ... प्राइम है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेसकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५, फोन (०५५१) ३३४७२१; फैक्स (०५५१) ३३६९९७

कलकत्ता-	गोविन्दभवन-कार्यालय	©(०३३) २३८६८९४
पिन-७००००७	१५१, महात्मा गाँधीरोड	२३८०२५१
दिल्ली-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०११) ३२६९६७८
पिन-११०००६	२६०९, नयी सड़क	
पटना-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०६१२) ६६२८७९
पिन-८००००४	अशोकराजपथ, बड़े अस्पतालके सदर फाटकके सामने	
कानपुर-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०५१२) ३५२३५१
पिन-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	
वाराणसी-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०५४२) ३५३५५१
पिन-२२१००१	५९/९, नीचीबाग	
हरिद्वार-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	
पिन-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	
ऋषिकेश-	गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम	©(०१३६४) ३०१२२
पिन-२४९३०४		

स्टेशन-स्टाल

(१) दिल्ली जंक्शन, प्लेटफार्म नं० १ (२) नयी दिल्ली, प्लेटफार्म नं० ८-९ (३) अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली (४) हजरत निजामुद्दीन (दिल्ली), प्लेटफार्म नं० ४-५ (५) कानपुर, प्लेटफार्म नं० १ (६) गोरखपुर, प्लेटफार्म नं० १ (७) वाराणसी, प्लेटफार्म नं० ३ (८) हरिद्वार, प्लेटफार्म नं० १ (९) कोटा (राजस्थान), प्लेटफार्म नं० १ (१०) पटना-जंक्शन, पुस्तक-ट्राली (११) हावड़ा, न्यू कॉम्पलेक्स, प्लेटफार्म नं० १८ के पास (१२) मुगलसराय जं०, प्लेटफार्म नं० ३-४ (१३) लखनऊ (N.E.Railway) (१४) सिकन्दराबाद, प्लेटफार्म नं० १ (१५) सियालदा मेन, प्लेटफार्म नं० ८।

—::x::—

अन्य अधिकृत पुस्तक-विक्रेता—श्रीगीताप्रेस पुस्तक-प्रचारकेन्द्र, 'बुलियन बिल्डिंग', जौहरी बाजार, जयपुर-३०२००३ © (०१४१) ५६३३७९

अँग्रेजी एवं दक्षिण भारतीय भाषा प्रकाशनके प्रमुख विक्रेता
गोपाल सेवा ट्रस्ट-८२, कृष्णा टाकीज रोड, इरोड-६३८००३ © (०४२४) २१३९७६

सन् १९९३ से १९९५ तक २,१०,०००
सन् १९९६ चतुर्थ संस्करण १,००,०००

मूल्य—पचीस रुपये

प्रकाशक—गोविन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर
मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥श्रीहरिः॥

गीता-दैनन्दिनी

वर्ष १९९६ में सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती
पता - बी० ३/१७५, राजगुरु मठ
शिवालाघाट-वाराणसी
" स्वामी सहजानन्द सरस्वती आश्रम
बक्सर
यूनियन बैंक आफ इण्डिया - सोनारपुरा-वाराणसी
व्यक्तिगत - खाता संख्या - 5368 (५३६८)
सेन्ट्रल बैंक

"राजगुरु मठ न्यास समिति" खाता नं० 5374
यूनियन बैंक आफ इण्डिया - सोनारपुरा शाखा
वाराणसी

अन्तरात्मा नैतिक बुद्धि या ईश्वरीय बुद्धि है। ~~[illegible]~~ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चेतना चाहिये, नहीं तो महान् दुर्गति होनेवाली है। भाइयो! विचारो तो सही, किसके भरोसे आप नहीं चेतते? जो समय पूर्वमें व्यतीत हो चुका, उससे अच्छा बीतना चाहिये। जरा मनमें तो सोचो कि अब तुम क्या चाहते हो, तुमको और कौन मिलेगा और तुम कहाँ जाओगे। भाइयो! तुम झाड़ी, आश्रम, स्वर्ग आदि बहुत जगह घूमे हो, और भी जहाँ चाहे घूम लो, सब यही कहेंगे कि भजन, ध्यान, सत्संग, सेवा करो, ऐसा कोई नहीं कह सकता कि तुम निश्चिन्त बैठे रहो जिससे तुम्हारा उद्धार हो जायेगा। भला तुमको जंगल और पहाड़ोंमें ऐसा कौन महात्मा मिलेगा जो बिना किसी साधनके उद्धार कर दे, इसलिये जो समय बीत चुका वह बीत चुका, अब तो चेतो। जो तुम संग्रह कर रहे हो, वह तुम्हारे क्या काम आयेगा, मरनेके बाद कुछ भी नहीं कर सकोगे। इसलिये जहाँतक शरीर है, इससे पहले ही जो कुछ करना हो वह कर लो। मनुष्यशरीर पाकर ऐसा काम करना चाहिये जो आपके साथ जावे। भाइयो! आपको इस तरह कौन चेतायेगा? किसको क्या गर्ज है? आपको भगवान्‌ने बुद्धि दी है, जिससे विचारना चाहिये कि हम जो काम कर रहे हैं, यह ठीक कर रहे हैं या नहीं? यह मनुष्यशरीर ऐसा अनमोल है कि इसका एक क्षण भी करोड़ों रुपये देनेपर भी नहीं मिल सकता। इसी शरीरसे किये हुए पापोंको अनेक योनियोंमें करोड़ों वर्षोंतक भोगना पड़ता है। तुम्हारे आचरणों और कर्मोंकी तरफ देखो और सोचो कि इनसे कितनी दुर्गति होनेवाली है। इस प्रकार सोचकर खूब सावधानीके साथ काम करना चाहिये। भाइयो! तुमको नींद कैसे आती है और किस प्रकार हँसी सूझती है, क्योंकि जिस मनुष्यकी फाँसी होनेवाली है उसको नींद कैसी और हँसी कैसी?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

" अन्तरात्मा नैतिक बुद्धि या ईश्वरीय-बुद्धि है। यह मानव-प्रकृति का हृदयपक्ष है और आत्मा की चक्षु है। अन्तरात्मा सद्गुण दुर्गुण को वैसे ही देखती है जैसे आंख रूपरंग को देखती है।"

बड़ोंके प्रति

जैसे परिवारमें जो मुख्य व्यक्ति होते हैं, उनपर परिवारकी विशेष जिम्मेवारी होती है, ऐसे ही समाजमें जो व्यक्ति मुख्य माने जाते हैं, जिनको समाज आदरकी दृष्टिसे देखता है, उनको अच्छा मानता है, उनपर समाजकी विशेष जिम्मेवारी होती है। अपने-अपने स्थान या क्षेत्रमें जो व्यक्ति मुख्य कहलाते हैं, उन साधु, ब्राह्मण, व्याख्यानदाता, नेता, शासक, अध्यापक, आचार्य, महन्त, कथावाचक आदिको अपने आचरणोंमें विशेष सावधानी रखनेकी बड़ी भारी आवश्यकता है, जिससे दूसरोंपर उनका अच्छा प्रभाव पड़े। कारण कि मुख्य व्यक्तिकी ओर सबकी दृष्टि रहती है। रेलगाड़ीके चालकके समान मुख्य व्यक्तिपर विशेष जिम्मेवारी रहती है। रेलगाड़ीमें बैठे अन्य व्यक्ति सोये भी रह सकते हैं, पर चालकको सदा जाग्रत् रहना पड़ता है। उसकी थोड़ी भी असावधानीसे दुर्घटना हो जानेकी सम्भावना रहती है। गीतामें भगवान् कहते हैं—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥ (३। २१)

'श्रेष्ठ मनुष्य जो-जो आचरण करता है, दूसरे मनुष्य वैसा-वैसा ही आचरण करते हैं और वह जो कुछ कहता है, दूसरे मनुष्य उसीके अनुसार करते हैं।'

उपर्युक्त श्लोकमें श्रेष्ठ मनुष्यके आचरणके विषयमें तो 'यत्-यत्', 'तत्-तत्' और 'एव'—ये पाँच पद आये हैं, पर वचनके विषयमें 'यत्' और 'तत्'—ये दो ही पद आये हैं। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्यके आचरणोंका असर दूसरोंपर पाँच गुना (अधिक) पड़ता है और वचनोंका असर दो गुना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनमोल मोती

याद रखो—जिसका चित्त अशान्त, सदा क्षुब्ध है, वह चाहे किसी भी ऊँची-से-ऊँची स्थितिमें हो, कभी सुखी नहीं हो सकता। मरते समय अन्तिम श्वासतक उसका चित्त अशान्त रहता है, फलतः वह दुःखी ही रहता है और यह अशान्ति तबतक मिट नहीं सकती, जबतक मनमें सांसारिक भोगोंकी—पदार्थों और परिस्थितियोंकी कामना है।

याद रखो—कामनाकी उत्पत्ति होती है आसक्तिसे। भोगासक्ति ही भोग-कामनाका उत्पत्तिक्षेत्र है। भोगासक्ति तबतक बनी रहती है, जबतक भोगोंमें सुखकी सम्भावना दीखती है। भोगसुखकी यह आस्था सर्वथा भ्रममूलक ही है; क्योंकि हम देखते हैं कि भोगप्राप्तिकी इच्छा होते ही जलन—दुःख आरम्भ हो जाता है। भोगोंकी प्राप्तिमें दुःख होता है, भोग प्राप्त होनेपर दूसरोंके पास अपनेसे अधिक भोग देखकर दुःख होता है, भोगकी शक्ति न रहनेपर दुःख होता है, भोगनाशमें दुःख होता है और भोगपदार्थोंको छोड़कर मर जानेमें दुःख होता है—इस प्रकार भोगमें दुःख-ही-दुःख है। इनमें सुख मानना सर्वथा भ्रम है। पर यह भ्रम जबतक बना है, तबतक दुःखपरिणामिनी भोगकामना बनी ही रहेगी।

याद रखो—जो मनुष्य विवेकके द्वारा अनित्य तथा अपूर्ण भोगोंमें दुःखका अनुभव करता है, उसके मनसे भोगकामना दूर हो जाती है। फिर वह भोगकी प्रतीक्षामें नहीं रहता। उसकी शान्ति तथा सुख भोगाधीन नहीं रहते। वह नित्य अपने आत्माकी शान्तिमें ही स्थित रहता है। उसे भोगस्पृहा नहीं होती, भोगोंमें ममता नहीं होती तथा दुःखमय जान लेनेपर भोगप्राप्तिमें अभिमान नहीं होता। इससे उसकी शान्ति स्वाभाविक तथा शाश्वती हो जाती है और फलतः वह नित्य सत्य अपरिवर्तनशील परम आनन्दका अनुभव करता है।

याद रखो—किसी भी ऊँचे-से-ऊँचे सम्राट्के पदमें, राष्ट्रकी अध्यक्षताके पदमें, ज्ञान-विज्ञान-ऐश्वर्यकी प्रचुरता तथा तज्जनित यश-कीर्तिमें, विद्या-बुद्धिकी विशालतामें और देवत्व-पदमें भी शान्ति तथा सुख नहीं है, यदि मनमें भोगकामना बनी है। कामना-जगत्में ऐसे पुरुषोंकी कामना विशेष बढ़ जाती है और उन्हें पद-पदपर प्राप्त भोगके नाशका भय, विशेष प्राप्त करनेकी चिन्ता, न मिलनेपर भयंकर विषाद बना रहता है। उनके द्वारा उन प्राप्त भोगोंका दुरुपयोग होता है, उनसे नये-नये अपराध बनते हैं और परिणामस्वरूप उन्हें बलात् अधोगतिमें जाना पड़ता है। अतः प्रत्येक दृष्टिसे भोग-कामनाका त्याग आवश्यक है।

(नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय।१।

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्।२।

dhṛtarāṣṭra uvāca
dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ ।
māmakāḥ pāṇḍavāścaiva kimakurvata sañjaya ॥ 1 ॥
sañjaya uvāca
dṛṣṭvā tu pāṇḍavānīkaṁ vyūḍhaṁ duryodhanastadā ।
ācāryamupasaṅgamya rājā vacanamabravīt ॥ 2 ॥

पौष शुक्ल ११, वि० सं० २०५२, सोमवार, 'सर्वधारीनाम' संवत्सर, शक १९१७

श्रीकृष्ण-सं० ५२२१, JAN.1.1996

पुत्रदा एकादशीव्रत सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१४

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥
(कठ १।३।१४)

श्री स्वामी चिदानंद गिरि - ऋषिकेश, डा० भोगीलाल शर्मा श्री ... राजेन्द्र ... स्वतन्त्र ... को पत्र लिखा। कल कल्याण कोष ... -१०० ... के लिये ... जमा किये गये। ... एवं ... गये। आज ... श्री ... मिले।

× × ×

भगवत्प्राप्ति में अपना पुरुषार्थ मानने का कारण — अहंकार ही होता है। भक्त के इस अहंकार दोष को नष्ट करने के लिये भगवान् उसे भीषण संकट में डालकर यह बात प्रत्यक्ष दिखला देते हैं कि कार्यसिद्धि में अपनी सामर्थ्य मानना मनुष्य की एक बड़ी गलती है। इस प्रकार अहंकार नाश के लिये जो विपत्ति में डालना है, वह भी भगवान् की विशेष कृपा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता। ३।
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः। ४।

paśyaitāṁ pāṇḍuputrāṇāmācārya mahatīṁ camūm ।
vyūḍhāṁ drupadaputreṇa tava śiṣyeṇa dhīmatā ॥ 3 ॥
atra śūrā maheṣvāsā bhīmārjunasamā yudhi ।
yuyudhāno virāṭaśca drupadaśca mahārathaḥ ॥ 4 ॥

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१५

आज अभी पधारे हैं, श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद शर्मा।
[illegible] प्रसंग कि शिक्षा [illegible] - भगिनी पं. राधिकाशरण
पाण्डेय देवकीनन्दन-कल्पना, मठ में आये। उन्होंने उनके ग्रन्थ के
[illegible] किए। उन्होंने एक [illegible] और [illegible] और
सन्तोष जुटाकर भेजवा दिया। वे स्वयं प्रकाशक भी हैं।
उन्हें मैंने संस्कृत [illegible] के लिये कुछ पुस्तकें भेंटस्वरूप दीं।
(1) 'गुजरात ब्राह्मण-समाज' (2) [illegible] (3) [illegible]
नन्दा 'गीता हृदय' - स्वामी [illegible] सरस्वती कृत साधकों [illegible]
[illegible] का इतिवृत्त, और [illegible]
[illegible] स्वामी [illegible] सरस्वती - स्वामी [illegible] सरस्वती [illegible] की
[illegible] आदि।
सम्पादक परामर्शों को भी पत्रिका के [illegible]
[illegible] का [illegible]।

× × ×

परन्तु भगवान् की कृपा का तात्पर्य यह कदापि नहीं है
कि मनुष्य सब कुछ छोड़कर हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाय,
कुछ भी न करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः।५।
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।६।

dhṛṣṭaketuścekitānaḥ kāśirājaśca vīryavān |
purujitkuntibhojaśca śaibyaśca narapuṅgavaḥ ||5||
yudhāmanyuśca vikrānta uttamaujāśca vīryavān |
saubhadro draupadeyāśca sarva eva mahārathāḥ ||6||

प्रदोषव्रत सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१५

आज भी नरेन्द्र की मिट्टी इकट्ठे का कार्य सफल नहीं हो सका।
श्री प्रकाश नारायण ठीक नहीं रहे हैं। वे कोई व्यवस्था नहीं कर पाते।
आज हरिद्वार कल्लू को स्कूल पत्नी से तर्पण देवरानी ? द्वारा
श्री ... शरद सिपाही एवं ... गर्मी सिवानी के पास के गाँव
से ... के लिये भोजन भेजा गया। वहाँ का व्यवहार उनके
निवासी ... गाँव का ... वासी है। डा० योगेन्द्र नाथ
शर्मा को पत्र छोड़ गया। बालों की ... दूसरी ... गई।
नवादा के अभिमन्यु स्थानीय जलविभाग में भर्ती एवं
फतेहगढ़ ... एक अन्य अभिमन्यु सांकाल ... के पास
आदि किये।
अखिलकुमार गुप्ता वकील ... के साथ ... आये
निधि ... के क्रम में आए।

"राम सिंधु घन सज्जन धीरा।
चंदन तरु हरि संत समीरा॥
मोरे प्रभु अस विश्वासा।
राम ते अधिक राम कर दासा॥" - तुलसीदास

'भगवान् समुद्र है तो संत मेघ हैं। भगवान चंदन है तो संत समीर (पवन) हैं। इस हेतु मेरे मन में ऐसा विश्वास है कि राम के दास राम से बढ़कर हैं।'

जब गृहस्थ संत पुरुष सर्वसद्गुण सागर परमात्मा से, शांति, समता, प्रेम, ज्ञान आदि गुण लेकर चारों ओर संसार में उन्हें बरसाते हैं, तब जिज्ञासु [illegible] सारे ... मोर, पपीहा, चातक बन जाते हैं, किन्तु ... जगत के लोग, उनसे लाभ उठाते हैं।

'वासुदेवः सर्वम्'— सब कुछ भगवान् ही हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम । नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ।७।
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिञ्जयः । अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ।८।

asmākaṁ tu viśiṣṭā ye tānnibodha dvijottama |
nāyakā mama sainyasya sañjñārthaṁ tānbravīmi te ||7||
bhavānbhīṣmaśca karṇaśca kṛpaśca samitiñjayaḥ |
aśvatthāmā vikarṇaśca saumadattistathaiva ca ||8||

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१६

आज प्रातः डा० लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी पुत्र डा० उदयनारायण त्रिपाठी, रीडर - मोतीलाल नेहरू इन्डोलॉजिकल इन्स्टीच्यूट, नई दिल्ली, ग्रा० करनाल-जी० टी० रोड, को विभिन्न ग्रंथों के सम्पादनार्थ श्री हरेराम राय, गाजीपुर के माध्यम से एक लंबा पत्र लिख भेजा - जो दिल्ली जा रहे हैं।

श्री प्रकाशनारायण राय करीमुद्दीनपुर, प्रबन्धक, बैंक आफ इण्डिया, नंदगंज, बहुत सीधे और बातूनी आदमी मालूम होते हैं। वे आजतक मिली दुकानों की - अपनी कोर्ट से लोन की कोई व्यवस्था नहीं कर सके। यह खेदजनक है। बिजली बिल के भुगतान की भी कोई व्यवस्था - प्रमोदकुमार, अपनी स्वाभाविक ढिलाई और बहुधंधिता के कारण नहीं कर सकेंगे

श्रेष्ठ पौराणिक कहानियां — राधावल्लभ त्रिपाठी

जीवनमें आगे बढ़ना चाहते हैं तो दूसरोंपर निर्भर मत रहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः। ९ ।
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्। पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्। १० ।

anye ca bahavaḥ śūrā madarthe tyaktajīvitāḥ ।
nānāśastrapraharaṇāḥ sarve yuddhaviśāradāḥ ॥ 9 ॥
aparyāptaṁ tadasmākaṁ balaṁ bhīṣmābhirakṣitam ।
paryāptaṁ tvidameteṣāṁ balaṁ bhīmābhirakṣitam ॥ 10 ॥

पूर्णिमा, माघस्नानारम्भ सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१७

आज लॉसी रवुर्द के अपने शिष्य श्री कालिकाप्रसाद, राज लंबाल्का, उनके दो अन्य भाइयों केदार ठाकुर तथा इन्द्रजीत ठाकुर सहित, राजगुरुमठ के जीर्णोद्धार कार्य में योगदान के लिये अनुरोध के रूप में उनके पटना के पते पर लिखा।

श्रद्धा अद्भुतम की प्राणशक्ति है और जीवन रस का अजस्र स्रोत भी। श्रद्धा का उद्‌गम जीवित ईश्वर प्रीति है।

आखिर यह विश्व परमेश्वर की ही तो लीला-क्रीड़ा है। कष्ट में भी आनन्द है, ताप में भी तप है। जहाँ प्रीति है, वहाँ तकलीफ में भी मजा है। बच्चे को रखने में माँ को सुख का त्याग करना पड़ता है। फिर भी इस प्रेममय त्याग में वह प्रतिपल आनन्दित रहती है।

जहाँ बुद्धि चलती है वहाँ श्रद्धा को लाना गलत है। व्यक्ति की संवेदना काँच को है, काँटा को नहीं। जहाँ बुद्धि रुकती है, वहाँ श्रद्धा की जरूरत पड़ती है।

बुद्धि खण्ड धर्मिणी है। वह अपने स्वभाव के विपरीत अखण्ड तत्व को कैसे जान सकती है? इसलिये उपनिषदों में परमसत्य को तर्कातीत कहा गया है। "नैषा तर्केण मतिरापनेया।" जब तक बुद्धि का कोलाहल शान्त नहीं होगा, तब तक बोधि की वाणी श्रुति गोचर नहीं होगी।

श्रद्धा के व्याकरण का सम्बन्ध प्रभाव की महत्ता से न होकर व्यक्ति के जीवन के नियमन से है।

तर्क वितर्क करते करते जब बुद्धि थक जाती है तो उसे अपनी शक्ति की सीमा समझ में आने लगती है। शक्ति सीमा का ज्ञान ही
उकतानेसे हानिकी सम्भावना रहती है।
परमात्मा का निर्देश पाने का मार्ग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः । भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ।११।
तस्य सञ्जनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः । सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ।१२।

ayaneṣu ca sarveṣu yathābhāgamavasthitāḥ |
bhīṣmamevābhirakṣantu bhavantaḥ sarva eva hi || 11 ||
tasya sañjanayanharṣaṁ kuruvṛddhaḥ pitāmahaḥ |
siṁhanādaṁ vinadyoccaiḥ śaṅkhaṁ dadhmau pratāpavān || 12 ||

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१८

ईश्वर के सम्बन्ध में तर्क को यहाँ स्थान नहीं है। इसी कारण मैं उपनिषदों को मानता हूँ कि प्रभु का तर्क से नहीं जाना जा सकता है। तर्क जाति सम्पन्न शास्त्र ग गमाते तर्क विवेक तत्त्वों में स्वरूप है।

बड़े बड़े आगे तत्त्व सोचता रहा बुद्धि है, अध्यात्म के क्षेत्र में तर्क सर्वथा अनुपयोगी नहीं है। बुद्धि के ऊँचे पर बैठकर हृदय विश्वास की ओर बढ़ता है। बुद्धि की अपनी सीमा है परमार्थ तक उसकी गति नहीं है। फिर भी परमार्थ की सीमा जहाँ से आरम्भ होती है वहाँ तक तो बुद्धि जा ही सकती है। इस सीमा पर हृदय को पहुँचाकर बुद्धि लौट आती है। यहीं से सुदूर प्रभा की उज्ज्वल किरण दिखाई देती है, जिसके सहारे हृदय आगे बढ़ता है

माघ कृष्ण २, रविवार, 7 JAN.

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१९

उसके भीतर के ज्ञान का अँधेरा धीरे धीरे छँटने लगता है और वह भगवत् की गोद में पहुँच कर सदा के लिये विश्रान्त हो जाता है।

* * *

तर्क वह चिनगारी है, जो अन्धविश्वास को [illegible] आस्था से सम्पन्न करके उसे निर्मल श्रद्धा का रूप देता है। यही श्रद्धा जीवन के लिये संजीवनी है।

जिसकी दिव्यदृष्टि बंद है, उसे न तो ईश्वर का साक्षात्कार ही कराया जा सकता है [illegible] न ईश्वर रूपा।

हर कोई पुरातन अनन्त जीवों को दूर तक समझता है। हम न होंगे तो थे, और बाद में भी रहेंगे। ऐसी श्रद्धा से जीवन की सुसंगत व्याख्या होती है।

मृत्यु प्राण को विश्रान्ति देने वाली निद्रा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः। सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्। १३।
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः। १४।

tataḥ śaṅkhāśca bheryaśca paṇavānakagomukhāḥ |
sahasaivābhyahanyanta sa śabdastumulo'bhavat || 13 ||
tataḥ śvetairhayairyukte mahati syandane sthitau |
mādhavaḥ pāṇḍavaścaiva divyau śaṅkhau pradadhmatuḥ || 14 ||

** संतत्व **

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१९

सर्वकामानां निःशेषः। सर्वकामानां निःशेषः॥

कामनाओं की निःशेष निवृत्ति ही संत का लक्षण है। कामनाओं की निःशेष निवृत्ति ही संत का निःशेष लक्षण है।

* * *

आकाशगामी सूर्य पृथ्वी को ऊपर से आलोक प्रदान करता है किन्तु आपलोग पृथ्वी पर रहकर उसपर ईश्वरीय प्रकाश को प्रसारित करते हैं; अतः हम आपकी वन्दना करते हैं। भगवान् सविता पृथ्वी को ताप प्रदान करते हैं और आपलोग अपने भीतरी खजाने में से ज्ञानरूपी अमृत प्रदान कर जीवात्माओं को सुखरूप उष्णता प्रदान करते हैं।

यह पृथ्वी आपकी पावन चरणधूलि के संपर्क से हमारे रहने योग्य बनी हुई है। मेसोपोटामिया और अरब के सूखे रेगिस्तानों में से यदि मूसा, ईसा और रसूल जैसे अमृत निर्झर पैदा न होते तो वहाँ की तप्त बालुका में झुलसने कौन जाता? पाश्चात्य क्षेत्र में यदि हमें सुकरात, प्लेटो, अरस्तू और संत फ्रांसिस जैसी आत्माओं के दर्शन न होते तो वहाँ के लोगों को शांति का पाठ कौन पढ़ाता? ब्रह्मज्ञानी लाओत्से और महात्मा कनफ्यूसस के नाम को चीन अब भी गौरव के साथ याद करता है, और उनके उपदेश उस देश की एक अमर सम्पत्ति हैं। हमारा पवित्र भारतवर्ष भी शून्य प्रतीत होने लगेगा यदि व्यास-वाल्मीकि, शुकदेव-नारद, याज्ञवल्क्य-जनक, वशिष्ठ-दधीचि, बुद्ध-महावीर, शङ्कर-रामानुज, मध्व-चैतन्य, नानक-कबीर, सूर-तुलसी, वल्लभाचार्य-माधवेन्द्र, रामदास, ज्ञानदेव-तुकाराम, ज्ञान-रामकृष्ण रामकृष्ण प्रभृति संतों को इसके इतिहास में से निकाल दिया जाय।

झुँझलाहट एक बुरी आदत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः। पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।१५।
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः। नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।१६।

pāñcajanyaṁ hṛṣīkeśo devadattaṁ dhanañjayaḥ |
pauṇḍraṁ dadhmau mahāśaṅkhaṁ bhīmakarmā vṛkodaraḥ || 15 ||
anantavijayaṁ rājā kuntīputro yudhiṣṭhiraḥ |
nakulaḥ sahadevaśca sughoṣamaṇipuṣpakau || 16 ||

संकष्ट श्रीगणेशचतुर्थीव्रत सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२०

संत ही भारतवर्ष के स्तंभ हैं, संत ही उसके आधार हैं, संत ही उसके संदेशवाहक हैं, और संत ही उसको संतोष का प्रेम, प्यार और शांति का पाठ पढ़ानेवाले हैं।

किसी जाति की आध्यात्मिक पिपासा शांत करने के लिये संत वर्षा के रूप में प्रकट होते हैं। संतों की वाणी, संतों के बताये हुए सिद्धान्त, उनका स्थापित किया हुआ आदर्श और उनके व्यक्तित्व का प्रभाव मनुष्यों को पाशविकता से ऊपर उठाने में जादू का-सा काम करते हैं।
गुरु गोविन्दसिंह के जीवन पर गुरुनानक के उपदेशों की ही छाप पड़ी थी। महात्मा सम्राट अशोक के चरित्र पर भी समस्त एशिया को प्रकाश देनेवाले भगवान बुद्ध का ही प्रभाव पड़ा था।

प्रकृतिको 'माया' समझना चाहिये और महेश्वरको मायापति। :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः। धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः।१७।
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते। सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक्।१८।

kāśyaśca parameṣvāsaḥ śikhaṇḍī ca mahārathaḥ |
dhṛṣṭadyumno virāṭaśca sātyakiścāparājitaḥ || 17 ||
drupado draupadeyāśca sarvaśaḥ pṛthivīpate |
saubhadraśca mahābāhuḥ śaṅkhāndadhmuḥ pṛthak pṛthak || 18 ||

सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २१

आज अकस्मात प्रातः ही श्री हरिकृष्ण [illegible] जी अयोध्या से
आ पहुँचे। पं० बड़ा कागजी जी [illegible] केन्द्र से चार
नवीन कंबल मठके अतिथियों के लिए तथा [illegible] आदि
अपने [illegible] लेते आये। वे अपने [illegible] गये।
[illegible] अध्यापकों [illegible] को
दे गये। पाँच सौ रुपये मठ के व्यवस्था खर्च के लिये दे गये।
वे पुनः [illegible] यहाँ [illegible] पधारा करेंगे।
बनारस से [illegible] के [illegible] और [illegible]
[illegible] के [illegible] इंटरव्यू [illegible]
साथी [illegible] कर्मियों से [illegible] हैं
[illegible] मिली। [illegible]।

×

श्री [illegible] शर्मा [illegible] केन्द्र [illegible]
राजगुरु मठ के [illegible] कार्यों में योगदान के लिये [illegible]।
श्री [illegible] शर्मा - गायकवाड़।

सबमें प्रभुको देखनेसे बढ़कर और कोई साधन नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्।१९।
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः।२०।

sa ghoṣo dhārtarāṣṭrāṇāṁ hṛdayāni vyadārayat |
nabhaśca pṛthivīṁ caiva tumulo vyanunādayan || 19 ||
atha vyavasthitāndṛṣṭvā dhārtarāṣṭrān kapidhvajaḥ |
pravṛtte śastrasampāte dhanurudyamya pāṇḍavaḥ || 20 ||

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२२

"मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा –
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुण परमाणून् पर्वती कृत्य नित्यं
निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः" ॥

= मन में, वचन में और काया में पुण्य का पीयूष (अमृत) भरा हुआ है, तीनों भुवन के उपकार की श्रेणियों से ही जो परम प्रसन्न और तृप्त रहते हैं, दूसरों के परमाणु समान गुणों को जो पर्वत के समान मानते हों, ऐसे संत कितने हैं?

किसीके अहितका चिन्तन न करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः। धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः।२३।

सञ्जय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत। सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्।२४।

yotsyamānānavekṣe'haṁ ya ete'tra samāgatāḥ |
dhārtarāṣṭrasya durbuddheryuddhe priyacikīrṣavaḥ || 23 ||
sañjaya uvāca
evamukto hṛṣīkeśo guḍākeśena bhārata |
senayorubhayormadhye sthāpayitvā rathottamam || 24 ||

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२३

आज १२ बजे राजगुरुमठ · शिवाला घाट वाराणसी में,
राजगुरुमठ-न्यास-समिति के सदस्यों · [illegible] तथा [illegible]
के सहयोगियों की बैठक हुई। राजेन्द्र शर्मा, [illegible] शर्मा,
[illegible] प्रमोद कुमार दीक्षित, [illegible]
[illegible]
इस बैठक की [illegible] के [illegible]
[illegible] स्वीकृत करने के बाद [illegible] के निर्माण कार्य
[illegible]
[illegible] हो चुके हैं।
आगे [illegible]

माघ कृष्ण ८, रविवार, 14 JAN.

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२४

मकर-संक्रान्ति

आज [illegible] तथा
[illegible] शर्मा को बुलाकर
आश्रम के [illegible] सेवा [illegible] किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्। उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति। २५।
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्।आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा। २६।

bhīṣmadroṇapramukhataḥ sarveṣāṁ ca mahīkṣitāṁ I
uvāca pārtha paśyaitānsamavetānkurūniti II 25 II
tatrāpaśyatsthitānpārthaḥ pitṝnatha pitāmahān I
ācāryānmātulānbhrātṝnputrānpautrānsakhīṁstathā II 26 II

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२५

शिलान्यास का मुहूर्त —
← २मार्च शनिवार 4.33 से 6.37
सायं के बीच लगभग 5 बजे सायं

पं शिवनारायण व्यास के पुत्र गौरीशंकर व्यास -
बुलानाला में।

श्री शिवनारायण राय ग्राम पो० मोंचा
पो० मनियों - मिर्जापुर - गाजीपुर
श्री रामकृत राय - ग्राम - मोंचा।

अच्छे-से-अच्छे गुण भी क्रोधके आवेशसे दब जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि। तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्। २७।
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्। २८।

śvaśurānsuhṛdaścaiva senayorubhayorapi ।
tānsamīkṣya sa kaunteyaḥ sarvānbandhūnavasthitān ॥ 27 ॥
kṛpayā parayāviṣṭo viṣīdannidamabravīt ।
arjuna uvāca
dṛṣṭvemaṁ svajanaṁ kṛṣṇa yuyutsuṁ samupasthitam ॥ 28 ॥

षट्तिला एकादशीव्रत (स्मार्त) सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २६

आज विश्वम्भरपुर के अजयकुमार राय - जो डा० [illegible] राय
अध्यापक [illegible] के पड़ोसी और मित्र हैं वे अपना ट्रैक्टर
लेकर मिट्टी [illegible] के लिये आये। उनसे परिचय हुआ। मैंने
उन्हें "गीतामृतम्" की एक प्रति, तथा [illegible] की [illegible]
तथा [illegible] की [illegible] भेंट की।

भगवत्स्वरूपमें चित्तकी एकाग्रताका नाम ध्यान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते। २९।
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते। न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः। ३०।

sīdanti mama gātrāṇi mukhaṁ ca pariśuṣyati |
vepathuśca śarīre me romaharṣaśca jāyate || 29 ||
gāṇḍīvaṁ sraṁsate hastāttvakcaiva paridahyate |
na ca śaknomyavasthātuṁ bhramatīva ca me manaḥ || 30 ||

षट्तिला एकादशीव्रत (वैष्णव) सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२६

आज भी ईश्वर आवास मिट्टी ले गया। पर उनके नहीं रहने से मजदूरों ने बहुत कामचोरी और लापरवाही से काम किया। सायंकाल कमलाकान्त शास्त्री अध्यापक होने वाले आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव। न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे। ३१।
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च। किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा। ३२।

nimittāni ca paśyāmi viparītāni keśava ।
na ca śreyo'nupaśyāmi hatvā svajanamāhave ॥ 31 ॥
na kāṅkṣe vijayaṁ kṛṣṇa na ca rājyaṁ sukhāni ca ।
kiṁ no rājyena govinda kiṁ bhogairjīvitena vā ॥ 32 ॥

प्रदोषव्रत — सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २७

आज हरिकृष्ण ठाकुर के यहाँ पहुँचा मैं। प्रधानजी [illegible]
[illegible]। मैंने शङ्कर दयाल सिंह के आकस्मिक देहावसान
पर व्यापार-समिति द्वारा स्वीकृत शोकप्रस्ताव के [illegible]
स्व० सिंह के परिवार को संबोधित करते हुए एक संवेदन-संदेश
लिखा।

अपराह्न ४ बजे श्री हरिकृष्ण ठाकुर स्वयं उनके पुत्र देवेन्द्र ठाकुर
अपनी गाड़ी से [illegible] गये [illegible]। भोजन के बाद तीन बजे
[illegible] के लिए [illegible] स्वामी [illegible] आश्रम
कैलाश धाम में पहुँचे। थोड़ी देर बाद डा० चन्द्रशेखर मिश्र जी को पहुँच गये,
आश्रम में कुछ कार्यवाही हुई। मंडलेश्वर जी कहीं बाहर गये थे- उनके सहयोगियों
ने उचित व्यवस्था करके मेरी और लोगों ने बातें की। बाद में जलपान
हुई। शाम [illegible] गुजरी। बहुत ठंडक थी। चन्द्रशेखर मिश्र
बड़े चतुर हैं। प्रच्छन्न नीति चलाते हैं। [illegible] दरबार में [illegible]
और [illegible] है। [illegible] नहीं।
[illegible]
[illegible] का प्रयास होना चाहिये किन्तु सिद्धान्त और
[illegible] की बलि देकर कदापि नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च। त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च। ३३।
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः। मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा। ३४।

yeṣāmarthe kāṅkṣitaṁ no rājyaṁ bhogāḥ sukhāni ca |
ta ime'vasthitā yuddhe prāṇāṁstyaktvā dhanāni ca || 33 ||
ācāryāḥ pitaraḥ putrāstathaiva ca pitāmahāḥ |
mātulāḥ śvaśurāḥ pautrāḥ śyālāḥ sambandhinastathā || 34 ||

~~प्रात: महामण्डलेश्वर जी स्वामी [illegible]~~ सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२७

ऊपर की और [illegible] आ गये। ~~और [illegible]~~
रहलते पास की बातें, कार्यक्रम और विभिन्न मुद्दों पर
विचार विमर्श होता रहा। इन लोगों के आवास के लिये
[illegible], बाद में [illegible] के [illegible] मिले।
[illegible] आदि [illegible]।

× १० बजे विश्व हिन्दू परिषद की ओर से वृहद सन्त सम्मेलन, केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल का अधिवेशन हुआ जो तीन घंटे तक अबाध गति से चलता रहा। ५ बजे की वर्तमान परिस्थितियों, संस्कृति, [illegible], हिन्दुत्व और धर्मान्तरण के विभिन्न मुद्दों पर सर्वसम्मति से [illegible] तथा [illegible] प्रस्ताव स्वीकृत हुए। रामजन्मभूमि न्यास के [illegible], [illegible], [illegible] रामचन्द्र दास, स्वामी [illegible] आदि [illegible], साध्वी ऋतम्भरा आदि उपस्थित थे। प्रस्ताव [illegible] हुए।

रात में पुन: सन्त सम्मेलन हुआ। मैंने भी महामण्डलेश्वर जी के [illegible] और [illegible] कुछ [illegible] को [illegible] किया। राष्ट्रधर्म, संस्कृति, हिन्दुत्व, धर्म और सन्तों के [illegible] विषय पर कुछ कहा।
महाराज व दूसरे दिन [illegible] का वापस काशी जाने की [illegible] थी। इन्होंने दिल्ली पहुँचने की [illegible]। मैंने [illegible] दिया कि पहुँचेंगे। अप्रैल के तीसरे सप्ताह में १३ से १५ तक [illegible] दिल्ली में [illegible] का कार्यक्रम होने को है।
[illegible], और उनसे भी बातें हुईं। [illegible]

जिन आचरणोंके द्वारा जीवोंको परम सुख मिले—वही परम सेवा है।

[illegible]

SatGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन । अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते । ३५ ।
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः । ३६ ।

etānna hantumicchāmi ghnato'pi madhusūdana ।
api trailokyarājyasya hetoḥ kiṁ nu mahīkṛte ॥ 35 ॥
nihatya dhārtarāṣṭrānnaḥ kā prītiḥ syājjanārdana ।
pāpamevāśrayedasmānhatvaitānātatāyinaḥ ॥ 36 ॥

मौनी अमावास्या   सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२८

आज पूर्वाह्न भोजन किया गया। प्रमोद कौशल श्री राधेश्याम तथा उनकी [illegible] आगये। वे लोग [illegible] दारागंज स्टेशन पर ही ठहरे हैं।
दिन में प्रमोद [illegible] मण्डल [illegible] सत्यमूर्ति [illegible] और [illegible]
प्रमोद [illegible] श्री [illegible]
गाड़ी [illegible]।
[illegible]
से [illegible]। वहाँ से वे लोग [illegible]
[illegible]

माघ शुक्ल १, रविवार, 21 JAN.

स्वामी परमानन्द [illegible]   सूर्यो० ६।४७   सूर्या० ५।२९
[illegible] आये [illegible]
रात को [illegible]
[illegible]। बाद में ठीक
हुए।
आज दिन में [illegible] स्वामी परमानन्द तथा [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
मैंने दो पत्र लिखे। एक [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्। स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव। ३७।
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः। कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्। ३८।

tasmānnārhā vayaṁ hantuṁ dhārtarāṣṭrānsvabāndhavān |
svajanaṁ hi kathaṁ hatvā sukhinaḥ syāma mādhava || 37 ||
yadyapyete na paśyanti lobhopahatacetasaḥ |
kulakṣayakṛtaṁ doṣaṁ mitradrohe ca pātakam || 38 ||

सूर्यो० ६। ४६, सूर्या० ५। ३०

आज सहसा [illegible] योगीन्द्र की पुत्री अम्बिका 'गुड़िया' प्रयाग
से एक दिहाड़ी अपने मामा के पुत्र के साथ आ पहुँची। किन्तु के
श्री सीताराम शर्मा भी आये, कमलाकान्त शर्मा जा रहे थे।
एक भी [illegible] पता नहीं चला कि [illegible] इसके [illegible]
[illegible] व्यवस्था हो चुकी। [illegible] को महामण्डलेश्वर भेजा
गया कि प्रमुख [illegible] से मिलकर वाराणसी [illegible] के अपने
सहयोगियों से राजगुरुमठ के जीर्णोद्धार के लिये सहयोग रूप चंदा
वसूल कर सकें। शिवप्रसाद शर्मा [illegible] नाती [illegible]
[illegible] के लिये प्रयाग गये। [illegible] एक साथ
से अपनी पत्नी सहित [illegible] के [illegible] में आये रहे।
[illegible] शर्मा आग [illegible] हुआ [illegible]
[illegible] लाने में [illegible]
[illegible] प्रमोद और [illegible]
[illegible] के लिये [illegible] हो जाता है।
[illegible] के बारे [illegible] मिले हैं [illegible]
[illegible] में लगे रहे। [illegible] कुंवर [illegible] और
[illegible] पत्नी [illegible]
[illegible] रहे। [illegible] भी [illegible] मिले
और भी [illegible] किया [illegible] हुआ। के २ मा ३
[illegible] के बाद [illegible] गोरखपुर [illegible] आगे
[illegible] पूर्व क्षेत्र में जायेंगे।
[illegible] सेवा का एक 'नाम' बहुत [illegible]
[illegible] और [illegible] लड़का है, [illegible]
नहीं।

अपने सुखकी इच्छासे नाशवान्, दूसरोंके सुखकी इच्छासे अविनाशी सुख मिलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्। कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन।३९।
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत।४०।

katham na jñeyamasmābhiḥ pāpādasmānnivartitum ।
kulakṣayakṛtaṁ doṣaṁ prapaśyadbhirjanārdana ॥ 39 ॥
kulakṣaye praṇaśyanti kuladharmāḥ sanātanāḥ ।
dharme naṣṭe kulaṁ kṛtsnamadharmo'bhibhavatyuta ॥ 40 ॥

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।३०

आज प्रमोदकुमार मिश्र आये हैं गाजीपुर
से [illegible] लौटेंगे। आज पत्र में [illegible] शर्मा,
सदस्य विधान परिषद - [illegible] को मैंने [illegible]
के [illegible] भेजने के संबन्ध में पत्र
लिखा। शुद्धि पञ्चाङ्ग प्रकाशन [illegible] भेजी।

डा० लक्ष्मीनारायण तिवारी; निदेशक-
मोतीलाल जालान इण्डो लॉजिकल इन्स्टीच्यूट को
अपनी 'वर्धमान' के प्रकाशन एवं रजि. [illegible] के संबन्ध की
संबन्ध में पत्र लिखा।

भोगीके द्वारा सबको दुःख मिलता है और योगीके द्वारा सबको सुख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः । स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ।४१।
सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ।४२।

adharmābhibhavātkṛṣṇa praduṣyanti kulastriyaḥ ।
strīṣu duṣṭāsu vārṣṇeya jāyate varṇasaṅkaraḥ ॥ 41 ॥
saṅkaro narakāyaiva kulaghnānāṁ kulasya ca ।
patanti pitaro hyeṣāṁ luptapiṇḍodakakriyāḥ ॥ 42 ॥

सूर्यो० ६।४५, सूर्या० ५।३१

आज बड़पुर के श्री जयप्रकाश शर्मा नंदजी को रुद्राक्ष (मंत्र 'ॐ नमः शिवाय' की दीक्षा दी गई। उन्होंने सबको भोजन कराया, चादर एवं दक्षिणा दी।

× × ×

कुविचारों का उद्गम मन और मन का संचालन उसके पूर्व संचित संस्कारों से होता है। संस्कार हमारे अन्तःक्षेत्र, अन्तःस्थल में बीज रूप में पड़े होते हैं जो अनुकूल परिस्थितियां पाकर मन को प्रेरित करते हैं। दुष्कर्म ही विश्व में अशांति का कारण है। राग, द्वेष, छल, छद्म से प्रेरित जो भी कर्म किये जाते हैं उनमें दुष्कर्मों को स्पष्ट रूप से देखा-सुना जा सकता है।

प्राकृतिक आपदायें भी हमारे पूर्व किये गये दुष्कर्मों की ही प्रतिक्रिया मात्र हैं।

भगवान् हमारे हैं, पर मिली हुई वस्तु हमारी नहीं है, प्रत्युत भगवान्‌की है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः।४३।
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम।४४।

doṣairetaiḥ kulaghnānāṁ varṇasaṅkarakārakaiḥ ।
utsādyante jātidharmāḥ kuladharmāśca śāśvatāḥ ॥ 43 ॥
utsannakuladharmāṇāṁ manuṣyāṇāṁ janārdana ।
narake'niyataṁ vāso bhavatītyanuśuśruma ॥ 44 ॥

वसन्तपञ्चमी सूर्यो० ६।४५, सूर्या० ५।३२

आज सरस्वती पूजा: [illegible] छै।
सबका [illegible]। [illegible] स्वास्थ्य से रहे।

एक-एक व्यक्ति खुद सुधर जाय तो समाज सुधर जायगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् । यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ।४५।
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः । धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ।४६।

aho bata mahatpāpaṁ kartuṁ vyavasitā vayam ।
yadrājyasukhalobhena hantuṁ svajanamudyatāḥ ॥ 45 ॥
yadi māmapratīkāramaśastraṁ śastrapāṇayaḥ ।
dhārtarāṣṭrā raṇe hanyustanme kṣemataraṁ bhavet ॥ 46 ॥

गणतन्त्रदिवस — सूर्यो० ६।४५, सूर्या० ५।३३

प्रातः प्रमोद बेनीपुर राजेन्द्र शर्मा के घर गये।
आज उनके बड़े भाई वीरेन्द्र कुमार शर्मा की पुत्री का तिलक
था। वे प्रमोद इण्टर कालेज में ही [illegible]। राजेन्द्र के पत्र द्वारा पूजा
भेजी।

अब मैं पुनः पाप नहीं करूँगा—यह पापका असली प्रायश्चित्त है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः सङ्ख्ये रथोपस्थ उपाविशत्। विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः।४७।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः। १।

sañjaya uvāca
evamuktvārjunaḥ saṅkhye rathopastha upāviśat |
visṛjya saśaraṁ cāpaṁ śokasaṁvignamānasaḥ || 47 ||

रथसप्तमी, भीष्माष्टमी सूर्यो० ६।४४, सूर्या० ५।३४

आज दवा लेने के बाद- [illegible] के [illegible]
करके, बड़ी [illegible] पर पहुँचे। [illegible] [illegible]
श्री [illegible] की पूजा की।
मौनी बाबा. किशोरीदास- [illegible] से इक्का लेकर
श्यामबिहारी राय पहुँचे।
वहीं [illegible] के शारदानन्द ब्रह्मचारी- स्वामी [illegible]
के दीक्षा शिष्य- [illegible] हैं। उन्होंने कहने पर [illegible]
अपना संदेश सुनाया।

माघ शुक्ल ८, रविवार, 28 JAN.

सूर्यो० ६।४४, सूर्या० ५।३४

अभ्यास- समिति के सदस्यों की बैठक की।
प्रमोदकुमार. अमितकुमार। राजेन्द्र [illegible]। [illegible]।
खड्ग [illegible] शर्मा. [illegible] व शर्मा. आदि सदस्य उपस्थित
थे। आगामी समारोह की व्यवस्था. [illegible] के
लिये मैंने एक हजार रुपये देने को कहा. [illegible] रुपये [illegible]
को [illegible] दिया जायेगा। [illegible] सिंह को [illegible]
बनाकर [illegible] का निश्चय हुआ। राजेन्द्र भोजन की
व्यवस्था करेंगे।
रात में [illegible] वाला आया। [illegible] [illegible]
खोलने की [illegible] आवश्यकता की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ द्वितीयोऽध्यायः

सञ्जय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्। विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः।१।

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ।२।

sañjaya uvāca

taṁ tathā kṛpayāviṣṭamaśrupūrṇākulekṣaṇam ।
viṣīdantamidaṁ vākyamuvāca madhusūdanaḥ ॥ 1 ॥

śrībhagavānuvāca

kutastvā kaśmalamidaṁ viṣame samupasthitam ।
anāryajuṣṭamasvargyamakīrtikaramarjuna ॥ 2 ॥

-सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।३५

आज से आश्रम में सफाई का काम
शुरू हो गया। सीताराम गौड़ का पौत्र आया-जा रहा है।
आज देवता स्थाने के [illegible] और उतारने का काम नहीं
हो सका। प्रमोद घर गये थे- वापस आ गए. इनको
खाने के लिये आ गये और [illegible] लौटकर
आश्रम पर आये। वे [illegible] प्रोफेसर, व
भोजपुरी विभागाध्यक्ष [illegible] गये थे।

यदि दूसरेका भला नहीं कर सकते हो तो पापसे बचो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते। क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप।३।

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये द्रोणं च मधुसूदन। इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन।४।

klaibyaṁ mā sma gamaḥ pārtha naitattvayyupapadyate |
kṣudraṁ hṛdayadaurbalyaṁ tyaktvottiṣṭha parantapa ||3||
arjuna uvāca
kathaṁ bhīṣmamahaṁ saṅkhye droṇaṁ ca madhusūdana |
iṣubhiḥ prati yotsyāmi pūjārhāvarisūdana ||4||

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।३६

आज सेंट्रल बैंक में गये।
मेरे पेंशन के खाते में १४००१ रुपये थे। ४०१,
चार सौ एक रुपये छोड़कर १३६०० निकाल लिये।
११३०० रुपये नये खाता में जमा किया। २३०० रुपये
अपने पास ले आये।
२०० दो सौ रुपये रामदिहल राम जी की पत्नी को दिया
गया। १०० रुपये में ५० रुपये का व १०० रुपये पाण्डुलिपियों
के लिये। शेष मठ में।
२००० रुपये में से एक हजार रुपया सद्गुरु शर्मा को
खाद्य सामग्री के लिये दे दिया। शेष दो हजार रुपये
आवश्यकता के लिये रखा।
डा० चन्द्र प्रकाश मिश्र - कार्तिक मास का पता
नहीं लगा - वे पटना में हैं। वे कोई और किताब भी है।
मालिक के लिये प्रबन्ध करते हैं।

जिसको हम सदा अपने पास नहीं रख सकते उसकी इच्छा करने व पानेसे क्या लाभ ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके । हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ।५।
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः । यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ।६।

gurūnahatvā hi mahānubhāvān śreyo bhoktuṁ bhaikṣyamapīha loke ।
hatvārthakāmāṁstu gurūnihaiva bhuñjīya bhogānrudhirapradigdhān ॥5॥
na caitadvidmaḥ kataranno garīyo yadvā jayema yadi vā no jayeyuḥ ।
yāneva hatvā na jijīviṣāmaste'vasthitāḥ pramukhe dhārtarāṣṭrāḥ ॥6॥

जया एकादशीव्रत सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।३७

५ आज भैयाजी के प्रमोदकुमार के साथ अमृतसर एक्सप्रेस ट्रेन से बक्सर से काशी आया। ८-३० बजे अपने मठ में पहुँचा। एक बोरी गेहूँ साथ ले आया।
१४०० रुपये प्रमोद को संस्कृत परीक्षा की फीस तथा १५०० रुपये उनकी पत्नी के दांत उखड़वाने की परीक्षा के लिये तथा दोनों रुपये प्रमोद पत्नी अन्नपूर्णा देवी को दवा और बच्चों के कपड़े आदि के लिये दिया।
स्वामी हरिशंकरानंद सरस्वती मठ में पहले से उपस्थित थे।
मठ का काम चल रहा है। किन्तु इसका भी कोई व्यवस्था नहीं हो सकी है।
कल ठीक दस बजे कल्लू को पत्र देकर बुलाया जायेगा तथा श्रीदत्त बाबा रामायण से सम्पर्क किया जायेगा।

जो लोग रात-दिन पाप करते हैं वे जिंदे ही मरे हुए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः। यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥७॥
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद् यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्। अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्॥८॥

kārpaṇyadoṣopahatasvabhāvaḥ pṛcchāmi tvāṁ dharmasammūḍhacetāḥ।
yacchreyaḥ syānniścitaṁ brūhi tanme śiṣyaste'haṁ śādhi māṁ tvāṁ prapannam॥7॥
na hi prapaśyāmi mamāpanudyād yacchokamucchoṣaṇamindriyāṇām।
avāpya bhūmāvasapatnamṛddhaṁ rājyaṁ surāṇāmapi cādhipatyam॥8॥

प्रदोषव्रत सूर्यो० ६।४२, सूर्या० ५।३८

आज इलियट रोड [illegible] परण सरस्वती प्रकाश के पते पर पत्र लिखा - डा० चन्द्रशेखर मिश्र के पचास [illegible] के पते पर पत्र लिखा।

इलाहाबाद से मुजफ्फरपुर श्री शिवदानी प्रसाद सिंह से संपर्क करके स्वामी जी की अंगूठी के [illegible] को उनके बक्सर स्टेशन में तथा [illegible] स्टेशन [illegible] के लिये [illegible] किया गया।
पता चला कि वे २ ता० को [illegible] को गंगा [illegible] एक्सप्रेस से [illegible] जा रहे हैं।
यह बात उनके सम्बन्धी [illegible] के लिये श्री प्रसाद सिंह [illegible] एवं [illegible] को सूचित कर दिया गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परन्तप । न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह। ९ ।
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत। सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः। १०।

sañjaya uvāca

evamuktvā hṛṣīkeśaṁ guḍākeśaḥ parantapa |
na yotsya iti govindamuktvā tūṣṇīṁ babhūva ha ||9||
tamuvāca hṛṣīkeśaḥ prahasanniva bhārata |
senayorubhayormadhye viṣīdantamidaṁ vacaḥ ||10||

आज ट्रैक्टर [illegible] सूर्यो० ६।४२, सूर्या० ५।३८

शम्भु-विश्वनाथपुर के नामों दो ट्रैक्टर मिट्टी आ गयी।
कल्याण का शिवांक - [illegible] में।
दो केदार महीनों बाद आया पर निकम्मी बातें करता रहा।
कल से काम करने की बातें [illegible] देखा गया।
[illegible] दो [illegible]
भेजा गया। स्वामी भवानी शर्मा एवं [illegible]
को पत्र भेजा। गड्ढे खोदने को भी कहा गया।
स्वास्थ्य ढीला होता जा रहा है। कमजोरी मालूम होती है।
[illegible] से संपर्क के बाद - जयंती के समारोह
का निमंत्रण पत्र छपने को दिया। [illegible] रुपये
दिये गये।

याद रखो जहाँ किसी भी प्रकारका अभिमान आता है वहीं सारे अवगुण आ जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः। ११।
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः। न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्। १२।

śrībhagavānuvāca

aśocyānanvaśocastvaṁ prajñāvādāṁśca bhāṣase ।
gatāsūnagatāsūṁśca nānuśocanti paṇḍitāḥ ॥ 11 ॥
na tvevāhaṁ jātu nāsaṁ na tvaṁ neme janādhipāḥ ।
na caiva na bhaviṣyāmaḥ sarve vayamataḥ param ॥ 12 ॥

सूर्यो० ६।४२, सूर्या० ५।३९

आज चौ० राजाराम शर्मा का पत्र मिला कि
दिल्ली जा रहे हैं। त्रिपुरारि राय की संस्था [illegible] में।
मैंने तत्काल त्रिपुरारि राय को दिल्ली के पते पर पत्र
भेजा। चौ० राजाराम शर्मा को भी [illegible]
के पते पर पत्र भेजा। [illegible]
[illegible]
के बारे में पत्र लिखा। [illegible]
को पते पर पत्र भेजा। [illegible] और
[illegible]।

माघ शुक्ल १५, रविवार, 4 FEB.
सूर्यो० ६।४१, सूर्या० ५।४०
पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति।१३।
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः। आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।१४।

dehino'sminyathā dehe kaumāraṁ yauvanaṁ jarā ।
tathā dehāntaraprāptirdhīrastatra na muhyati ॥ 13 ॥
mātrāsparśāstu kaunteya śītoṣṇasukhaduḥkhadāḥ ।
āgamāpāyino'nityāstāṁstitikṣasva bhārata ॥ 14 ॥

सूर्यो० ६ । ४१, सूर्या० ५ । ४१

महापुरुषों के जीवन और मन की स्मृति, जनसाधारण के चित्त पर उनका प्रभाव और जातीय चरित्रगठन में उनके द्वारा प्रवर्तित आदर्शों की अनुप्राणना मानवसमाज के लिये अमूल्य सम्पत्ति और शक्ति का झरना है। जाति में ऐसे महापुरुषों की स्मृति मलिन, पुरातन और निष्प्रभ न हो, उनका चिन्तन विचार और आलोचना जाति में नित्य नवीन उद्दीपना, उत्साह और सजीवता उत्पन्न करती रहे, इसके लिये सभी को सावधान रहना उचित है।

× × ×

जाति को बचाने के लिये उसकी साधना के प्रवाह को सदा जारी रखना होगा और इसके लिये जातीय महापुरुषों के जातीय जीवन को बचाये रखना अति आवश्यक है। जनसाधारण के चित्तदर्पण में महापुरुषों की मूर्ति सदा समुज्ज्वल रहनी चाहिये। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पर्वों में कदेक महापुरुषों के जन्मोत्सव, तिरोभाव-उत्सव आदि जितने अधिक मनाये जायँ उतना ही मङ्गल है। × × ×

× × मनुष्य जब अपनी साधना के द्वारा महापुरुष की साधना की पूजा करता है तभी मानव समाज में महापुरुष आविर्भाव यथार्थ रूप से सार्थक होता है। —— भगवान का मानवरूप में अवतीर्ण होना सफल होता है।

महापुरुष मनुष्य का आदर्श हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति।१७।
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः। अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।१८।

avināśi tu tadviddhi yena sarvamidaṁ tatam ।
vināśamavyayasyāsya na kaścitkartumarhati ॥ 17 ॥
antavanta ime dehā nityasyoktāḥ śarīriṇaḥ ।
anāśino'prameyasya tasmādyudhyasva bhārata ॥ 18 ॥

सूर्यो० ६।३९, सूर्या० ५।४२

इस संसार में जन्म लेकर पौरुष के सहारे ही मनुष्य अपने को बचाये रख सकता है। पौरुष के प्रभाव से ही वह प्रतिकूल शक्तियों का प्रतिरोध कर अनुकूल शक्तियों का संग्रह करता है और जीवन पथ में अग्रसर होता है।

× × × ×

*, संत की परिभाषा *,

संस्कृत में 'सत्' शब्द का अर्थ 'सत्य' है परन्तु इसका प्रयोग प्रायः 'सज्जन' शब्द के स्थान पर होता है। इसी शब्द का बहुवचन 'सन्तः' है जो कि हिन्दी में 'संत' रूप में प्रचलित है। 'संत', 'सज्जन', 'साधु', 'महात्मा', 'भक्त' आदि शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

गीता के १७ वें अध्याय में 'सत्' शब्द का प्रयोग पाँच प्रकार से भगवान ने किया है :—

(1) 'सत्' नाम ब्रह्म परमात्मा का है। (ॐ तत्सदिति निर्देशो…)

(2) तदर्थ कर्म अर्थात् उनके योगक्षेम के लिये कोई कर्म करते 'वासुदेव के अर्थ कर्म करना' 'सत्' कहलाता है।

(3) यज्ञ, दान, तप में (सात्त्विक कर्म) स्थिति को 'सत्' कहते हैं।

(4) सद्भाव और साधुभाव अर्थात् प्राणिमात्र के सद्भाव रखना, सर्वभूतहित में रत रहना और भगवान आदि के ध्यान में रहना भी 'सत्' है।

(5) प्रशस्त कर्म अर्थात् अच्छा लौकिक या आलौकिक

क्रोधसे अपना ही सर्वनाश होता है।

मांगलिक कार्य को भी 'सत्' कहा जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्। कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्।२१।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।२२।

vedāvināśinaṁ nityaṁ ya enamajamavyayam I
kathaṁ sa puruṣaḥ pārtha kaṁ ghātayati hanti kam II 21 II
vāsāṁsi jīrṇāni yathā vihāya navāni gṛhṇāti naro'parāṇi I
tathā śarīrāṇi vihāya jīrṇānyanyāni saṁyāti navāni dehī II 22 II

सूर्यो० ६।३८, सूर्या० ५।४३

धर्म जो समाज की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता। वह धर्म नहीं खिलवाड़ है।

"आनंद संपदा में नहीं सेवा में है।

* * *

* रसना में तीन इन्द्रियाँ *

जिह्वा में तीन इन्द्रियाँ हैं। इसलिये अन्य इन्द्रियों की अपेक्षा जिह्वेन्द्रिय अति प्रबल है। यह रसनेन्द्रिय है, स्पर्शेन्द्रिय है। और वागिन्द्रिय भी।
जिह्वेन्द्रिय से बोल सकते हैं, रसास्वादन कर सकते हैं, और शीत-उष्ण मृदु-कठिन, स्पर्श जान सकते हैं।

— = —

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि । ३३ ।
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् । सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते । ३४ ।

atha cettvamimaṁ dharmyaṁ saṅgrāmaṁ na kariṣyasi |
tataḥ svadharmaṁ kīrtiṁ ca hitvā pāpamavāpsyasi || 33 ||
akīrtiṁ cāpi bhūtāni kathayiṣyanti te'vyayām |
sambhāvitasya cākīrtirmaraṇādatiricyate || 34 ||

प्रदोषव्रत सूर्यो० ६ । ३३, सूर्या० ५ । ४९

आज सायंकाल मुजफ्फरपुर के [illegible] निवासी एवं
पूर्व विधायक श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह अपने [illegible]
जिलाधीश गुप्तेश्वर सिंह [illegible] से उनका परिचय के साथ
स्वामी रामानंद सरस्वती आश्रम में पधारे। ये लोग आश्रम
के निर्मित विशिष्ट अतिथि हैं।
आश्रम में भोजन जलपान सत्कार हुआ। सायंकाल [illegible] के
[illegible] डा० चन्द्रशेखर सिंह के [illegible] आये।
उनके संबंधी और कुटुंब हैं।
आश्रम में कई दिनों से पत्थर की शिलापट्ट लगाये जा
रहे थे। रात्री भी रही। खड्गधारी शर्मा के सहयोग
से तेजी से आश्रम अन्य सभी काम हुए।
रंगाई - पोताई धोलाई तथा रात्री और शिलापट्ट
सभी कार्य सम्पन्न हो गए।
थोड़ी देर के जगतचन्द्र शर्मा सायंकाल आये।
उन्होंने बताया कि उन्होंने ५१,०० रुपये दिये। मैंने खड्गधारी
शर्मा को कुल २५,०० रुपये अपनी और [illegible] रुपये
की किश्तों से १०,०० रुपये अपनी पेंशन से हैं।
[illegible] हिसाब [illegible] को तथा [illegible] रुपये
[illegible] कोई भी [illegible] हैं।

संसारको सत्ता देनेसे संयोग-वियोग और महत्ता देनेसे सुख-दुःख होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः । येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् । ३५ ।
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः । निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् । ३६ ।

bhayādraṇāduparataṁ maṁsyante tvāṁ mahārathāḥ ।
yeṣāṁ ca tvaṁ bahumato bhūtvā yāsyasi lāghavam ॥ 35 ॥
avācyavādāṁśca bahūnvadiṣyanti tavāhitāḥ ।
nindantastava sāmarthyaṁ tato duḥkhataraṁ nu kim ॥ 36 ॥

महाशिवरात्रिव्रत सूर्यो० ६।३२, सूर्या० ५।४९

जयंतीमहोत्सव बड़े समारोह के साथ हुआ।
श्री भुवनेश्वरीसिंह- [illegible] प्रसाद सिंह आदि के आने से
समारोह बहुत उत्तम हुआ। अंजोरपुर के [illegible] के
श्रीरामनरेश पांडे- श्री शिवदुलारे शास्त्री आदि आये। अंजोर-
पुर [illegible] आदि भी आये।
श्रीपुर के [illegible] हनुमान पांडे
श्री शिवनारायण आदि भी आये। [illegible] जी
आये। आरा के वकील [illegible]
प्रोफेसर [illegible] श्यामबिहारी राय आदि भी आये
स्वामी हरिदासानंद के साथ [illegible] माधवस्वामी और
संन्यासी [illegible] आये। [illegible]
अंजोरपुर के लोगों के निमंत्रण के लिए [illegible]

फाल्गुन कृष्ण १४, रविवार, 18 FEB.
सूर्यो० ६।३१, सूर्या० ५।५०
अमावास्या

मैं २४ ता० को अंजोरपुर चलूँगा।
आज भी [illegible] का काम हुआ।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] सहायता किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः। ३७।
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ। ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि। ३८।

hato vā prāpsyasi svargaṁ jitvā vā bhokṣyase mahīm ।
tasmāduttiṣṭha kaunteya yuddhāya kṛtaniścayaḥ ॥ 37 ॥
sukhaduḥkhe same kṛtvā lābhālābhau jayājayau ।
tato yuddhāya yujyasva naivaṁ pāpamavāpsyasi ॥ 38 ॥

आज श्रमजीवी से वक्स[illegible] है सूर्यो० ६।३०, सूर्या० ५।५०
काशी पहुँचा। [illegible] [illegible] [illegible] ~~[illegible]~~
[illegible] [illegible] और सच्चीन [illegible] भी [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।

आवश्यकतासे अधिक शब्द बोलनेकी अपेक्षा कतई न बोलना कहीं अच्छा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि। ३९।
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। ४०।

eṣā te'bhihitā sāṅkhye buddhiryoge tvimāṁ śṛṇu |
buddhyā yukto yayā pārtha karmabandhaṁ prahāsyasi || 39 ||
nehābhikramanāśo'sti pratyavāyo na vidyate |
svalpamapyasya dharmasya trāyate mahato bhayāt || 40 ||

सूर्यो० ६।२९, सूर्या० ५।५१

मठमें आने पर शिलान्यास के स्थानकी खोदफोड़
का पता लगा। मठमें शिवधनी शर्मा तथा स्वामी
[illegible] पाल एवं शारदासिंह।
उन लोगों की उपस्थिति में लेबर स्टाफ
लगाके मजदूरों ने शिलान्यास खोद दिया।
बादमें पंडित कमला कान्त का विचार लेकर जी,
जो तत्काल आये। उन्होंने पुनः शिलान्यास
करना आवश्यक बताया।
परन्तु से लौटकर बाद २ मार्च को पुनः भूमिपूजन
और शिलान्यास समारोह करने का निर्णय
हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन। बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्।४१।
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः। वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः।४२।

vyavasāyātmikā buddhirekeha kurunandana |
bahuśākhā hyanantāśca buddhayo'vyavasāyinām || 41 ||
yāmimāṁ puṣpitāṁ vācaṁ pravadantyavipaścitaḥ |
vedavādaratāḥ pārtha nānyadastīti vādinaḥ || 42 ||

सूर्यो० ६।२८, सूर्या० ५।५२

आज पुनः हिरालाल जी के
साथ आटो रिक्शा से [illegible] से मुजफ्फरपुर
आये। मैं "नारायण" प्रमोद की नं. - गोबरसही [illegible] -
[illegible] - [illegible] शर्मा जी के मकान से पहुँचे।

दूसरे दिन अपराह्न - दिनेश प्रसाद सिंह अभियंता
वैशाली के निमंत्रण पर - उनके कन्या के विवाह-
समारोह में प्रमोद के साथ पहुँचा।
उनकी गाड़ी [illegible] गोबरसही से ले गई।
वहाँ समारोह की भव्यता और आधुनिकता तथा
पैसे की विलक्षण [illegible] सजावट देखा।
वहीं समारोह में स्वामी हरिनारायणानंद जी पूर्व
विधानपरिषद [illegible] सदस्य पद्मदेव नारायण शर्मा से
[illegible] हुआ। वैशाली के अभियंता
[illegible] हैं। [illegible] है।
उनसे भेंट हुई वे [illegible] से मिले।
दिनेश प्रसाद सिंह के [illegible] भेंट हुई।
सायंकाल [illegible] के निवास पर लौट [illegible]
[illegible]।
२२ ता. [illegible]। [illegible]
[illegible] से [illegible]
और [illegible]।

सत्यसे बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् । क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ।४३।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् । व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ।४४।

kāmātmānaḥ svargaparā janmakarmaphalapradām |
kriyāviśeṣabahulāṁ bhogaiśvaryagatiṁ prati || 43 ||
bhogaiśvaryaprasaktānāṁ tayāpahṛtacetasām |
vyavasāyātmikā buddhiḥ samādhau na vidhīyate || 44 ||

सूर्यो० ६ । २८, सूर्या० ५ । ५३

आज दिनेश प्रसाद सिंह अभियंता के पुत्र के
विवाहोत्सव में उनके निमंत्रण पर पहुंचकर
भाग लिया। यहां स्वामी हरिनारायणानन्दजी
तथा पद्मनारायण, शर्मा प्रोफेसर [illegible]
सदस्य विधानसभा [illegible] [illegible] के
वैज्ञानिक के अभियंता, दिनेश सिंह के [illegible]
सम्बन्धी [illegible] [illegible] से मिले।

डा० राम तवक्या शर्मा [illegible] बजे आकर
[illegible] के घर पर आ गये।
तीन बजे [illegible] [illegible] भी [illegible]।
एक घंटे तक [illegible] [illegible] के [illegible]
[illegible] के सहयोग तथा स्वामीजी के
बातचीत [illegible] दया [illegible]
के [illegible] के संबंध में [illegible] की बात हुई।
[illegible] की [illegible] [illegible]।
डा० राजतवक्या शर्मा के आवास [illegible]
[illegible] संचालकों [illegible]
[illegible] का [illegible] किया।

जाननेका अर्थ है—विश्वास हो जाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्। ४५।
यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके। तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः। ४६।

traiguṇyaviṣayā vedā nistraiguṇyo bhavārjuna ।
nirdvandvo nityasattvastho niryogakṣema ātmavān ॥ 45 ॥
yāvānartha udapāne sarvataḥ samplutodake ।
tāvānsarveṣu vedeṣu brāhmaṇasya vijānataḥ ॥ 46 ॥

सूर्यो० ६। २७, सूर्या० ५। ५३

सायं के बजे पर प्रोफेसर डा० राम बचन शर्मा से कृष्णानन्द शर्मा के आवास पर बातें हुईं। बातें उनके ज्योतिष की जानकारी में सहयोग करने तथा गाथा का के प्रकाशन के संबंध में हुई।

प्रातः संक्षिप्त जलपान करके मैं स्टेशन पहुँचा और अन्नपूर्णा से पवन एक्सप्रेस से आरा पर पहुँचा। गोला पाठे मन्दिर के पण्डों से मिलकर के। आवास में किसे।

कल प्रातः ब्रजकिशोर के मालिक के जोड़े की जानकारी होगी।

मौनसे बढ़कर कोई तप नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।४७।
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय। सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।४८।

karmaṇyevādhikāraste mā phaleṣu kadācana |
mā karmaphalaheturbhūrmā te saṅgo'stvakarmaṇi || 47 ||
yogasthaḥ kuru karmāṇi saṅgaṁ tyaktvā dhanañjaya |
siddhyasiddhyoḥ samo bhūtvā samatvaṁ yoga ucyate || 48 ||

सूर्यो० ६।२७, सूर्या० ५।५४

आज बज फिरोट औजीलि से अजएक केओंपुर पहुँचा। आज वर्षों के बाद आये हैं। सभी लोग बड़े प्रेमभाव से मिले और सत्कार किया - श्रद्धा [illegible] श्री केशव पाराडेय, कामेश्वर पांडे [illegible] त्रिगुणानंद मिले। [illegible] लोगों के यहाँ [illegible] लोगों का [illegible] होगा।

फाल्गुन शुक्ल ७, रविवार, 25 FEB.

सूर्यो० ६। २६, सूर्या० ५। ५५

आज केशव पराडेय के पुत्र, कामेश्वर शर्मा के पुत्र सत्येन्द्र [illegible] और [illegible] को [illegible] दीक्षा दी गई। केशव पाराडेय के पुत्र [illegible] त्रिगुणानन्द को दीक्षा दी गई। केओंपुर में [illegible] मिले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय। बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः।४९।
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्।५०।

dūreṇa hyavaraṁ karma buddhiyogāddhanañjaya |
buddhau śaraṇamanviccha kṛpaṇāḥ phalahetavaḥ || 49 ||
buddhiyukto jahātīha ubhe sukṛtaduṣkṛte |
tasmādyogāya yujyasva yogaḥ karmasu kauśalam || 50 ||

होलाष्टकारम्भ सूर्यो० ६।२५, सूर्यां० ५।५६

आज अपराह्न डा० किशोर जी भीखने अंजोरपुर से वकील अभय जी कंचनपुर भीखनपुर को आश्रम पर लौटे। अंजोरपुर में स्वदेशानंद गुरुपूजन के रूप में मिले।
स्वामी सहजानंद सरस्वती जी के शिष्य श्री शिवप्रकाशानंद मिले जो नहीं जनार्दन शर्मा के यहाँ रहते हैं। स्वामी शिवानंद नासिक वाले भी मिले। इनमें प्राचार्य धर्मेश्वर राय के यहाँ भोजन किया गया। शंभूनाथ जी तथा भीखनलाल राय भी मिले।

रात अंजोरपुर से जीप द्वारा वापस आये। सायंकाल डॉ० रामाश्रय कमलापुर गाँव श्यामबिहारी शर्मा से मिले। लड़का धारी शर्मा का ... । अभी पटना से नहीं लौटे हैं। बलानाथ पाण्डे ने अंजोरपुर को पत्रिका प्रकाशित ...।
उनकी अंजोरपुर की उपस्थिति तथा ... के संबंध में।

सेवासे अन्तःकरणकी शुद्धि होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः। जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्।५१।
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति। तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।५२।

karmajaṁ buddhiyuktā hi phalaṁ tyaktvā manīṣiṇaḥ |
janmabandhavinirmuktāḥ padaṁ gacchantyanāmayam || 51 ||
yadā te mohakalilaṁ buddhirvyatitariṣyati |
tadā gantāsi nirvedaṁ śrotavyasya śrutasya ca || 52 ||

सूर्यो० ६।२४, सूर्या० ५।५६

२६ ता. को प्रमोद कुमार दीक्षित के साथ [illegible]
पहुँचे। चक्रपाणी पर ठहरे। नरसिंह शर्मा के यहां
भिक्षा भोजन हुआ। [illegible] में तीन सौ रुपये पूजा
के निमित्त मिल गया। मठ के [illegible]
कुल २३५/ रुपये मिले।
[illegible] के बहुत लोगों से भेंट [illegible] तथा
[illegible] की।
[illegible]
[illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला। समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि।५३।

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव। स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्।५४।

śrutivipratipannā te yadā sthāsyati niścalā |
samādhāvacalā buddhistadā yogamavāpsyasi || 53 ||
arjuna uvāca
sthitaprajñasya kā bhāṣā samādhisthasya keśava |
sthitadhīḥ kiṁ prabhāṣeta kimāsīta vrajeta kim || 54 ||

सूर्यो० ६।२२. सूर्या० ५।५७

ग्राम — तियरा [illegible]

तियरा - बक्सर के शिष्यों की पूजा —

(1) सनकेशरी कुँवर - 100/= निर्माणार्थ [illegible]
(2) श्री परशुराम — पिपरी — 90/=
(3) „ शिवशंकर की पत्नी - 10/= दीक्षा के समय
(4) „ शिवप्रताप राय - 64/=
(5) „ रामकाशिष्ठ शर्मा 75/=
(6) „ नृसिंह शर्मा - 67/=
(7) „ राम अवधेश - 10/=

तियरा के निर्माण के लिये २३५५ रुपये प्राप्त हुए तथा शिष्यमंडली से पूजा रूप में २०० रुपये मिले।

[illegible] की यात्रा में पूजा रूप से [illegible] रुपये मिले। तीन भक्तों की दीक्षा हुई। [illegible] के पास [illegible] गये थे।

दूसरेके दोषोंको स्वार्थवश भी कभी प्रकट न करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।५५।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।५६।

śrībhagavānuvāca

prajahāti yadā kāmānsarvānpārtha manogatān |
ātmanyevātmanā tuṣṭaḥ sthitaprajñastadocyate || 55 ||
duḥkheṣvanudvignamanāḥ sukheṣu vigataspṛhaḥ |
vītarāgabhayakrodhaḥ sthitadhīrmunirucyate || 56 ||

सूर्यो० ६ । २१, सूर्या० ५ । ५७

आज अपराह्न श्रीमती की स्कूटर से
[illegible] त्रिकालाचार [illegible] पहुँचे,
[illegible] बोलने का चल रहा था। स्वामी
हीदिवीनानंद जी उन्होंने [illegible]
सचिव - प्रमोदकुमार को दिये।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] उन्हें अपनी [illegible]
[illegible]
वे [illegible] हैं।
[illegible]
[illegible] पड़े [illegible]।
कोई [illegible]
उन्हें कहा कि मैं १० ता [illegible] जाऊँगा।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
चाहते थे।
[illegible]
[illegible]

मनुष्य-जन्म पाकर बुराईकी अपेक्षा भलाई लेकर जाना अच्छा है, श्रेयस्कर है।

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्। नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५७।
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।५८।

yaḥ sarvatrānabhisnehastattatprāpya śubhāśubham |
nābhinandati na dveṣṭi tasya prajñā pratiṣṭhitā || 57 ||
yadā saṁharate cāyaṁ kūrmo'ṅgānīva sarvaśaḥ |
indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā || 58 ||

आमलकी एकादशीव्रत — सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८

आज रात में श्री डा० रामकृष्ण शर्मा
अर्थात कल बृहस्पति को रात में ११ बजे आ गये।
आज उनसे पुनः शिलान्यास और उद्घाटन मुहूर्त तथा
पूजा पाठ के सम्बन्ध में विचार किया गया।
तदनुसार पूजा सामग्री लेकर डा० [illegible]
कर्मकाण्डी आचार्य [illegible] की आने के [illegible]
[illegible] से [illegible] तीन बजे रात के बीच [illegible]
पूजा कर्मकाण्ड और पुनः शिलान्यास हुआ।
कल [illegible] का [illegible]
[illegible] हुआ।
[illegible] प्रमोद पत्नी की [illegible] रखे हुए
दो सौ रुपये उसमें से दे दिया। दो सौ रुपये
पूजा सामग्री के लिये दिया गया। [illegible]
भी [illegible] दिया [illegible] चौधरी की [illegible] है।
आज रात्री के लिये [illegible]
[illegible] का [illegible] हुआ।
[illegible] आया। [illegible] शर्मा
को [illegible] की [illegible] के [illegible]
[illegible] दिया।
आज [illegible] शर्मा [illegible] विद्यालय [illegible]
को [illegible] मे गया
[illegible] प्रो० [illegible] के साथ [illegible]
[illegible]

क्रोध अपने दोषोंपर करना चाहिये।

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः। रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।५९।
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।६०।

viṣayā vinivartante nirāhārasya dehinaḥ |
rasavarjaṁ raso'pyasya paraṁ dṛṣṭvā nivartate ||59||
yatato hyapi kaunteya puruṣasya vipaścitaḥ |
indriyāṇi pramāthīni haranti prasabhaṁ manaḥ ||60||

शनिप्रदोष — सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८

आज पिछली रात विश्वनाथ [illegible] की पूजापाठ-संपन्न हुआ। मैंने पूज्य: [illegible] को आज तथा [illegible] श्री सुरेन्द्रनाथ [illegible] को पत्र [illegible] के लेख में भेजा।

प्रो० [illegible] को लिखे २२५ पुस्तक के पहले पत्र तथा। कल आज [illegible] पत्रों का [illegible] लिखा। उनके हरिद्वार के पते पर लिफाफे में भेज दिया। आज डा० [illegible] शर्मा दिल्ली गये। आज [illegible] के [illegible] को [illegible] पत्र भेजा। [illegible] को [illegible] पत्र भेजा।

फाल्गुन शुक्ल १३, रविवार, 3 MARCH

सूर्यो० ६।१९, सूर्या० ५।५९

आज डा० योगानन्द नाथ शर्मा को पत्र लिखकर तैयार किया। ठेकेदार [illegible] नहीं आया। और कल [illegible] में २००० दो हजार रुपये दिये गये।

तीन हजार रुपये दफ्तरी को '[illegible]' पुस्तक के प्रकाशन के मद में पेशगी दी गई। मैं सानन्द श्री करुणाकुमार शर्मा सदस्य विधान परिषद पटना द्वारा 'गीताहृदय' की प्रतियों के लिये मिले हैं। अभी उनके यहाँ ४००० चार हजार रुपये बाकी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः । वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।६१।
ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते । सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।६२।

tāni sarvāṇi saṁyamya yukta āsīta matparaḥ ।
vaśe hi yasyendriyāṇi tasya prajñā pratiṣṭhitā ॥ 61 ॥
dhyāyato viṣayānpuṁsaḥ saṅgasteṣūpajāyate ।
saṅgātsañjāyate kāmaḥ kāmātkrodho'bhijāyate ॥ 62 ॥

व्रत-पूर्णिमा, होलिकादाह (रात्रि २.०० के बाद) **सूर्यो० ६।१८, सूर्या० ५।५९**

आज विन्दमुनि-राम - रामपुरवाले - संस्कृत उच्च विद्यालय में शिक्षण कार्यरत - श्री कमलसमाचार हुआ। वे कुल रात में मठ में रहने के लिये आयेंगे। क्योंकि प्रमोद का आने वाले हैं।

× × ×

"संत भाव की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करनेवाले साधकों को बड़ी ही सावधानी के साथ ख्याति, मान-सम्मान, पूजा-प्रतिष्ठा आदि से अपने को बचाये रखना चाहिये।"

× × ×

"तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा॥"
— कालिदास.

यम और नियम: —

(१) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह; यम हैं; और शौच, सन्तोष, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, तथा ईश्वर प्रणिधान, नियम। ये दोनों योगरूपी महल की नींव हैं।

× × ×

जिस प्रकार! फूटे घड़े में भरे जल के समान, इस शरीर की आयु प्रतिक्षण क्षीण हो रही है, वृद्धावस्था सिंहिनी के समान समीप में ही गर्जना कर रही है, मृत्यु सदा सिर पर नाच रही है, लक्ष्मी धारा के समान चंचल है, यौवन जलतरंग के समान क्षणभंगुर है। तमाम संसार स्वप्न के समान दृष्टनष्ट है, माता, पिता, पुत्र, भाई, स्त्री आदि बान्धवों का सम्बन्ध धर्मशाला में एकत्र हुए पथिकों के समान है, कोई किसी का नहीं, कुछ काल के लिये एकत्र हुए हैं, पीछे अपने अपने भिन्न-भिन्न मार्ग पर सभी लोग चल देंगे, रहेगा कोई नहीं, अतः मतारहेला है अहंता ममता छोड़कर उस अचल सनातन आनन्द [illegible] प्राप्त करनी चाहिये।

विचारसे बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।६३।
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्। आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।६४।

krodhādbhavati sammohaḥ sammohātsmṛtivibhramaḥ |
smṛtibhraṁśād buddhināśo buddhināśātpraṇaśyati || 63 ||
rāgadveṣaviyuktaistu viṣayānindriyaiścaran |
ātmavaśyairvidheyātmā prasādamadhigacchati || 64 ||

पूर्णिमा सूर्यो० ६।१७, सूर्या० ६।००

"सत्यं सत्सु सदा धर्मः सत्यं धर्मः सनातनः।
सत्यमेव नमस्येत सत्यं हि परमा गतिः॥ – महाभारत
"सत्य ही संतों का सदा धर्म है, सत्य ही सनातन धर्म है,
संतजन सत्य को ही नमस्कार करते हैं, सत्य ही परमगति (आश्रय) है॥

x x x

सतां सदा शाश्वतधर्मवृत्तिः
सन्तो न सीदन्ति न च व्यथन्ते।
सतां सद्भिर्नाफलः सङ्गमोऽस्ति
सद्भ्यो भयं नानुभवन्ति सन्तः॥ – महाभारत
संत सदा धर्म का पालन करते हैं, संत घबराते नहीं तथा दुखी भी नहीं होते, संतों का संतों के साथ सङ्ग कभी व्यर्थ नहीं होता, संतों से संतों को भय नहीं होता।

भगवान्‌की तनिक-सी कृपादृष्टिसे हजारों जन्मोंके पाप नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।६५।
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।६६।

prasāde sarvaduḥkhānāṁ hānirasyopajāyate |
prasannacetaso hyāśu buddhiḥ paryavatiṣṭhate || 65 ||
nāsti buddhirayuktasya na cāyuktasya bhāvanā |
na cābhāvayataḥ śāntiraśāntasya kutaḥ sukham || 66 ||

वसन्तोत्सव, होली — सूर्यो० ६।१६, सूर्या० ६।००

आज प्रमोद कुमार दीक्षित, मेरे अनन्य सेवक, आये। भोजन-जलपान आदि का पूछा गया किन्तु इच्छा नहीं, अतः किया नहीं।

"पञ्चात्मके पञ्चसु वर्तमानं षडाश्रयं षड्गुणयोगयुक्तम्।
तं सप्तधातुं त्रिमलं द्वियोनिं चतुर्विधाहारमयं शरीरम्॥"

इस गर्भोपनिषद् में कही गई श्रुति से, यह शरीर पञ्चभूतों से बना हुआ है, पांच विषयों में ही रहता है। छः इन्द्रियों का जो अवलंबन है और वह छः गुणों से युक्त है। इसमें सात धातुएँ हैं। वात, पित्त, कफ तीन मल हैं। सत, रज, तम ये तीन कारण हैं और भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य चार प्रकार के आहार हैं। इन्हीं से यह शरीर बना है। इस शरीर में रहने वाले सात धातु और उनके वर्धक षड्-रसों के कारण ग्रह होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि खगोल स्थित [illegible] ग्रहों और भूगोल स्थित प्राणियों का निकट घनिष्ठ पारस्परिक संबंध है। यह बात पूर्वी और पश्चिमी ज्योतिष के विद्वानों ने निर्विवाद रूप से स्वीकार की है।

आज पिन्दरौ के ग्राम रकबा के शर्मा श्री नारायण शर्मा को पत्र लिख भेजा।

आज डा० चन्द्रशेखर मिश्र को भी पत्र लिख रहे थे, अंधेरा हो गया। लोग बाहर से भेंट करने आ गये। प्रज्ञानारायण सिंह अहमदपुर के थे। वे मंत्री कृष्णबिहारी के लड़के हैं। बहुत बात मालूम हुई। मंत्री श्री कृष्णबिहारी शर्मा को पत्र भेजना, पहुँचने की सूचना दे देना चाहिये।

त्यागसे बढ़कर कोई सुख नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते। तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।६७।
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।६८।

indriyāṇāṁ hi caratāṁ yanmano'nuvidhīyate ।
tadasya harati prajñāṁ vāyurnāvamivāmbhasi ॥ 67 ॥
tasmādyasya mahābāho nigṛhītāni sarvaśaḥ ।
indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā ॥ 68 ॥

आज प्रातः विष्णु मिष्ठान- [illegible] सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ६।१
से दो गोंद तथा कलम का रीफिल मंगाया। राजा राममोहन
राय लाइब्रेरी फाउंडेशन का - [illegible] राजस्थान
मे १०० रुपये [illegible] [illegible] भेजना होगा।
१०.५० गोंदोलिया डाकघर वाले पोस्टमैन को दो रुपये।
रीफिल ५ रुपये। डा० चन्द्रप्रकाश मिश्र - केन्द्रीय कारा
गार के उपाधीक्षक को तथा मासिक [illegible] को लिखा.
बी.एच.यू. के अपने शिष्यों मित्रों को शुभकामना [illegible]
डा० [illegible] राम शर्मा द्वारा [illegible] - [illegible] के कार्य
में योगदान तथा [illegible] में [illegible] पहुंचने का उत्साह
प्रेरणा आदि के रूप में लिखा।

बच्चोंको बुरी लतमें पड़नेसे बचाना मनुष्य-जातिकी बड़ी सेवा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।६९।
आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्। तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।७०।

yā niśā sarvabhūtānāṁ tasyāṁ jāgarti saṁyamī |
yasyāṁ jāgrati bhūtāni sā niśā paśyato muneḥ || 69 ||
āpūryamāṇamacalapratiṣṭhaṁ samudramāpaḥ praviśanti yadvat |
tadvatkāmā yaṁ praviśanti sarve sa śāntimāpnoti na kāmakāmī || 70 ||

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत सूर्यो० ६।१३, सूर्या० ६।१

आज ८ बजे उपरान्त - इटावा नगर 'नारायण' - [illegible] आये। प्रमोद नहीं आ सके। [illegible] है और भी [illegible] है। [illegible] गंगाजी में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] एवं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है तथा और [illegible] है।

आज केवल [illegible] केला भोजन किया। बाद में [illegible] [illegible] शर्मा आ गये। वे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

"तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ, विशुद्धिः श्यामिकापि वा॥
— कालिदास

"कस्यैकान्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण"
— कालिदास.

ललितेश्वर शर्मा - सिवान के संबंधी -
श्री विन्देश्वरी शर्मा पर्सनल [illegible]
डिप्टी चीफ परसनल मैनेजर B.S. City
प्लाट नं० 83
को-ऑपरेटिव कॉलोनी
बोकारो,
झारखण्ड - 400 ?21

शान्ति प्राप्तिके चार साधन—क्षमा, दान, सत्य और अहिंसा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः। निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।७१।
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति। स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।७२।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे साङ्ख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः।२।

vihāya kāmānyaḥ sarvānpumāṁścarati niḥspṛhaḥ |
nirmamo nirahaṅkāraḥ sa śāntimadhigacchati || 71 ||
eṣā brāhmī sthitiḥ pārtha naināṁ prāpya vimuhyati |
sthitvāsyāmantakāle'pi brahmanirvāṇamṛcchati || 72 ||

सूर्यो० ६।१२, सूर्या० ६।२

आज ११ बजे गंगेश्वर राम जी आये
डा० श्री शिवशंकर राम के साथ डा० बी० ठाकुर के
यहाँ गये और उनका सूचित किये। उन्होंने
वापस वकील गये। उन्होंने रसीद मासिक डायरी
दिया। मैंने पुराने वकील के पते पर पत्र लिख भेजा।
आज मैंने ज्ञानवापी के सुविधा... की स्वतंत्रता सेनानी
श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह को लोकायन रिपोर्ट...
मठ की ... ... और
... ... सहायता के लिये अनुरोध
किया। आज हनुमान घाट ... १०० रुपये
जलके पाइप कार्य के लिये निकाला। २० रुपये का पार्सल
रा० को साथ लेकर आया। ... मंगवाया गया।

चैत्र कृष्ण ५, रविवार, 10 MARCH

सूर्यो० ६।११, सूर्या० ६।३

आज नीलांचल एक्सप्रेस से वाराणसी से बाबा
के लिये चले। साथ में चौ० हिमालय ... एवं प्रमोद ...
ने आयोजन आदि में कमला ... ... व्यस्त
हैं। ... ... हैं और ... निकलते हैं।
श्री ... ... पर ...
गाड़ी में ... ... बैठा।
उनसे ही ... प्रकाश ... के
विरोधी ... तथा ... समिति ... का पता
चला। ... संन्यासी ... के ...
... के लिये ... हैं वे प्रमोद ...
को मठ में रहने ... के पक्ष में नहीं हैं।
वे ... स्वच्छन्द ... का ... चाहते हैं।
... साधु ... ... हैं। वे ... नहीं
... उसके ... हैं। स्वार्थी हैं। —

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन। तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव। १।
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे। तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्। २।

arjuna uvāca

jyāyasī cetkarmaṇaste matā buddhirjanārdana ।
tatkiṁ karmaṇi ghore māṁ niyojayasi keśava ॥ 1 ॥
vyāmiśreṇeva vākyena buddhiṁ mohayasīva me ।
tadekaṁ vada niścitya yena śreyo'hamāpnuyām ॥ 2 ॥

आज प्रातः १० बजे श्री सुरेन्द्रनाथ सूर्यो० ६।१०, सूर्यां० ६।३
अनुपम-कुमिया-बाकरी के विवाह पर - 4·F सेक्टर 3909 -
पर प्रमोद-हिरालाल सहित पहुंचा।
भोजन प्रबन्ध किया। सबको सूचना दी गई।
मठ के गठित सामाजिक संगठन - स्वामी सहजानंद सरस्वती -
सेवा समाज के पदाधिकारियों को सूचना दी गई कि
संपर्क हो। श्री किशोर कुमार जायसवाल को भी सूचना दी गई।
सीतेश के पिता प्रकाशचन्द्र - शिक्षक श्री मुरारी प्रसाद के -
जो संस्था से सम्बद्ध हैं उन्हें भी सूचना दी गई।
लिफाफा-पोस्टकार्ड मंगाया गया।
सिमरी के सिद्धनाथ प्रसाद को बता दिया गया कि वाराणसी की जानकारी - राजगुरु मठ के निर्माण कार्य में सहयोग के लिये पहुंचें।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ । ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ।३।
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते । न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ।४।

śrībhagavānuvāca

loke'smindvividhā niṣṭhā purā proktā mayānagha ।
jñānayogena sāṅkhyānāṁ karmayogena yogināṁ ॥3॥
na karmaṇāmanārambhānnaiṣkarmyaṁ puruṣo'śnute ।
na ca sannyasanādeva siddhiṁ samadhigacchati ॥4॥

सूर्यो० ६।९, सूर्या० ६।४

श्री कृष्णगोपाल सिंहजी वार्ष्णेय द्वारा
आज श्री आनन्द आश्रम संन्यासियों - स्वामी श्री पूर्णानन्द
तथा स्वामी ज्ञानप्रकाशानन्द के व्याख्यान [illegible]
की तथा 'अहंकार विरोध' की बातें [illegible] हुआ,
आन्दोलनों के उद्देश्य को विफल करना तथा उन्होंने
के सहयोग का पूरी तरह [illegible] है।

इसी माह की राजगुरुमठ की न्याससमिति की
आवश्यक बैठक बुलाकर - न्यासपत्र के संशोधन
तथा न्यास डीड की [illegible] will [illegible]
[illegible] है।
रामजी मैंने श्री कैलाशनाथ को [illegible] लेखा
पत्र लिखा।

ओंकारनाथ राय के यहां के कुछ लोग भी
[illegible] हैं - आचार्य मिले।
प्रवचन उपदेश तथा शंका समाधान [illegible]
हुआ। [illegible] के महत्वकी
है तथा लोगों के [illegible] विशेष [illegible]
मानें - अनेक लोग आये।
सद्भाव का वातावरण बनाने का प्रयास हुआ।
श्री कमलाकान्त शास्त्री तथा [illegible] नहीं आये।
मैंने उन लोगों को भी [illegible] भेजा।

मितभाषणसे वाणीके संयमका अभ्यास होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।५। कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।६।

na hi kaścitkṣaṇamapi jātu tiṣṭhatyakarmakṛt ।
kāryate hyavaśaḥ karma sarvaḥ prakṛtijairguṇaiḥ ॥5॥
karmendriyāṇi saṁyamya ya āste manasā smaran ।
indriyārthānvimūḍhātmā mithyācāraḥ sa ucyate ॥6॥

श्रीशीतलाष्टमीव्रत — सूर्यो० ६।८, सूर्या० ६।४

आज यहां क्वार्टर में पानी की दिक्कत है। सबेरे ९ बजे मैं दिनेश कुमार प्रजापति के निवासपर प्रमोद गांधी सहित गया। वहीं स्नान-जलपान भी किया। वहां से पवई- कृष्ण राव के निवासस्थान - म.न. [illegible] में सुरेन्द्र [illegible] के यहां लौटा।

आज भी म.भी.उ. संस्था के मामले में कोई नहीं आया। वे दबाव पर इसे स्वीकार होने की आवश्यकता नहीं। अतः सबके विरुद्ध शंका है। दिनेश की मातामें [illegible] प्रति [illegible] किये।

x x x

आज अमरेश [illegible] पत्नी सहित आये। कल लोकतंत्र मैच भी नहीं आये। वे गाड़ी के खिलाड़ी भी। पाकिस्तान के मामले में हैरान किया है। हमारा देश [illegible] पाकिस्तान में [illegible] देखते हैं। ऐसों का ख्याल रखना चाहिए [illegible]।
आज मनमोहन को फोन किया गया कि पत्नी के श्रीकृष्ण मिश्र जी [illegible] कहें। पर उन्होंने टालमटोल किया। बड़ामल के [illegible] में कहीं [illegible] चंदा के लिए काम में - उसके पास जाने में क्या है।
मैं [illegible] सिंह को [illegible] पत्र लिखूंगा।

संसारको जानोगे तो उससे वैराग्य और परमात्माको जानोगे तो उनमें प्रेम हो जायगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन । कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।७।
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः । शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।८।

yastvindriyāṇi manasā niyamyārabhate'rjuna |
karmendriyaiḥ karmayogamasaktaḥ sa viśiṣyate ||7||
niyataṁ kuru karma tvaṁ karma jyāyo hyakarmaṇaḥ |
śarīrayātrāpi ca te na prasiddhyedakarmaṇaḥ ||8||

सूर्यो० ६।७, सूर्या० ६।५

आज श्री विभूतिनारायण राय - चुनार को तथा महामण्डले-
श्वर - वाराणसी - के पते पर प्रभुनारायण सिंह को संबोधन लिखा
कि उन्हें सहयोग - सद्भाव और स्नेह बनाये रहें।
दिनेश कुमार पाण्डेय - दिवाकर - पोखरा - आये। कल का आरक्षण
नहीं प्राप्त हो सका - किन्तु उन्हें साथ लेकर - रांची जाके गमाले
राजगुरु मठ के धर्मकार्य में सहयोग के लिये चलने का निश्चय
हुआ। वहाँ से पलामू और तालानगर की यात्रा की योजना बनेगी।
श्री विजयशंकर राय सौंजा को बुलाकर बैंकों से सम्बन्धित कार्य
के लिये चंदे की रसीदें दी जायेंगी।
संन्यासियों का पूर्ण बहिष्कार करना होगा। ऐसे आडम्बरी सम्प्रदायों
का वेष बनाकर भोगभूमि में लगे हैं और झूठी प्रतिष्ठा के लिये
लगे हैं। उनसे भैया कोई नाता नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर। ९।
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।१०।

yajñārthātkarmaṇo'nyatra loko'yaṁ karmabandhanaḥ ।
tadarthaṁ karma kaunteya muktasaṅgaḥ samācara ॥ 9 ॥
sahayajñāḥ prajāḥ sṛṣṭvā purovāca prajāpatiḥ ।
anena prasaviṣyadhvameṣa vo'stviṣṭakāmadhuk ॥ 10 ॥

पापमोचनी एकादशीव्रत सूर्यो० ६।६, सूर्या० ६।५

प्रमोद कुमार दीक्षित - सदाचारी और परम-
तपस्वी तथा पुरुषार्थी नवयुवक हैं और गत १२ वर्षों
से मेरी निष्ठापूर्ण सेवा में लगा है।
किन्तु सदाचार [illegible]
[illegible] विध्वंसक तत्वों की
टीका टिप्पणी से प्रभावित - मुझे कष्ट पहुंचाते
रहते हैं। मैं हृदय से उनको सफलता के लिये,
यथा शक्ति प्रयत्नशील हूँ। जो सम्भव है उसमें सफलता
और योगदान करता हूँ।
मेरे शिष्य के संन्यासी - स्वामी हरिहरानन्द एवं
नवागन्तुक परमानन्द बड़े स्वार्थ लोलुप,
[illegible] और पद लोलुप [illegible]
मुझे बहुत कष्ट देते हैं।
वे प्रमोद के [illegible] मेरे साथ रहने
के विरोधी हैं तथा सदा संयुक्त रूप से कुत्सित कुचक्र
[illegible] करते रहते हैं, अड़चन और उलझनें
पैदा करते हैं। फलतः मेरी गाड़ी प्रगति
मार्ग दलदल में फंसी है। बराबर प्रमोद को
समझाता हूँ, आश्वासन देता हूँ पर वे [illegible]
के अनुभवों की वे [illegible] आशंका से
प्रभावित - मेरी बातें अनसुनी करते हैं। [illegible]
मैं लाचार [illegible] के [illegible] हुए

सत्सङ्ग पारसमणि है।

कार्य को [illegible] अधूरा [illegible] भगवान की
[illegible] शरणागत हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।११।
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।१२।

devānbhāvayatānena te devā bhāvayantu vaḥ I
parasparaṁ bhāvayantaḥ śreyaḥ paramavāpsyatha II 11 II
iṣṭānbhogānhi vo devā dāsyante yajñabhāvitāḥ I
tairdattānapradāyaibhyo yo bhuṅkte stena eva saḥ II 12 II

आज बोकारो से रांची पहुंचे। सूर्यो० ६।५, सूर्या० ६।६

रांची में [illegible] - रांची के [illegible] [illegible], [illegible] - श्री [illegible] [illegible] के [illegible]। [illegible] मिले। वहां [illegible] के बाद [illegible] [illegible] लोगों से [illegible] में लगा रहा। [illegible] के [illegible] की [illegible] [illegible] नहीं हो सका।

चैत्र कृष्ण १३, रविवार, 17 MARCH

सूर्यो० ६।३,१ सूर्या० ६।६

प्रदोषव्रत ,वारुणीपर्व

आज [illegible] [illegible] [illegible]। व [illegible] [illegible] तथा [illegible] [illegible] रहे। [illegible] [illegible] के [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् । १३ ।
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः । यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः । १४ ।

yajñaśiṣṭāśinaḥ santo mucyante sarvakilbiṣaiḥ |
bhuñjate te tvaghaṁ pāpā ye pacantyātmakāraṇāt || 13 ||
annādbhavanti bhūtāni parajanyādannasambhavaḥ |
yajñādbhavati parjanyo yajñaḥ karmasamudbhavaḥ || 14 ||

आज कृष्ण बिहारी शर्मा के साथ सूर्यो० ६ । २, सूर्या० ६ । ७
रांची में [illegible] के हरेकृष्ण पाण्डेय से सैटेलाइट कॉलोनी
में मिले। वे [illegible] किन्तु [illegible] उनके
कॉलोनी में [illegible] कुछ लोगों से मिले।
[illegible] प्रमोद और श्रीकृष्ण बिहारी शर्मा भी मिले।
उसी क्रम में [illegible] की [illegible] सेठ-
के [illegible] श्री [illegible] भी
भेंट हुई। उन्होंने बहुत [illegible] किया तथा [illegible]
[illegible] श्रद्धापूर्ण स्वागत किया।
इसके दिन भी श्रीकृष्ण बिहारी शर्मा के यहां
[illegible] किया जिनसे हुआ [illegible]
सोनी परिवार के [illegible] प्रकट
[illegible] राजकुमार के जीर्णोद्धार आदि के लिये
[illegible] ।
[illegible] (श्रीकृष्ण बिहारी शर्मा [illegible] के
[illegible] में [illegible] है।
आपने [illegible] से लोगों को प्रेरित और प्रभावित
भी किया।

दीर्घसूत्रताका स्वभाव समयकी चोरी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।१५।
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः। अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति।१६।

karma brahmodbhavaṁ viddhi brahmākṣarasamudbhavam ।
tasmātsarvagataṁ brahma nityaṁ yajñe pratiṣṭhitam ॥ 15 ॥
evaṁ pravartitaṁ cakraṁ nānuvartayatīha yaḥ ।
aghāyurindriyārāmo moghaṁ pārtha sa jīvati ॥ 16 ॥

अमावास्या — सूर्यो० ६।१, सूर्या० ६।७

आज सबेरे श्री प्रकाश [illegible] जी
साथ - [illegible] स्टेशन आये और मुझे लेकर
दर्शन किया - विदा होते [illegible] सहानुभूति
प्रदान की। मेरी स्वास्थ्य परीक्षा करके [illegible] पर
दवा लेना तथा [illegible] दी।

आज यहाँ भोजन किया और श्री [illegible] शास्त्री
के यहाँ होते हुए स्टेशन आये।
श्री प्रेमनारायण शर्मा स्टेशन पर मिले [illegible]
[illegible] के नाम
पर [illegible] के कल्याण का [illegible]
और [illegible] करते हैं।

इस परिवार का अत्यन्त पूर्व सम्मान देने
और श्रद्धापूर्ण सहयोग का आश्वासन
पाकर बहुत [illegible] हुआ।
[illegible] पर [illegible]
[illegible] स्टेशन से धर्मदेव शर्मा [illegible] के
यहाँ पहुँचा।
उन्होंने पूर्ण सत्कार सम्मान के साथ [illegible]
[illegible] किया गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चैत्र शुक्ल १, सं० २०५३, बुधवार, श्रीकृष्ण-सं० ५२२२, MARCH 20. 1996

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः। आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते॥१७॥
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन। न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः॥१८॥

yastvātmaratireva syādātmatṛptaśca mānavaḥ |
ātmanyeva ca santuṣṭastasya kāryaṁ na vidyate || 17 ||
naiva tasya kṛtenārtho nākṛteneha kaścana |
na cāsya sarvabhūteṣu kaścidarthavyapāśrayaḥ || 18 ||

चैत्र नवरात्रारम्भ, 'विरोधीनाम' संवत्सर — सूर्यो० ६।००, सूर्या० ६।८

आज फ़रीदपरहालू के लिये प्रस्थान किया - धर्मदेव
उपदेशी दिनानाथ [illegible] में चले गये। उनके
कार्यकर्ताओं ने गाड़ी में बैठाया - कुछ दुर्घटना से बाधित
भी। लगभग ठीक समय पर देवेन्द्र [illegible]
था कि सन्ध्या [illegible] पहुंची। वहां [illegible]
और [illegible] कॉलोनी F.N. [illegible] में [illegible]
को श्री विक्रमा ठाकुर के यहाँ पहुंच गये।
उन्होंने परिवारसहित बहुत श्रद्धापूर्ण स्वागत सत्कार किया
भोजन जलपान विश्राम किया।
श्री [illegible] चौधरी को छुट्टी छोड़ दिया कि वे [illegible]
[illegible] संभवत: [illegible] जाने की इच्छा रखते थे।
श्री विक्रमा ठाकुर के परिवार के लगभग दस सदस्य
यहां रहते हैं। राम[illegible] ठाकुर के पुत्र उपेन्द्र ठाकुर भी
मिले। विक्रमा ठाकुर को [illegible] से [illegible] का पत्र
यहां नहीं मिल सका था। अत: वे लोग [illegible]
के कार्यक्रम से अनभिज्ञ थे।
श्री विक्रमा ठाकुर की श्रद्धा भक्ति देखकर मन बड़ा प्रभावित
हुआ। विक्रमा बड़े [illegible] के
[illegible] हैं। उन्होंने सफल [illegible] सहयोग का
आश्वासन दिया।

डरना है तो दुष्कर्मसे डरो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।१९।
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि।२०।

tasmādasaktaḥ satataṁ kāryaṁ karma samācara ।
asakto hyācarankarma paramāpnoti pūruṣaḥ ॥ 19 ॥
karmaṇaiva hi saṁsiddhimāsthitā janakādayaḥ ।
lokasaṅgrahamevāpi sampaśyankartumarhasi ॥ 20 ॥

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ६।८

आज भी पत्राचार ठीक मौजूद -
विश्राम तथा सहयोग संबंध का काम होता
रहा। सायंकाल - मुजफ्फरपुर - बिहार और
औरंगाबाद - बिहार आदि के उनके सहधर्मी
कुछ विशिष्ट सहयोगियों से बातें हुईं।
सायंकाल रात के दो घंटे तक के सामाजिक-इतिहास
मैंने कुल की गौरव गाथा तथा त्याग तपस्या
और जनसेवा तथा त्यागी सहयोगियों की
के अभिवादन दुकानों जलता रहा।
सबों के सहयोग से राजगुरु मठ के जीर्णोद्धार
कार्य में आर्थिक सहयोग का आश्वासन
दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।२१।
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन। नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि।२२।

yadyadācarati śreṣṭhastattadevetaro janaḥ ।
sa yatpramāṇaṁ kurute lokastadanuvartate ॥ 21 ॥
na me pārthāsti kartavyaṁ triṣu lokeṣu kiñcana ।
nānavāptamavāptavyaṁ varta eva ca karmaṇi ॥ 22 ॥

मत्स्य-जयन्ती, गणगौर — सूर्यो० ५।५८, सूर्या० ६।९

आज भी पत्रादि लिखे। विक्रमठाकुर के पंडितजी के
संबंधी का कन्या के गवना का पत्र उन्हें लिखा।
इससे वे निश्चिन्त से हुए। संकट के भगवान काटने वाले
कौन है। किन्तु मनपसन्द कार्य करने से सब
उसी के शान्ति प्रसन्न हुए।
सम्भव है इन लोगों को भी पत्र लिखने का सुयोग
दिलायेंगे।

भगवान्को भूलनेसे बढ़कर कोई हानि नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।२३।
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्। सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।२४।

yadi hyahaṁ na varteyaṁ jātu karmaṇyatandritaḥ I
mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ II 23 II
utsīdeyurime lokā na kuryāṁ karma cedaham I
saṅkarasya ca kartā syāmupahanyāmimāḥ prajāḥ II 24 II

सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ६।९

आज प्रातः पालक के श्री नवलजी, कर्णसिंह
श्री विक्रम ठाकुर ने उन्हें पतरातू स्टेशन पर
पहुँचाया और मूरी ले जाने वाली ट्रेन में बैठाया।
यह ट्रेन मूरी होते बाटा और हावड़ा जाती है।

हम लोग ट्रेन में बैठकर मूरी पहुँचे। श्री
धर्मदेव शर्मा ने मूरी रात स्टेशन पर मैं लेने आया
और उन्होंने फलफूल जलपान आदि करके
जलपान करा दिया। उन्होंने अपने परिवार
को कोई रात पहुँचा [illegible]
पीवी। हम लोग ट्रेन से १० बजे रात बारा पहुँचे
और [illegible] धर्मदेव शुक्ला
~~[illegible]~~

चैत्र शुक्ल ५, रविवार, 24 MARCH

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ६।१०

कल श्री महेश पांडे से सम्पर्क हो गया।
वे [illegible] से [illegible] धर्मदेव शर्मा के
डेरे पर आ गये।
महेश पांडे मेरे साथ धर्मदेव शर्मा के
रेलवे कॉलोनी [illegible] पर दो
घंटे तक ठहरे रहे। उनसे [illegible]
और सम्पर्क हुआ।

उन्होंने अपूर्व प्रेम दिखाया
मेरे [illegible] सहयोग का [illegible]
दिया। [illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत । कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम् ।२५।
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् । जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् ।२६।

saktāḥ karmaṇyavidvāṁso yathā kurvanti bhārata ।
kuryādvidvāṁstathāsaktaścikīrṣurlokasaṅgraham ॥ 25 ॥
na buddhibhedaṁ janayedajñānāṁ karmasaṅginām ।
joṣayetsarvakarmāṇi vidvānyuktaḥ samācaran ॥ 26 ॥

कल रात से बराबर लोगों के सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ६।११
लिये नीलाचल में ए.सी. में दो स्थानों के आरक्षण
का कार्य हुआ। वे दिन में ... नंबर मिल गये।
इस संबंध में मूर्ति प्रमोद व शर्मा जी ... का
सहयोग मांगा गया। कल ही मैंने ... में उनको शिक्षा
की ... पत्रिका
और अपने राय ... इसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला।
... के नाम कुछ
पत्र लिखा - इलाज से भी ... भेज दी गई।
श्री नागेन्द्र चौधरी जी ... के पते
पर ... भेजा ... काशी ...
... के लिये ... किया।
शाम को प्रमोद जी ... मूर्ति से ... से संपर्क किया
गया - उनके पुत्र "पिन्टू" ने बताया कि वो ... कल
संभवतः पधारेंगे। यहां से नीलाचल के ए.सी. में
... के आरक्षण की सम्पुष्टि नहीं हुई थी
उन्होंने मूर्ति से शयनयान में दो स्थान ... नंबर
आरक्षण का कार्य संपुष्ट करा दिया है।
शाम को प्रमोद के संबंधी ... के ... मिश्र के पुत्र - ... के डेरे में प्रमोद से भेंट करने
... देर तक रहे।

ममताका नाश ही दुःखनाशका उपाय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते। २७।
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते। २८।

prakṛteḥ kriyamāṇāni guṇaiḥ karmāṇi sarvaśaḥ ।
ahaṅkāravimūḍhātmā kartāhamiti manyate ॥ 27 ॥
tattvavittu mahābāho guṇakarmavibhāgayoḥ ।
guṇā guṇeṣu vartanta iti matvā na sajjate ॥ 28 ॥

सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ६।११

आज मूर्ती पहुँचे। चन्द्रदेव शर्मा ने शास्त्रार्थ में
जो किया था समझा था - जौली कमाने वापस गये थे किन्तु
प्रकाश किया - गई बहुत किलोदिन हुई अतः सार्वत्र
मनोविकार हुआ -

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु । तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् । २९ ।
मयि सर्वाणि कर्माणि सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा । निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः । ३० ।

prakṛterguṇasammūḍhāḥ sajjante guṇakarmasu |
tānakṛtsnavido mandānkṛtsnavinna vicālayet || 29 ||
mayi sarvāṇi karmāṇi sannyasyādhyātmacetasā |
nirāśīrnirmamo bhūtvā yudhyasva vigatajvaraḥ || 30 ||

आज दिलीपजी नीलाम्बर [illegible] सूर्यो० ५।५२, सूर्यां० ६।११
४२।। बजे बनारस की चांदनी पहुंची। राजधानी से मठ में
पहुंच कर मिलन किया तथा भोजन आदि का कार्य किया
गया। मठ में निर्माण कार्यों की प्रगति देखकर
संतोष हुआ।
श्री दुर्गाशिवराज, नरसिंहदेव राय आदि से
सम्पर्क हुआ।
यात्रा के बीच श्री किशोर कुमार दे के मठ में
[illegible] निर्माण कार्यों के देखने का अवसर मिला।
इन सबके [illegible] से बाहर हैं। [illegible]
श्री [illegible] जी नई दिल्ली में [illegible]
के [illegible] लिये गये हैं।

संयम और उपवाससे बहुत-से रोग दूर हो जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः । श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः । ३१ ।
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः । ३२ ।

ye me matamidaṁ nityamanutiṣṭhanti mānavāḥ |
śraddhāvanto'nasūyanto mucyante te'pi karmabhiḥ || 31 ||
ye tvetadabhyasūyanto nānutiṣṭhanti me matam |
sarvajñānavimūḍhāṁstānviddhi naṣṭānacetasaḥ || 32 ||

श्रीरामनवमीव्रत सूर्यो० ५ । ५१, सूर्या० ६ । १२

श्री बेणी प्रसाद सिंह तथा औरों से
संपर्क हुआ।

जो जगत्को नहीं जानते वही जगत्में फँसते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।३५।

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।३६।

śreyānsvadharmo viguṇaḥ paradharmātsvanuṣṭhitāt ।
svadharme nidhanaṁ śreyaḥ paradharmo bhayāvahaḥ ॥ 35 ॥
arjuna uvāca
atha kena prayukto'yaṁ pāpaṁ carati pūruṣaḥ ।
anicchannapi vārṣṇeya balādiva niyojitaḥ ॥ 36 ॥

कामदा एकादशीव्रत — सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ६।१३

आज शिव कुमार राय · आये मिले । [illegible]
प्रसाद राय भी आये मिले ।
[illegible] अपनी धर्मपत्नी के
साथ आये · रहे । [illegible] के लिये
[illegible]
[illegible] दिया ।

चैत्र शुक्ल १२, रविवार, 31 MARCH

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ६।१३

आज एक बजे न्यास समिति तथा [illegible]
को [illegible] सदस्यों की बैठक हुई ।
[illegible] सदस्य [illegible] के कारण नहीं हुए ।
को [illegible] । [illegible] सिंह
[illegible]
[illegible] आदि के [illegible] से [illegible]
[illegible] हुआ । [illegible]
[illegible] और [illegible] दिया ।
[illegible]
को [illegible] ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।३७।
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च। यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्।३८।

śrībhagavānuvāca

kāma eṣa krodha eṣa rajoguṇasamudbhavaḥ ।
mahāśano mahāpāpmā viddhyenamiha vairiṇam ॥ 37 ॥
dhūmenāvriyate vahniryathādarśo malena ca ।
yatholbenāvṛto garbhastathā tenedamāvṛtam ॥ 38 ॥

सोमप्रदोष, श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन) सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ६।१४

प्रातः [illegible] के घर पर प्रमोद सहित गया। अल्पाहार के बाद [illegible] उनके साथ कुछ सम्मानित व्यक्तियों के यहाँ ईद बधाई(?) [illegible] घूमा गया।

रामनरेश(?) शर्मा के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] कहा। रामनरेश(?) शर्मा और [illegible] के मिले नहीं(?)। [illegible] [illegible] [illegible] लौट गये।

* * *

अपनी भावनामय प्रकृति को विचारशक्ति द्वारा वश में करना ही आत्मसंयम है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा। कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च।३९।
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते। एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्।४०।

āvṛtaṁ jñānametena jñānino nityavairiṇā |
kāmarūpeṇa kaunteya duṣpūreṇānalena ca || 39 ||
indriyāṇi mano buddhirasyādhiṣṭhānamucyate |
etairvimohayatyeṣa jñānamāvṛtya dehinam || 40 ||

सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ६।१४

आज गाड़ी एकदम ठीक और
तत्काल [illegible] जगह देखे गये।
काशी [illegible] में हो रहा है।
[illegible]
[illegible] से [illegible] किया।
दिल्ली के [illegible] [illegible]
[illegible] में दो [illegible] [illegible] हुए
[illegible] और [illegible] है।

आज [illegible] [illegible]
आये। [illegible] की [illegible]
हुआ। [illegible] होते हैं [illegible]
[illegible] [illegible] करते हैं।
[illegible] के [illegible] [illegible] जा
रहे हैं – [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] – [illegible] किया
गया।

मनुष्योंसे मैत्री और पशुओंके प्रति दया रखो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ। पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्।४१
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः।४२

tasmāttvamindriyāṇyādau niyamya bharatarṣabha |
pāpmānaṁ prajahi hyenaṁ jñānavijñānanāśanam || 41 ||
indriyāṇi parāṇyāhurindriyebhyaḥ paraṁ manaḥ |
manasastu parā buddhiryo buddheḥ paratastu saḥ || 42 ||

श्रीहनुमज्जयन्ती, पूर्णिमा, वैशाखस्नानारम्भ, चन्द्रग्रहण* सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ६।१५

आज श्रीकृष्ण लाल, राजमोहन कोलकाता
गया और १३ अप्रैल की बैठक में शामिल होने का
निवेदन किया। श्रीस्वामी विद्यानंद गिरि जी और
श्री [illegible] राय, [illegible] को पत्र लिखा।
कल समिति के राजेश और सिद्धनाथ शर्मा
को १३.४.९६ की बैठक के लिये पत्र भेजवाया।
आज मैंने [illegible] पत्र [illegible] का संदेश भेजा।
[illegible] पाण्डेय द्वारा और [illegible] भी दे गये।
आज गोरखपुर [illegible] ब्रह्मचारी [illegible]
गये। डॉ. [illegible] शर्मा [illegible] से आये और
गये। ये लोग [illegible] [illegible]
[illegible] स्वार्थी [illegible] हैं। इनसे [illegible]
की आशा रखना कठिन है।
[illegible] कोई [illegible] को यहीं रहकर
अपना [illegible] हैं।
आज भी [illegible] आये और [illegible]
करके चले गये।
अपनी दवा के लिये [illegible] [illegible]
[illegible] मंगाया। पाण्डेय जी के द्वारा।

*स्पर्श रात्रि ३ बजकर २५ मिनट
मध्य ५ बजकर १४ मिनट
मोक्ष प्रातः ७ बजकर ३ मिनट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।४३।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः।३।

evaṁ buddheḥ paraṁ buddhvā saṁstabhyātmānamātmanā |
jahi śatruṁ mahābāho kāmarūpaṁ durāsadam || 43 ||

सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ६।१५

आज श्री सत्यनारायण पाण्डेय
घर आये। उनकी पत्नी और [illegible] की [illegible] रहते
हैं। पाण्डेय बड़े कुलीन एवं व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं।
उनको चिकित्सा का अच्छा ज्ञान है।
यूनियन बैंक के मिनी खाते से [illegible] रुपये निकाला।
अपनी और प्रमोद की दवा [illegible] [illegible] की [illegible]
के [illegible]। [illegible] रुपये [illegible] की गई।

समस्त पाप सुखकी इच्छासे होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।१।
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः। स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप।२।

śrībhagavānuvāca

imaṁ vivasvate yogaṁ proktavānahamavyayam |
vivasvānmanave prāha manurikṣvākave'bravīt ||1||
evaṁ paramparāprāptamimaṁ rājarṣayo viduḥ |
sa kāleneha mahatā yogo naṣṭaḥ parantapa ||2||

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ६।१६

आज श्री शिवसुमिरनजी दोपहर में आये। मठ के निर्माण कार्य की उन्होंने समीक्षा की। मध्यम प्रयास का आश्वासन दिया।

आज भी निर्माण का सघन कार्य हो रहा।

× × ×

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥

× × ×

सुख उसे है जिसका हृदय शान्त है, हृदय उसी का शान्त है जिसका मन चंचल नहीं है, मन उसी का चंचल नहीं है, जिसको किसी वस्तु की अभिलाषा नहीं है, अभिलाषा उसी को नहीं है जिसको किसी वस्तु में आसक्ति नहीं है, आसक्ति उसी को नहीं है जिसकी बुद्धि में मोह नहीं है और जिसको मोह नहीं है वही तो संत है।

× × ×

उधारकी सम्पत्तिसे वृद्धिकी अपेक्षा अपनी दीनताका स्वाभिमान बहुत अच्छा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः। भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।३।

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः। कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति।४।

sa evāyaṁ mayā te'dya yogaḥ proktaḥ purātanaḥ I
bhakto'si me sakhā ceti rahasyaṁ hyetaduttamam II 3 II
arjuna uvāca
aparaṁ bhavato janma paraṁ janma vivasvataḥ I
kathametadvijānīyāṁ tvamādau proktavāniti II 4 II

सूर्यो० ५।४२ सूर्या० ६।१६

आज अजोध्यपुर के [illegible]
सीतापुर के अपने प्रशिक्षण केन्द्र से काशी आये हैं
मठ में मिलने आये। उन्होंने अपनी ओर से
मठ के निर्माण कार्य के लिये - १००० एक हजार रुपये
नगद दिये। उन्हें मैंने रसीद दे दी।
आज प्रमोद कुमार गाजीपुर के [illegible]
में भाग लेने गये और कल शाम तक लौटेंगे।
कल [illegible] में [illegible]।
आज मुजफ्फरपुर के [illegible] अभिषेक आये।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वैशाख कृष्ण ४, रविवार, 7 APRIL

सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।१७

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ।५।
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् । प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ।६।

śrībhagavānuvāca

bahūni me vyatītāni janmāni tava cārjuna |
tānyahaṁ veda sarvāṇi na tvaṁ vettha parantapa ||5||
ajo'pi sannavyayātmā bhūtānāmīśvaro'pi san |
prakṛtiṁ svāmadhiṣṭhāya sambhavāmyātmamāyayā ||6||

सूर्यो० ५।४०, सूर्या० ६।१७

"तमेतमात्मानं वेदानुवचनेन विविदिषन्ति"

वेदाध्ययन अथवा वेद के अनुकूल कर्म करने से ही ब्राह्मणों का हृदय विशुद्ध होता है और तब आत्मजिज्ञासा उत्पन्न होती है। यह आत्मजिज्ञासा जबतक उत्पन्न नहीं होती तबतक समझना चाहिये कि चित्तमल दूर नहीं हुआ। चित्त के बहिर्मुख रहने की आदत ही इस अशुद्धि का चिह्न है। पूर्व जन्मों के अशुभ कर्मों के संस्कार देह, इन्द्रिय, मन और प्राण के साथ चिपटे रहते हैं वे सहज में नष्ट नहीं होते।

× × ×

वेद में साधु उसी को कहा गया है जो सत्य का पता लगा लिया है —— "ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु"
—(ऋग्वेद १।१२४।३)

अपनी सन्तानसे सुख पानेके लिये अपने माता-पिताको सुख दो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन। ९ ।
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः। बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः। १०।

janma karma ca me divyamevaṁ yo vetti tattvataḥ ।
tyaktvā dehaṁ punarjanma naiti māmeti so'rjuna ॥ 9 ॥
vītarāgabhayakrodhā manmayā māmupāśritāḥ ।
bahavo jñānatapasā pūtā madbhāvamāgatāḥ ॥ 10 ॥

सूर्यो० ५ । ३८, सूर्या० ६ । १८

"कवि के जीवन का उद्देश्य इतना ही नहीं है कि वह केवल शब्दों को सुंदर आलंकारिक ढंग से सजा दे अथवा किसी भाषा के ढाँचे को ही बदल दे; उसका कर्तव्य यह भी है कि वह लोगों की जीवन पद्धति, रहन-सहन तथा रीति-रिवाज को बदल दे और धर्म, आचार, राजनीति एवं राष्ट्रीयता के संबंध में उनके विचारों को बदल दे।"

* * *

"इङ्गलैण्ड के महान् कवि मिल्टन ने कहा है कि कवि और संत का जीवन ही एक काव्य और पहेली है।"

× × ×

"साधु के संग मिटै अभिमान।
साधु के संग प्रगटै सो ज्ञान॥"

— श्रीसद्गुरु अर्जुनदेव जी
श्री पञ्चमनानक जी.

साधु कै संग मिटै सब रोग। नानक साधु भेटै संजोग॥

× × ×

"बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता।
सतसंगति संसृति कर अंता॥

— गोस्वामीतुलसीदास 'मानस'

जीव अनेक एक श्रीकंता।
परबस जीव स्वबस भगवंता॥

—'मानस'

मधुर शब्द मधुके समान है—आत्माके लिये मधुर और शरीरके लिये स्वास्थ्य कर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्। १३।
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा। इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते। १४।

cāturvarṇyaṁ mayā sṛṣṭaṁ guṇakarmavibhāgaśaḥ |
tasya kartāramapi māṁ viddhyakartāramavyayam || 13 ||
na māṁ karmāṇi limpanti na me karmaphale spṛhā |
iti māṁ yo'bhijānāti karmabhirna sa badhyate || 14 ||

आज [illegible] वेणीगुरु के [illegible] सूर्यो० ५। ३५, सूर्या० ६। १९

श्री राजेन्द्र शर्मा आये थे परीक्षा [illegible] [illegible],
बैंक की बातें जानकर कल [illegible] की बातें कह गये।
निर्माणकार्य [illegible] रहा है। सुरेन्द्रनाथ शर्मा भी
आही गये हैं। कल वे [illegible] रहेंगे।
श्री [illegible] विद्यार्थी और [illegible], रामकृष्ण [illegible]
[illegible] [illegible], उन्हें भी बैंक की सूचना मिलेगी।

सेवा और सम्मानपूर्वक साधुजनों का सत्संग करो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः। कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।१५।
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः। तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्।१६।

evaṁ jñātvā kṛtaṁ karma pūrvairapi mumukṣubhiḥ ।
kuru karmaiva tasmāttvaṁ pūrvaiḥ pūrvataraṁ kṛtam ॥ 15 ॥
kiṁ karma kimakarmeti kavayo'pyatra mohitāḥ ।
tatte karma pravakṣyāmi yajjñātvā mokṣyase'śubhāt ॥ 16 ॥

मेष-संक्रान्ति सूर्यो० ५।३४, सूर्या० ६।२०

आज प्रस्तावित (प्रबंधन समिति) [illegible] की बैठक [illegible] प्रारंभ हुई। पांच स्थायी सदस्यों —
श्री [illegible]
[illegible] और मैं के
[illegible] और [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वैशाख कृष्ण ११, रविवार, 14 APRIL

[illegible]

सूर्यो० ५।३३, सूर्या० ६।२०

[illegible]

वरूथिनी एकादशीव्रत

आज प्रातः [illegible]
[illegible]
[illegible] हुआ।
[illegible]
मदद देंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः। अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः।१७।
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः। स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्।१८।

karmaṇo hyapi boddhavyaṁ boddhavyaṁ ca vikarmaṇaḥ |
akarmaṇaśca boddhavyaṁ gahanā karmaṇo gatiḥ || 17 ||
karmaṇyakarma yaḥ paśyedakarmaṇi ca karma yaḥ |
sa buddhimānmanuṣyeṣu sa yuktaḥ kṛtsnakarmakṛt || 18 ||

सोमप्रदोष सूर्यो० ५।३२, सूर्या० ६।२१

आज सहसा श्री शिवराजकुमार - [illegible] [illegible] पटना के डा० रामलखन शर्मा का पहुँचना। [illegible] चुनौती [illegible] आदि निर्माण कार्य चल रहा है। [illegible] उन्होंने पत्र पर [illegible] [illegible] - दिल्ली [illegible] [illegible] बुलाया।

रात में [illegible] डा० रामलखन शर्मा के निर्माण कार्यों की प्रगति देखा और मजबूत करने की सलाह दी। श्री [illegible] से मदद के संबंध में अपनी [illegible] को भी चिन्ता दी तथा प्रोत्साहन किया। बोकारो भी [illegible] राम को निर्माण की प्रगति तथा [illegible] पर गई की बैठक में उपस्थित होने हेतु पत्र लिख भेजा।

२५० रुपये अन्नपूर्णा देवी [illegible] को [illegible] [illegible] उद्योग [illegible] दिया। [illegible] पूर्ति करना होगा।

जहाँ लौकिक सुख मिलता हुआ दीखे वहाँ समझ लें कि कोई खतरा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः। ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः।१९।
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः।कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित्करोति सः।२०।

yasya sarve samārambhāḥ kāmasaṅkalpavarjitāḥ ।
jñānāgnidagdhakarmāṇaṁ tamāhuḥ paṇḍitaṁ budhāḥ ॥ 19 ॥
tyaktvā karmaphalāsaṅgaṁ nityatṛpto nirāśrayaḥ ।
karmaṇyabhipravṛtto'pi naiva kiñcitkaroti saḥ ॥ 20 ॥

सूर्यो० ५।३१, सूर्यो० ६।२१

आज प्रातः श्री [illegible] शास्त्री जी, आचार्य [illegible]
स्नान में आये और [illegible] [illegible] [illegible]
सप्ताह सामाजिक [illegible] तथा [illegible]
को सफल बनाने की बातों पर [illegible] करते रहे।
वे कल पुनः आवेंगे।
आज दूरदर्शन से [illegible] में [illegible]
[illegible] उतरे गये। आपने [illegible]
के [illegible] से [illegible] उतारा गया।
आज [illegible] को अपनी ओर से [illegible]
[illegible] - [illegible] को [illegible]
[illegible] के [illegible] योगदान के
[illegible]। [illegible]
को भी [illegible] योगदान और
[illegible] के [illegible] का
[illegible] किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः। शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्। २१।
यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः। समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते। २२।

nirāśīryatacittātmā tyaktasarvaparigrahaḥ |
śārīraṁ kevalaṁ karma kurvannāpnoti kilbiṣam || 21 ||
yadṛcchālābhasantuṣṭo dvandvātīto vimatsaraḥ |
samaḥ siddhāvasiddhau ca kṛtvāpi na nibadhyate || 22 ||

अमावास्या — सूर्यो० ५। ३१, सूर्या० ६। २२

आज प्रमोदकुमार के साथ · हीरालाल चौधरी के साथ, नई दिल्ली के लिये · प्रभुजी की कृपा से प्रस्थान किया।

× × ×

"ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।"

'यह वैदिक मङ्गलाचरण परमात्मविभूति भगवान सूर्य से प्रार्थना करता है कि "हे सूर्यदेव! हमारे समस्त पापों को दूर करो। जो कुछ हितकर है उसे लाओ।"'

'मनुष्य देह में दक्षिण भाग सूर्य का और बाम चन्द्रमा का है।'

(१) संत लोग सभी धर्मों की सत्यता के जीते-जागते प्रमाण हैं।

× × ×

(२) श्रद्धाहीन पुरुषों के हृदय में श्रद्धा का सञ्चार करने के लिये साक्षी का काम देते हैं।

× × ×

(३) संत लोग एक प्रकार के ज्योतिपुञ्ज हैं जो सर्वत्र अपना प्रकाश फैलाकर अज्ञान और नास्तिकता के अन्धकार को दूर करते हैं।

× × ×

(४) संत लोग एक प्रकार के गिरिशिखर हैं जिन पर चढ़कर मनुष्य भगवान के तत्त्व को प्राप्त कर सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः। यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते। २३।
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना। २४।

gatasaṅgasya muktasya jñānāvasthitacetasaḥ ।
yajñāyācarataḥ karma samagraṁ pravilīyate ॥ 23 ॥
brahmārpaṇaṁ brahma havirbrahmāgnau brahmaṇā hutam ।
brahmaiva tena gantavyaṁ brahmakarmasamādhinā ॥ 24 ॥

सूर्यो० ५ । ३०, सूर्या० ६ । २२

आज ५-८ बजे नई दिल्ली स्टेशन पर
पहुँचा। कैलाश आश्रम के महामंडलेश्वर जी
[illegible] स्टेशन पर मिले। [illegible] [illegible]
आश्रम पहुँचा - महामंडलेश्वर जी से दर्शन [illegible] हुआ।
[illegible] आश्रम के श्री महंत [illegible] [illegible]
जो आयोजित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते। ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति। २५।
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति। शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति। २६।

daivamevāpare yajñaṁ yoginaḥ paryupāsate ।
brahmāgnāvapare yajñaṁ yajñenaivopajuhvati ॥ 25 ॥
śrotrādīnīndriyāṇyanye saṁyamāgniṣu juhvati ।
śabdādīnviṣayānanya indriyāgniṣu juhvati ॥ 26 ॥

सूर्यो० ५ । २९, सूर्या० ६ । २३

"पुण्योदयेन बहुजन्म समर्जितेन
सत्संगमो यदि भवेत् कथिमो जनस्य।
अज्ञान हेतुकृत मोहमहान्धकारो
नश्यन्तदा उदयमेति महान् विवेकः॥"
(पद्मपुराण उत्तर० खण्ड ७६)

"अर्थात् बहुत जन्मोंके उपार्जित पुण्योंका उदय होनेपर इस आधि-व्याधि, संकट-शोक और पाप-तापसे भरे हुए अपमृत्युयुक्त असुखकर संसार में पुण्यवान जन सत्संग प्राप्त करते हैं। उससे अज्ञानकृत मोहान्धकार नष्ट हो जाता है और हृदयके महामोहरूपी तमको भेदकर शुद्ध प्रकाशमय विवेकरूपी चन्द्रमा का उदय होता है।"

सत्यके बिना राजनीति धिक्कारने योग्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे। प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः। २९।
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति। सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः। ३०।

apāne juhvati prāṇaṁ prāṇe'pānaṁ tathāpare |
prāṇāpānagatī ruddhvā prāṇāyāmaparāyaṇāḥ || 29 ||
apare niyatāhārāḥ prāṇānprāṇeṣu juhvati |
sarve'pyete yajñavido yajñakṣapitakalmaṣāḥ || 30 ||

आज समारोह का नवां दिवस था। सूर्यो० ५। २६, सूर्या० ६। २५

भागवत [illegible] तथा अमृत महोत्सव तथा आचार्य [illegible] का समारोह था।

बृहस्पति पुत्र 'कच' को असुरों द्वारा मारकर जलाकर राख को मदिरा में शुक्राचार्य को पिलाने के कारण से महर्षि ने देवों का नियम बना दिया कि:—

"यो ब्राह्मणोऽद्य प्रभृतीह कश्चिन्
मोहात् सुरां पास्यति मन्दबुद्धिः।
अपेतधर्मा ब्रह्महा चैव स स्या-
दस्मिन् लोके गर्हितः स्यात् परे च॥
मया चैतां विप्रधर्मोक्ति सीमां
मर्यादां वै स्थापितां सर्वलोके।
सन्तो विप्राः शुश्रुवांसो गुरूणां
देवा लोकाश्चोपशृण्वन्तु सर्वे॥"

"मैं आज से यह मर्यादा बांधता हूं। मेरी मर्यादा को देवता और समस्त प्राणी सुनें — जो मन्दबुद्धि ब्राह्मण भूल से भी आज से मदिरा पियेगा उसके समस्त धर्म का नाश हो जायेगा और उसे ब्रह्महत्या का पाप लगेगा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परन्तप। सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।३३।
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।३४।

śreyāndravyamayādyajñājjñānayajñaḥ parantapa |
sarvaṁ karmākhilaṁ pārtha jñāne parisamāpyate || 33 ||
tadviddhi praṇipātena paripraśnena sevayā |
upadekṣyanti te jñānaṁ jñāninastattvadarśinaḥ || 34 ||

[illegible]
सूर्या० ५ । २४, सूर्या० ६ । २६
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव। येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि। ३५।
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः। सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि। ३६।

yajjñātvā na punarmohamevaṁ yāsyasi pāṇḍava |
yena bhūtānyaśeṣeṇa drakṣyasyātmanyatho mayi || 35 ||
api cedasi pāpebhayaḥ sarvebhyaḥ pāpakṛttamaḥ |
sarvaṁ jñānaplavenaiva vṛjinaṁ santariṣyasi || 36 ||

[illegible] प्रमोद कुमार सूर्यो० ५। २३, सूर्यो० ६। २७
के साथ राजगुरु मठ पहुँचे। [illegible]
[illegible]
[illegible]

प्रेमीकी बात प्रेमी ही समझता—ज्ञानी नहीं, फिर अज्ञानीकी बात ही क्या है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन। ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।३७।
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।३८।

yathaidhāṁsi samiddho'gnirbhasmasātkurute'rjuna ।
jñānāgniḥ sarvakarmāṇi bhasmasātkurute tathā ॥ 37 ॥
na hi jñānena sadṛśaṁ pavitramiha vidyate ।
tatsvayaṁ yogasaṁsiddhaḥ kālenātmani vindati ॥ 38 ॥

सूर्यो० ५।२२, सूर्या० ६।२७

आज प्रातः साढ़े [illegible] बजे [illegible] महाराज और [illegible] उनकी सेवा के लिये [illegible] आगमन किया। [illegible] महेश पांडे - रामकृष्ण, जगमोहन एवं पांडे [illegible] [illegible] कैलाश [illegible] [illegible]।

सायंकाल - महाराज काशिराज डा० विभूतिनारायण सिंह जी की धर्मपत्नी [illegible] कुंवरि के दिवंगत होने की खबर आने से [illegible] महाराज [illegible] [illegible] काशिराज के [illegible] [illegible] मांगने [illegible]। [illegible] [illegible]। [illegible] कोई [illegible] की [illegible] मिली।
[illegible] देवरिया के [illegible] [illegible] गई। बादाम [illegible] [illegible] जमा करके [illegible] दिये। [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः। ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।३९।
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति। नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।४०।

śraddhāvā̐llabhate jñānaṁ tatparaḥ saṁyatendriyaḥ ।
jñānaṁ labdhvā parāṁ śāntimacireṇādhigacchati ॥ 39 ॥
ajñaścāśraddadhānaśca saṁśayātmā vinaśyati ।
nāyaṁ loko'sti na paro na sukhaṁ saṁśayātmanaḥ ॥ 40 ॥

श्रीसीतानवमी — सूर्यो० ५।२२, सूर्या० ६।२८

आज प्रातः [illegible]
[illegible]

वैशाख शुक्ल १०, रविवार, 28 APRIL

सूर्यो० ५।२१, सूर्या० ६।२८

आज [illegible] में श्री [illegible] से मिले हुए
[illegible] - श्री [illegible]
के यहाँ गये थे। [illegible] तथा [illegible]
की बैठक में मिलेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगसन्न्यस्तकर्माणं ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम्। आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय।४१।
तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः। छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत।४२।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसन्न्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः।४।

yogasannyastakarmāṇaṁ jñānasañchinnasaṁśayam ।
ātmavantaṁ na karmāṇi nibadhananti dhanañjaya ॥ 41 ॥
tasmādajñānasambhūtaṁ hṛtsthaṁ jñānāsinātmanaḥ ।
chittvainaṁ saṁśayaṁ yogamātiṣṭhottiṣṭha bhārata ॥ 42 ॥

मोहिनी एकादशीव्रत — सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।२९

आज प्रातः शिवमुनि राय एवं महर्षिदेव राय [illegible] को पहुंचे।
वे लोग जगदीशसिंह जी तथा रोहनियां रामचन्द्र शर्मा के यहां
ईंट के जो गड्ड में गये थे। कल ईंट बिछाने का [illegible] किला
है। रामगोपाल संकुचित विचार के [illegible] हैं वस्तुतः
ईंट न देकर पैसे देने भी [illegible] रहे हैं।
आज नागपुर चन्द्रदत्त तिवारी, राजनीतिराय,
राम एकबाल शर्मा श्री नारायण शर्मा तथा रामसुन्दर के
श्री निवास शर्मा को पोस्टकार्ड से निमंत्रण भेजा।

लक्ष्य रखना काफी नहीं है, उसे प्राप्त करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि। यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।१।

श्रीभगवानुवाच

सन्न्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ। तयोस्तु कर्मसन्न्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।२।

arjuna uvāca

sannyāsaṁ karmaṇāṁ kṛṣṇa punaryogaṁ ca śaṁsasi ।
yacchreya etayorekaṁ tanme brūhi suniścitam ॥ 1 ॥

śrībhagavānuvāca

sannyāsaḥ karmayogaśca niḥśreyasakarāvubhau ।
tayostu karmasannyāsātkarmayogo viśiṣyate ॥ 2 ॥

भौमप्रदोष सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।२९

आज बहुत दिनों के बाद कल्लू आये। [illegible]
[illegible]
[illegible] का [illegible] है।
बादाम- मिश्री [illegible] मुनक्की - जलपान के लिये ले गया है।
पं० रामदेव [illegible] स्वास्थ्य [illegible]
से [illegible]
उनके बारे में [illegible]।
आज [illegible]
[illegible] के लिये
[illegible] दी जायेगी।
आज शिवमुनि राम के प्रयास से [illegible]
श्री [illegible] शास्त्री के पुत्र [illegible]
[illegible] की चित्र गोष्ठी में [illegible]
चलायेंगे।

असद्विचारोंको स्थान देते ही अशुभ भावनाएँ, अशुभ कार्यान्वयन-हेतु पथ स्वच्छ करने लगती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति। निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते। ३।
साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्। ४।

jñeyaḥ sa nityasannyāsī yo na dveṣṭi na kāṅkṣati ।
nirdvandvo hi mahābāho sukhaṁ bandhātpramucyate ॥ 3 ॥
sāṅkhyayogau pṛthagbālāḥ pravadanti na paṇḍitāḥ ।
ekamapyāsthitaḥ samyagubhayorvindate phalam ॥ 4 ॥

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३०

आज भी ईंट नहीं आई। निर्माणकार्य
उसी के अभाव में रुका है। लोग कहते हैं कि अपने कार्य की
प्रामाणिकता पर ध्यान नहीं देते। भट्ठा देवराय मेरा विद्याभि-
लाषी तो बहुत प्रयत्नशील और सक्रिय है।
आज श्रीहरिकृष्ण ठाकुर को पटना सरस्वती सदन और
अयोध्या-कल्याणी सेवा केन्द्र के पते दे दो कलम अध्यापक
[illegible] के लिए छोड़ा। आज फोन से डा० ओमप्रकाश-
तिवारी कैप्टन [illegible] का स्नेहपूर्ण
मार्मिक पत्र प्राप्त हुआ। [illegible] के लिए दी गई [illegible]
जो दिल्ली में [illegible] महाराज जी के यहां प्राप्त हुई [illegible]
तकनीकी गड़बड़ी है। [illegible] आवश्यक [illegible]
को भेज दी।
८ बजे रात को संस्कृत विश्वविद्यालय कॉलोनी के [illegible] स्थान
में डा० लक्ष्मीनारायण तिवारी पुत्र [illegible] उदयनारायण तिवारी
के पुत्र के विवाहोपलक्ष्य प्रीतिभोज में गये आशीर्वाद दिया।
प्रमोद [illegible] की गई। [illegible]
[illegible] सरयूपारीण ब्राह्मणों का [illegible] देखा। बहुत लोग देखने
में आये। देवस्वरूप मिश्र [illegible]
[illegible] रहे। वे बड़े धूर्त [illegible]
अपने अप्रतिग्राही वर्ग को [illegible] बहुत [illegible]
[illegible] के लिए समाज [illegible] प्रायः उदासीन देखा।
[illegible] कि [illegible] के बैंक में [illegible]
[illegible] आये हैं।

चित्तकी शान्ति ही सुख है और चित्तकी अशान्ति ही दुःख है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।५।
सन्न्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः। योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति।६।

yatsāṅkhyaiḥ prāpyate sthānaṁ tadyogairapi gamyate ।
ekaṁ sāṅkhyaṁ ca yogaṁ ca yaḥ paśyati sa paśyati ॥ 5 ॥
sannyāsastu mahābāho duḥkhamāptumayogataḥ ।
yogayukto munirbrahma nacireṇādhigacchati ॥ 6 ॥

श्रीनृसिंहचतुर्दशीव्रत, व्रत-पूर्णिमा   सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३०

आज वाराणसी के स्वतंत्रता सेनानी - श्री शिवराम राय जी आये।
उन्होंने [illegible] हुआ। [illegible] राजनारायण [illegible] शर्मा का [illegible]
[illegible] मठ के [illegible] कार्य के [illegible]
[illegible] व [illegible] - [illegible] प्रवक्ता को एक पत्र
[illegible] नहीं आते [illegible]
[illegible] - श्री सुरेन्द्र नाथ राय - अभियन्ता - [illegible] सदस्य - [illegible]
[illegible] को एक [illegible] पत्र भेजा कि [illegible] की [illegible]
मे [illegible] - [illegible] में [illegible]।

आज [illegible]।
[illegible]।
[illegible]।
[illegible] नहीं [illegible]।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
प्राप्त किया था।
आज [illegible] तथा [illegible]
[illegible] पूजा के लिये।

परछिद्रान्वेषण एक प्रमुख दुर्गुण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः। सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते।७।
नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्। पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्।८।

yogayukto viśuddhātmā vijitātmā jitendriyaḥ |
sarvabhūtātmabhūtātmā kurvannapi na lipyate || 7 ||
naiva kiñcitkaromīti yukto manyeta tattvavit |
paśyañśṛṇvanspṛśañjighrannaśnangacchansvapañśvasan || 8 ||

पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती, वैशाख-स्नान समाप्त — सूर्यो० ५।१७, सूर्या० ६।३१

"ऋतस्य पन्थामन्वेति साधुः"
(ऋग्वेद १।१२४।३)

ऋषि और [redacted] और संत दोनों को परमात्मा ने मानो यह आज्ञा दी है कि तुम मुझ की उपासना के लिये आत्मबोध की प्राप्ति करो। × × × ×

×

[illegible] ने पूरब में [illegible] रूप के महत्व [illegible] और [illegible] बढ़ाने [illegible] है। संस्था के पदों के [illegible] कीजिये [illegible] उनके भी ऐसा [illegible] तथा [illegible] आ गयी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्। ९ ।
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा। १०।

pralapanvisṛjangṛhṇannunmiṣannimiṣannapi |
indriyāṇīndriyārtheṣu vartanta iti dhārayan || 9 ||
brahmaṇyādhāya karmāṇi saṅgaṁ tyaktvā karoti yaḥ |
lipyate na sa pāpena padmapatramivāmbhasā || 10 ||

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।३१

प्रमोद की तबियत बिल्कुल खराब हो जाने से
[illegible] अन्यथा मन की व्यवस्था और निर्माण के सभी
कार्य रुक रहे हैं। चिन्ता उनकी शारीरिक स्थिति
के सुधार की ओर लगी है। आज १२.५० को [illegible]
[illegible] [illegible] गंगाजी [illegible] नहीं [illegible]।

ज्येष्ठ कृष्ण २, रविवार, 5 MAY

सूर्यो० ५।१५, सूर्या० ६।३१

मैं आज रात में [illegible] प्रमोद
और डॉ राम लाल अपनी पत्नी [illegible] लिवा ले गई।
गये। स्वयं पड़ी दवा खाओ।
मेरा मन कुछ [illegible] है। कोई काम करने की
मन नहीं लगता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि। योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये।११। युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्। अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।१२।

kāyena manasā buddhyā kevalairindriyairapi ।
yoginaḥ karma kurvanti saṅgaṁ tyaktvātmaśuddhye ॥ 11 ॥
yuktaḥ karmaphalaṁ tyaktvā śāntimāpnoti naiṣṭhikīm ।
ayuktaḥ kāmakāreṇa phale sakto nibadhyate ॥ 12 ॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत **सूर्यो० ५।१४, सूर्या० ६।३२**

आज श्री तीर्थप्रसाद [illegible] का - स्वतंत्रानन्द जी [illegible] से [illegible]। [illegible] लिए [illegible] [illegible] नहीं किया। [illegible] [illegible]। [illegible] का पत्र [illegible] [illegible]।

आज बैंक से १७० रुपये ड्राफ्ट [illegible] से [illegible] अध्ययन तथा [illegible] के लिए प्रमोद [illegible] [illegible] गया।

श्री [illegible] शर्मा का पत्र। [illegible] तथा [illegible] से भोजपुरी पत्रिका के लिए लेख [illegible] भोजपुरी रचना भेजने के संबंध में [illegible] तथा प्रमोद [illegible] के नाम पत्र भेजे।

आज आंगन धोने में [illegible] गर्मी (अधिक) थी। शाम में हालत बहुत खराब और [illegible] हो गयी थी। प्राणदेव [illegible], ऐसी आशंका हो जाती थी।

होमियो [illegible] और [illegible] में [illegible]। डॉ. [illegible] का [illegible] किया। [illegible] के साथ ग्रहण किया।

सच्ची बातको स्वीकार करना मनुष्यका धर्म है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्यास्ते सुखं वशी। नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्।१३।
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः। न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते।१४।

sarvakarmāṇi manasā sannyasyāste sukhaṁ vaśī |
navadvāre pure dehī naiva kurvanna kārayan || 13 ||
na kartṛtvaṁ na karmāṇi lokasya sṛjati prabhuḥ |
na karmaphalasaṁyogaṁ svabhāvastu pravartate || 14 ||

सूर्यो० ५।१४, सूर्या० ६।३२

प्रमोद को कान का कष्ट - पीठ में दर्द। मोहल्ले में दूरी अर्थात् दयानन्द नगर में (चिकित्सक ई.एन.टी. डा० [illegible] तिवारी के यहाँ प्रमोद को इंजेक्शन के [illegible] गया।)

अपना कार्य मन्द रहता है। [illegible] मैं [illegible] [illegible] [illegible] प्रमोद [illegible] को [illegible] देखा [illegible] कड़ाई से, [illegible] प्रमोद [illegible] डा० तिवारी के यहाँ गये।

आज जुगनू से [illegible] के [illegible] पर [illegible] [illegible] के साथ [illegible] थे। बड़ी कठिनाई थी।

आप कुछ जानना चाहें तो अपने कर्तव्योंको जानें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः। निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः।१९।
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्। स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः।२०।

ihaiva tairjitaḥ sargo yeṣāṁ sāmye sthitaṁ manaḥ |
nirdoṣaṁ hi samaṁ brahma tasmādbrahmaṇi te sthitāḥ || 19 ||
na prahṛṣyetpriyaṁ prāpya nodvijetprāpya cāpriyam |
sthirabuddirasammūḍho brahmavid brahmaṇi sthitaḥ || 20 ||

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।३४

आज ही · [illegible]
[illegible] पहुँच सके।

सभी प्राणियोंका आहार भगवान्के भण्डारसे आता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम् । स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ।२१।
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते । आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ।२२।

bāhyasparśeṣvasaktātmā vindatyātmani yatsukham ।
sa brahmayogayuktātmā sukhamakṣayamaśnute ॥ 21 ॥
ye hi saṁsparśajā bhogā duḥkhayonaya eva te ।
ādyantavantaḥ kaunteya na teṣu ramate budhaḥ ॥ 22 ॥

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।३५

आज प्रातः [illegible] जी चन्द्रगुप्त [illegible],
त्रिपाठी तथा राजनीतिज्ञ आये।

उपरांतों से आकाश की उपलब्धियों तथा अनेक मुद्दों पर वार्ता हुई। प्रान्तों के प्रत्यय [illegible] गये।

ज्येष्ठ कृष्ण १०, रविवार, 12 MAY

सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।३५

आज राजगुरु मठ न्यास समिति के सदस्यों, प्रोफेसरों, विद्वानों और वाराणसी नगर के लब्ध प्रतिष्ठ राजनीतिक महानुभावों की विचार गोष्ठी मठ में हुई। प्रमुख लोगों में श्रीकृष्णचन्द्र, राजनीतिज्ञ, रामरेखा पाण्डेय, [illegible] त्रिपाठी और प्रमोद कुमार दीक्षित के नाम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] स्वीकार हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः । २३ ।
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः । स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति । २४ ।

śaknotīhaiva yaḥ soḍhuṁ prākśarīravimokṣaṇāt ।
kāmakrodhodbhavaṁ vegaṁ sa yuktaḥ sa sukhī naraḥ ॥ 23 ॥
yo'ntaḥsukho'ntarārāmastathāntarjyotireva yaḥ ।
sa yogī brahmanirvāṇaṁ brahmabhūto'dhigacchati ॥ 24 ॥

अचला एकादशीव्रत — सूर्यो० ५ । १०, सूर्या० ६ । ३६

आज वैकुण्ठपुर के श्री [illegible] शर्मा के पुत्र
श्री अशोक कुमार शर्मा को [illegible] हैं। उन्होंने
स्वयं [illegible] प्रमोद कुमार की [illegible]
दवा लिखा। दवा मंगाई गई। तत्काल बहुत [illegible]।
साग सब्जी फल-दूध-मिश्री आदि लेकर [illegible] हुए।
आज दिन भर भी [illegible] आदि [illegible]
लिखता रहा। काशीराज डा० [illegible] रामपति सिंह शर्मा को
उनकी धर्मपत्नी के निधन पर शोक-प्रस्ताव और [illegible]।
पत्र [illegible] लिखा।
डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा को भी धन्यवाद पत्र,
डा० [illegible] को [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] भेजा। बनारस के श्री [illegible]नाथ राय को भी पूरा
विवरण [illegible] लिखा।
[illegible] सदस्य [illegible] सिंह को भी
[illegible] पत्र लिखा।
[illegible] बंगाला।
श्री [illegible] चौधरी - आज [illegible]
[illegible] मिलने आयेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः । छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः । २५ ।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् । अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् । २६ ।

labhante brahmanirvāṇamṛṣayaḥ kṣīṇakalmaṣāḥ ।
chinnadvaidhā yatātmānaḥ sarvabhūtahite ratāḥ ॥ 25 ॥
kāmakrodhaviyuktānāṁ yatīnāṁ yatacetasām ।
abhito brahmanirvāṇaṁ vartate viditātmanām ॥ 26 ॥

भौमप्रदोष सूर्यो० ५ । ९, सूर्या० ६ । ३७

काशिराज का पत्र · इंग्लैण्ड [illegible] - राजकीय कार्यवाही
[illegible] लखनऊ [illegible] । शेष पत्र इकट्ठे [illegible]
[illegible] [illegible] सिंह का पत्र नहीं ले गये और
[illegible] कोई [illegible] सूचना दिया [illegible]
[illegible] में [illegible] दायित्व है
सेना के [illegible] पत्र छपने पर प्रकाशन
प्राप्त हुआ । इस में अकेला [illegible] की इच्छा नहीं
[illegible] सामाजिक [illegible]
लेना पड़ रहा है ।
प्रमोद के लिये [illegible] ।

मैं कब मुक्त होऊँगा ? जब 'मैं' खत्म हो जायगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ।२७।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ।२८।

sparśānkṛtvā bahirbāhyāṁścakṣuścaivāntare bhruvoḥ ।
prāṇāpānau samau kṛtvā nāsābhyantaracāriṇau ॥ 27 ॥
yatendriyamanobuddhirmunirmokṣaparāyaṇaḥ ।
vigatecchābhayakrodho yaḥ sadā mukta eva saḥ ॥ 28 ॥

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ६।३७

आज रात में श्री प्रकाशनारायण राय-कर्मयोगी कु-
म्भ में आये। निर्माणकार्य [illegible] के संबंध में बातें हुई।
वे कल घनश्याम साहीजी के साथ पुनः पधारेंगे [illegible] कोई
कार्ययोजना बनेगी।

"धार्मिक-विवाद हुए जो विरोध अंबेडकर भी झेलते रहे,
यही सिखाते हैं। जिसके सामने विरोध नहीं आया। [illegible]
[illegible] पहले भी थे, अब उनकी संख्या बढ़ गई है।
संत ज्ञानेश्वर, तुकाराम जिसकी दुर्गति नहीं हुई।
जिस पेड़ में फल होते हैं, उसी को लोग पत्थर मारते हैं।
विरोध आये। फिर भी कम पड़ना है। विरोध का
कार्यकर्ता की कसौटी है। आत्मा की सहने की शक्ति
आनी चाहिये कार्यकर्ता में। पागल देखते हैं।
गाली दो, पैर छुओ; कोई अर्थ नहीं। कार्यकर्ता को भी
अपने [illegible] में पागल होना चाहिये।
[illegible] पागल हो [illegible] नहीं चलेगा। अपने को
पूरा मिटाना होता है। खेतों में मक्का मुझे देखा है। उसने
पनपने दाना होने के लिये एक बीज को अपने को
मिटा देना होता है। वही कार्यकर्ता होता है। वह
नष्ट नहीं होता। जो दाना बीज बनने से बच जाता है,
[illegible] खाने के लिए चला जाता, वह भी चक्की में पीस जाता है।
कोई नहीं बचता।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।२९।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसन्न्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः।५।

bhoktāraṁ yajñatapasāṁ sarvalokamaheśvaram |
suhṛdaṁ sarvabhūtānāṁ jñātvā māṁ śāntimṛcchati || 29 ||

[illegible] सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।३८

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः। स सन्न्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः। १।
यं सन्न्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव। न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन। २।

śrībhagavānuvāca

anāśritaḥ karmaphalaṁ kāryaṁ karma karoti yaḥ ।
sa sannyāsī ca yogī ca na niragnirna cākriyaḥ ॥ 1 ॥
yaṁ sannyāsamiti prāhuryogaṁ taṁ viddhi pāṇḍava ।
na hyasannyastasaṅkalpo yogī bhavati kaścana ॥ 2 ॥

अमावास्या, वटसावित्रीव्रत — सूर्यो० ५ । ७, सूर्या० ६ । ३८

हिन्दी माध्यम कार्यान्वय-निदेशालय
दिल्ली-विश्वविद्यालय के श्रेष्ठ प्रकाशन :—

(१) पश्चिम एशिया और ऋग्वेद — डा० रामविलास शर्मा
(२) स्वाधीनता-संग्राम के बदलते परिप्रेक्ष्य — ,, ,,
(३) भारतीय इतिहास और ऐतिहासिक भौतिकवाद — ,, ,,
(४) प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास — डा० जयशंकर मिश्र
(५) बुद्धकालीन समाज और धर्म — डा० मदनमोहन सिंह

हिन्दी माध्यम-कार्यान्वय-निदेशालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रधान कार्यालय — माडल टाउन, दिल्ली.
110009
फोन - 7110166
प्र श्री । विभाग - कैम्प नं० २. [illegible]
दिल्ली 110007
फोन. 7257725 / 365 [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९ मई पटना

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते। योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते।३।
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते। सर्वसङ्कल्पसन्न्यासी योगारूढस्तदोच्यते।४।

āruruksormuneryogaṁ karma kāraṇamucyate I
yogārūḍhasya tasyaiva śamaḥ kāraṇamucyate II 3 II
yadā hi nendriyārtheṣu na karmasvanuṣajjate I
sarvasaṅkalpasannyāsī yogārūḍhastadocyate II 4 II

१८-५-९६ आज प्रातः १० बजे श्री हरिकृष्ण ठाकुर [illegible] सूर्यो० ५।७, सूर्या० ६।३९
[illegible] सिंह के निवास पर आये और उन के [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]।
वहीं भोजन विश्राम किया।
[illegible] बजे के बाद उन की [illegible] से [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] पहुँचे। [illegible] श्रीकृष्ण राय की पुत्री का [illegible]
श्री [illegible] प्रवेश [illegible] के
[illegible] के परिवार के सदस्य तथा [illegible] एवं
[illegible] मिले। [illegible] रुपये [illegible]
[illegible]। श्रीकृष्ण [illegible] तथा उनके
बड़े भाई [illegible] भेंट हुई

ज्येष्ठ शुक्ल २, रविवार, 19 MAY

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।३९

१२ पूं. प.० [illegible]

[illegible] सिंह के [illegible] पहुंचे।
भोजन [illegible] किया। सच्चिदानंद के [illegible]।
सायंकाल सच्चिदानंद भी आये। रात में वहीं रुके।
[illegible] के [illegible] मिले [illegible]
[illegible]। [illegible] वाले [illegible]
[illegible] और [illegible] नहीं है।
[illegible] वह [illegible]
के संकेत [illegible] हैं। [illegible]
ही [illegible] में [illegible] नहीं
[illegible] काम [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् । आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।५।
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः । अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ।६।

uddharedātmanātmānaṁ nātmānamavasādayet |
ātmaiva hyātmano bandhurātmaiva ripurātmanaḥ || 5 ||
bandhurātmātmanastasya yenātmaivātmanā jitaḥ |
anātmanastu śatrutve vartētātmaiva śatruvat || 6 ||

आज प्रातः श्रीकृष्ण ठाकुर के निवास [illegible] सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।४०
से स्टेशन आये। बच्चा लेने के लिये।
कल देहरादून से [illegible] दीनदयाल रत्न के निवास पर ही डा० [illegible]
[illegible] मिले। वे [illegible] रहे थे। उनसे
कार्यक्रम के सम्बन्ध में बातें हुईं। व प्रातः पुनः [illegible] के
कहने पर [illegible] और [illegible] आये।
उन्होंने रचना को काशी में [illegible] मिलने व [illegible]
[illegible] का कार्यक्रम न [illegible] का वचन दिया।

बच्चा [illegible] - अपने आश्रम पहुंचे। स्नान ध्यान किया।
पुनः [illegible] और [illegible] साथ [illegible] भोजन किया।
रात्रि में [illegible] सुनाते और [illegible]।
[illegible] और [illegible]
[illegible] घड़ी पहले [illegible]।
शाम [illegible] कुछ [illegible] गई।

विश्वम्भरपर विश्वास रखो वही सबका भरण-पोषण करनेवाला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः। शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।७।
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः। युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः।८।

jitātmanaḥ praśāntasya paramātmā samāhitaḥ ।
śīoṣṇasukhaduḥkheṣu tathā mānāpamānayoḥ ॥ 7 ॥
jñānavijñānatṛptātmā kūṭastho vijitendriyaḥ ।
yukta ityucyate yogī samaloṣṭāśmakāñcanaḥ ॥ 8 ॥

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।४०

आज सेन्ट्रल बैंक कचहरी से लौटे हैं
पैसा लिया। फिक्स खाते में ३२०० रुपये [illegible] से रुपये
सेविंग खाते में १०००० रखा। अब उसमें ५००० [illegible]
हैं। [illegible] लेकर। १७०० रुपये की [illegible] तथा
[illegible]
[illegible] प्रमोद [illegible]
दिया। शेष प्रमोद के जिम्मे जमा।

आप कुछ देना चाहें तो परोपकार एवं कल्याणके लिये सहयोग देवें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु । साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते। ९।
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः। एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः।१०।

suhṛnmitrāryudāsīnamadhyasthadveṣyabandhuṣu I
sādhuṣvapi ca pāpeṣu samabuddhirviśiṣyate II 9 II
yogī yuñjīta satatamātmānaṁ rahasi sthitaḥ I
ekākī yatacittātmā nirāśīraparigrahaḥ II 10 II

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४१

३ बजे बक्सर से काशी पहुँचे।
मुन्ना ने पहुँचाया। पांडेय जी को भी पत्र लिखे।
[illegible] गेहूँ लेकर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] स्वामी [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] से [illegible] [illegible]। [illegible] शर्मा
[illegible] को पत्र लिखे भेजा। [illegible] [illegible] [illegible] भी
भेजा।
[illegible] [illegible] शर्मा को [illegible] [illegible] [illegible]
बक्सर आश्रम में रहने के लिये पत्र लिखा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः । सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् । १३ ।
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः । मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः । १४ ।

samaṁ kāyaśirogrīvaṁ dhārayannacalaṁ sthiraḥ |
samprekṣya nāsikāgraṁ svaṁ diśaścānavalokayan || 13 ||
praśāntātmā vigatabhīrbrahmacārivrate sthitaḥ |
manaḥ saṁyamya maccitto yukta āsīta matparaḥ || 14 ||

आज मिश्री नगर में गई। इच्छा प्रभु की सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४२

श्री शिवप्रसाद [illegible] १२००० रुपये [illegible] के
मदद के लिये दे गये।

आज ८०० राधेश्याम शर्मा जी "प्रज्ञा चक्षु - स्वामी
शरणानंद प्रेरणा - "लक्षण-तत्त्व-विमर्श" जो सरकारी सहायता से
छप रही थी। वह छपा, उसमें भूमिका के रूप में आशीर्वचन
लिखकर भेज दे गये। ~~[illegible]~~
पर पढ़ना [illegible] होगा।
श्री [illegible] जी को "गीता हृदय" की एक प्रति
अवलोकनार्थ दिया। उनको आभार।

श्री [illegible] को [illegible] में, सूचना भेजा।

दूसरेके दोषोंमें आनन्द नहीं लेना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः । शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति । १५ ।
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः । न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन । १६ ।

yuñjannevaṁ sadātmānaṁ yogī niyatamānasaḥ |
śāntiṁ nirvāṇaparamāṁ matsaṁsthāmadhigacchati || 15 ||
nātyaśnatastu yogo'sti na caikāntamanaśnataḥ |
na cāti svapnaśīlasya jāgrato naiva cārjuna || 16 ||

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४३

आज कानपुर के श्री विन्ध्याचलराय जी मठ में प्रमोद कुमार को देखने और हाल चाल लेने आये।

आज डा॰ ओमप्रकाश तिवारी को [illegible] गोस्वामी का अध्यापक - सहायता के लिये रजिस्ट्री द्वारा भेजा। कल विन्ध्याचलराय के घर पर जाऊँगा प्रमोद को उनके पुत्र डा॰ अशोक को दिखाऊँगा तथा अपनी भी डाक्टरी जाँच कराऊँगा।

सायंकाल - श्री कृष्णानन्द जी गाजीपुर उपनगर प्रमुख समाज अध्यक्ष [illegible] मठ में आ पहुँचे। श्री पुरे [illegible] का पुत्र [illegible] (लेकर) वह [illegible] से [illegible] आये हैं।

ज्येष्ठ शुक्ल ९, रविवार, 26 MAY

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।४३

आज प्रातः आठ बजे श्री विन्ध्याचलराय - कानपुर के उनके घर पहुँचे जो बैजनाथ मन्दिर के बगल पर है। वे और उनके पुत्र दोनों मिले। श्री अशोककुमार राय जो अच्छे डाक्टर हैं। प्रमोद को देखा और बहुत अच्छा बताया। [illegible] बताया। [illegible] कोई रोग नहीं है - [illegible] दवा [illegible] ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।१७।
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते। निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा।१८।

yuktāhāravihārasya yuktaceṣṭasya karmasu |
yuktasvapnāvabodhasya yogo bhavati duḥkhahā || 17 ||
yadā viniyataṁ cittamātmanyevāvatiṣṭhate |
niḥspṛhaḥ sarvakāmebhyo yukta ityucyate tadā || 18 ||

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।४४

मैंने आज आठ पत्र लिखकर सबको भेजे।
जगमोहन राय- कंडूपुर- वाराणसी. [illegible] शर्मा [illegible] खरौवली
गाजीपुर। रामजन्म शर्मा [illegible]- [illegible], इन्द्रासन ठाकुर,
बीसी [illegible]। शिवप्रसाद सिंह- मुजफ्फरपुर।
[illegible] डा० चन्द्रेश्वर मिश्र को वक्तव्य के चलते पत्र
लिखा गया- वे आगे आये- [illegible] आयात।
[illegible] नहीं आ सके थे।
[illegible] उन्हें भी पत्र - [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] को पत्र भेजा। डा० श्यामाधर [illegible]
प्रो० [illegible] कालेज [illegible] लिखा गया।
[illegible]
[illegible] ब्राह्मण समाज की [illegible] के लिए लिखा।
सभी पत्र [illegible] - डा० नारायण जी [illegible]
[illegible] जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता। योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः।१९।
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया। यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति।२०।

yathā dīpo nivātastho neṅgate sopamā smṛtā |
yogino yatacittasya yuñjato yogamātmanaḥ || 19 ||
yatroparamate cittaṁ niruddhaṁ yogasevayā |
yatra caivātmanātmānaṁ paśyannātmani tuṣyati || 20 ||

श्रीगङ्गा-दशहरा   सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४४

आज कलके लिये मैंने पत्र [illegible] घोषों को दे
गये। आज कालिका ठाकुर को पत्र पोस्ट किया। [illegible]
के पते पर पत्र भेजा मठ के निर्माणकार्य में [illegible]
आज द्विजनाथ सिंह [illegible] [illegible] को
[illegible] लिखा। आज [illegible] के
[illegible] पत्र लिखकर [illegible] कार्य में [illegible]
के लिये निवेदन किया।
आज दिल्लीसे [illegible] का पत्र
मिला। [illegible] दिल्ली [illegible]
[illegible] पत्र
[illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्। वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।२१।
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः। यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।२२।

sukhamātyantikaṁ yattadbuddhigrāhyamatīndriyam ।
vetti yatra na caivāyaṁ sthitaścalati tattvataḥ ॥ 21 ॥
yaṁ labdhvā cāparaṁ lābhaṁ manyate nādhikaṁ tataḥ ।
yasminsthito na duḥkhena guruṇāpi vicālyate ॥ 22 ॥

भीमसेनी, निर्जला एकादशीव्रत सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४५

आज त्रिपुरारी राम, संस्थापक "स्वामी सहजानन्द सरस्वती किसान समाज" के कल प्राप्त पत्र का उत्तर एक अन्तर्देशीय पत्र लिखकर भेज दिया। आज ही श्री सुरेन्द्र नाथ शर्मा गाजीपुर आश्रम को – उनके उद्दण्ड और [illegible] लड़के श्री [illegible] को लेकर [illegible] देना [illegible] जो कल तक ले जायेगा।

आज राधेश्याम रामायणी "[illegible]" [illegible] उनके ग्रन्थ "[illegible]" की भूमिका के दो-चार शब्द लिखना है। [illegible] "[illegible]" ([illegible]) [illegible] के [illegible] में [illegible]।

आज [illegible] को [illegible] में [illegible] दिये।

आज [illegible] की [illegible] से [illegible] का कार्य होगा।

कर्मशील और सदाचारी बनो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम्। स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा।२३।
सङ्कल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः। मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः।२४।

taṁ vidyād duḥkhasaṁyogaviyogaṁ yogasañjñitam |
sa niścayena yoktavyo yogo'nirviṇṇacetasā || 23 ||
saṅkalpaprabhavānkāmāṁstyaktvā sarvānaśeṣataḥ |
manasaivendriyagrāmaṁ viniyamya samantataḥ || 24 ||

प्रदोषव्रत सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४६

आज श्री धनञ्जय साई "अभिनेता मुजफ्फरपुर"-साढ़ी गांव के
[illegible] - श्री. राजेन्द्र [illegible] सहयोग के लिये [illegible]।
आज प्रातः चन्द्रमणि तिवारी जी · मठ में आये वे श्री जी
कार्य से [illegible] अपनी [illegible] में बैठक की अवस्था में
लगे हैं। वे चतुर्दिशा - ब्रह्म की बैठक को भूल गये थे
पर मैंने याद कराया। ठाकुर सी · उपेन्द्र - डा० योगी [illegible]
[illegible] आदि [illegible] सीने [illegible] का मौका लगा
[illegible] नहीं दे सके। कैसे [illegible] वर्षों से
पूर्व हो गए। चन्द्रशेखर मिश्र महाध्यक्ष-समिति का पद
[illegible]। [illegible] सदस्यों की यह [illegible] तो पचीस-
पचास सदस्यों की [illegible] होगी यह सहज ही
समझा जा सकता है। दो संन्यासी शिष्य - हरिदर्शन [illegible]
और [illegible] आज ही असंतुष्ट हैं। वे अपने
सुख भोग के लिये [illegible] है। दोनों संन्यासी - अनुशासन से
बहुत दूर [illegible] सुख भोग और [illegible] प्राप्ति के
आलोक में ही सोचते हैं। भगवान ही बेड़ा पार करें।
यही [illegible] समाज की [illegible] है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् । २५ ।
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् । ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् । २६ ।

śanaiḥ śanairuparamedbuddhyā dhṛtigṛhītayā |
ātmasaṁsthaṁ manaḥ kṛtvā na kiñcidapi cintayet || 25 ||
yato yato niścarati manaścañcalamasthiram |
tatastato niyamyaitadātmanyeva vaśaṁ nayet || 26 ||

आज पं० नारायण सिंह जी आये, उनसे सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४६
[illegible] हुआ। उन्होंने [illegible] कार्य [illegible]
हैं। उन्हें [illegible] के लिये भी [illegible]
का कार्य करना पड़ता है। [illegible]
[illegible]
[illegible] करते हैं। [illegible]
[illegible] है। उन्होंने [illegible]
[illegible] कार्य [illegible] दिये। आज [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] जिससे [illegible] हो गया है
भोजन नहीं किया।
[illegible] साढ़े [illegible] आये और गये। [illegible]
[illegible] देंगे।
[illegible]
आज रात को [illegible] जी।
प्रमाद के दोनों [illegible] पड़े [illegible] देहयोग [illegible] तथा
संकुचित स्वार्थ हैं। [illegible] आलस्य [illegible]
[illegible] और [illegible] है।

आप कुछ लेना चाहें तो जहाँसे भी मिले अच्छी शिक्षा लें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् । उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् । २७ ।
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः । सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते । २८ ।

praśāntamanasaṁ hyenaṁ yoginaṁ sukhamuttamam I
upaiti śāntarajasaṁ brahmabhūtamakalmaṣam II 27 II
yuñjannevaṁ sadātmānaṁ yogī vigatakalmaṣaḥ I
sukhena brahmasaṁsparśamatyantaṁ sukhamaśnute II 28 II

पूर्णिमा सूर्यो० ५ । ३, सूर्या० ६ । ४७

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण १, रविवार, 2 JUNE

सूर्यो० ५ । २, सूर्या० ६ । ४७

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि। ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः।२९।
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।३०।

sarvabhūtasthamātmānaṁ sarvabhūtāni cātmani ।
īkṣate yogayuktātmā sarvatra samadarśanaḥ ॥ 29 ॥
yo māṁ paśyati sarvatra sarvaṁ ca mayi paśyati ।
tasyāhaṁ na praṇaśyāmi sa ca me na praṇaśyati ॥ 30 ॥

आज प्रातः सिरदर्द था [illegible]   सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४८

नहीं [illegible]। वासुदेवने भोजन किया। चिन्तित और उदास सा है।
मध्याह्नमें - हरेराम-नारायणजी [illegible] से वापस
आये। सायंकाल स्वामी [illegible] गिरि आये। उनके [illegible]
[illegible] के संबंध में पत्र लिखा।
इसके पश्चात् [illegible] के [illegible] रहे थे, जो
[illegible] सहयोग के लिये आग्रह किया। [illegible]
[illegible] शुभकामना [illegible], [illegible]
[illegible] के संबंधमें
लिखा।

साधुओंकी सेवासे तीन गुण मिलते हैं—विनय, प्रभुभक्ति और उदारता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन। एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्॥ ३३॥
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्। तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥ ३४॥

arjuna uvāca

yo'yaṁ yogastvayā proktaḥ sāmyena madhusūdana |
etasyāhaṁ na paśyāmi cañcalatvātsthitiṁ sthirām || 33 ||
cañcalaṁ hi manaḥ kṛṣṇa pramāthi balavaddṛḍham |
tasyāhaṁ nigrahaṁ manye vāyoriva suduṣkaram || 34 ||

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४८

संत का ज्ञानमय जीवन विश्व की स्वार्थहीन सेवा है। ज्ञान यही सिखाता है कि समष्टि के कल्याण के परे व्यक्ति का, और उसी का एक अंश है, कोई स्वार्थ नहीं है। मनुष्य मानसिक विक्षोभ से तभी छुटकारा पाता है जब वह व्यक्तिगत वासनामय जीवन का परित्याग कर देता है। सहानुभूति और सेवा के जीवन में आत्मा का विस्तार होता है। स्वार्थमय जीवन आत्मघात है। इस पाप से बचने के लिये उसे छोड़ना होगा। अहंकार से ही कुनीति की वासनाएँ उत्पन्न होती हैं।

* * *

श्रद्धा, भक्ति और आत्मिक शक्ति के रूप में परिणत ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है। जिस प्रकार वृक्ष की उपयोगिता उसके फूलने फलने में है उसी प्रकार ज्ञान की सार्थकता कर्तव्य कर्म के पालन में है।

* * *

संत नीति-अनीति और शास्त्र के विधि-निषेध से ऊपर होता है। जिसने परमतत्त्व को प्राप्त कर लिया है वह सब नियमों से परे है। (कौषी० उप०)
शास्त्र का बंधन संत के लिये नहीं होता। वह स्वयं ही स्वयं शास्त्र है। अपने और अपने संस्कार के ऊपर उसका पूर्ण आधिपत्य है। जिन्होंने अहंता और ममता का त्याग कर दिया है उनके लिये शास्त्र तो उनका जीवन ही बन जाता है।

* * *

जप और ध्यान करो, ईश्वरको प्राप्त कर लोगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। ३५।
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः। वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः। ३६।

śrībhagavānuvāca

asaṁśayaṁ mahābāho mano durnigrahaṁ calam |
abhyāsena tu kaunteya vairāgyeṇa ca gṛhyate || 35 ||
asaṁyatātmanā yogo duṣprāpa iti me matiḥ |
vaśyātmanā tu yatatā śakyo'vāptumupāyataḥ || 36 ||

सूर्यो० ५। २, सूर्या० ६। ४८

संत जीवन का महत्व संसार में भगवान की दिव्य विभूति
हैं। साधारण मनुष्यों के लिये, जो अपनी वासनाओं के
वशीभूत होकर अज्ञानान्धकार में भटकते रहते हैं; विशाल
ज्योतिस्तम्भ हैं, जिनके प्रकाश में उनको सत्य का मार्ग
दिखलायी पड़ता है। आध्यात्मिक साधना का प्रथम चरण
ऐसे संतों का साहचर्य है।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ।३७।
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति ।अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ।३८।

arjuna uvāca
ayatiḥ śraddhayopeto yogāccalitamānasaḥ ।
aprāpya yogasaṁsiddhiṁ kāṁ gatiṁ kṛṣṇa gacchati ॥ 37 ॥
kaccinnobhayavibhraṣṭaśchinnābhramiva naśyati ।
apratiṣṭho mahābāho vimūḍho brahmaṇaḥ pathi ॥ 38 ॥

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९

आज स्वदेश [illegible] त्रिपाठी [illegible]।
उनकी माता का देहावसान हुआ तथा [illegible]
भी [illegible] में संपन्न हुआ। वे यहाँ गृहशुद्धि के लिये
[illegible] पाँच ब्राह्मण खिलाये तथा सामान्य हवन
करके [illegible] वे [illegible] ५० रुपया पूजा दे गये।
आज [illegible]
[illegible] रहा [illegible] और [illegible] मालूम होता।
दिन कई [illegible] गया तथा आज [illegible] नहीं
किया। [illegible] नहीं।
[illegible] को [illegible] है। [illegible]
कोई जायेगा।

आज प्रातः [illegible] और [illegible] का आना
और [illegible] के कमरे में आराम लगाया। [illegible]
[illegible] नहीं होते। [illegible]
[illegible]। मेरा [illegible] है कि [illegible]
प्रतिष्ठा की रक्षा की [illegible] में [illegible]
है [illegible] और [illegible]
[illegible] है।
साँप की जिस तरह [illegible] का सिर [illegible] नहीं।
[illegible] कहना कि [illegible]
की [illegible] है।
आज [illegible] को [illegible] के
लिये [illegible]
[illegible]
[illegible]

अन्नदान महादान है परन्तु विद्यादान उससे भी बड़ा दान है।

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्। यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन।४३।
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः। जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते।४४।

tatra taṁ buddhisaṁyogaṁ labhate paurvadehikam ।
yatate ca tato bhūyaḥ saṁsiddhau kurunandana ॥ 43 ॥
pūrvābhyāsena tenaiva hriyate hyavaśo'pi saḥ ।
jijñāsurapi yogasya śabdabrahmātivartate ॥ 44 ॥

योगिनी एकादशीव्रत (स्मार्त) सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५०

आज देहरादून से वाराणसी सकुशल पहुँचा।
[illegible] रामविलास शर्मा के [illegible] के एक लड़के ने [illegible]
[illegible] दर्द होने से भारी कष्ट हुआ, [illegible]
[illegible] पैर में [illegible] होने से शारीरिक कष्ट है।
[illegible]

जन्मपर तो नियन्त्रण, मौतपर कोई नियन्त्रण नहीं, यह कैसी बुद्धिमानी?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।४५।
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।४६।

prayatnādyatamānastu yogī saṁśuddhakilbiṣaḥ |
anekajanmasaṁsiddhastato yāti parāṁ gatim || 45 ||
tapasvibhyo'dhiko yogī jñānibhyo'pi mato'dhikaḥ |
karmibhyaścādhiko yogī tasmādyogī bhavārjuna || 46 ||

योगिनी एकादशीव्रत (वैष्णव) सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५०

आज दिनके [illegible] श्री [illegible] शर्मा आदि. श्रीमुनासभी
[illegible]
सभी शिष्यगण एवं भक्तगण मिले। रात्रि विश्राम किया।

* * *

महामुनि वैशम्पायन वेदों के आचार्य थे। उनके यहां बहुत से छात्र वेदाध्ययन करते थे। याज्ञवल्क्यजी भी इन्हीं के समीप पढ़ते थे। याज्ञवल्क्य जी इनकी बहिन के लड़के थे और मिथिलापुरी में रहते थे। एक बार समस्त महर्षियों ने मिलकर मेरु के समीप एक सभा स्थापित की। उस सभा में यह नियम था कि निश्चित तिथि को जो महर्षि उस सभा में उपस्थित न होगा उसे सात दिन तक वाचिक ब्रह्महत्या का पाप लगेगा। इस नियम के अनुसार सब महर्षि वहां उपस्थित होते थे। एक बार वैशम्पायन जी के पिता का श्राद्ध था. उन्होंने सोचा — 'श्राद्ध तो आवश्यक है, इसका प्रायश्चित्त सब विद्यार्थी मिलकर कर लेंगे।' तदनुसार वे सभा में नहीं गये। नियमानुसार उन्हें वाचिक ब्रह्महत्या का पाप लगा। उन्होंने अपने सब विद्यार्थियों से कहा — 'तुम सब मिलकर इस अपराध का प्रायश्चित्त कर लो।' याज्ञवल्क्य जी ने कहा — 'अभी ये सब छात्र छोटे हैं, ये सब क्या प्रायश्चित्त करेंगे? मैं ही सबके बदले का कर लूंगा।' वैशम्पायन जी ने कहा — 'नहीं, मेरे सबको मिलकर ही करना चाहिये।' किन्तु याज्ञवल्क्य जी हठ पकड़ गये कि नहीं, मैं अकेला ही करूंगा। तब गुरु जी को क्रोध आया और उन्होंने कहा — 'तूं [illegible] मेरे द्वारा पढ़ी हुई

रुलानेवालेको रोना पड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना। श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः। ४७।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः।६।

yogināmapi sarveṣāṁ madgatenāntarātmanā ।
śraddhāvānbhajate yo māṁ sa me yuktatamo mataḥ ॥ 47 ॥

प्रदोषव्रत — सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

आज पेट में कुछ गड़बड़ी रही। [illegible]
[illegible] मध्याह्न में भी [illegible]
[illegible] कराल [illegible] हुआ। [illegible]
की [illegible] हुईं। [illegible] के [illegible] लोगों की [illegible]
[illegible]!

× × ×

→ — (श्रीकाशी विद्वत्परिषद् का) —

यजुर्वेदकी शाखाओं का उद्गम है।
गुरु की आज्ञा पाकर याज्ञवल्क्य जी ने
अन्नजल में वे सब ऋचायें उगल दीं। उन्हें उनके
शिष्यों ने तित्तिर बनकर ग्रहण कर लिया, वही
यजुर्वेद में कृष्णयजुः नाम से प्रसिद्ध शाखा हुई।
इसीसे कृष्णयजुः और शुक्ल यजुः, ये दो भेद हुए।
उस शाखाके पढ़नेवाले ब्राह्मण 'तैत्तिरीय' कहलाये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः। असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु। १।

śrībhagavānuvāca

mayyāsaktamanāḥ pārtha yogaṁ yuñjanmadāśrayaḥ ।
asaṁśayaṁ samagraṁ māṁ yatha jñāsyasi tacchṛṇu ॥ 1 ॥

सूर्यो० ५। २, सूर्या० ६। ५१

आज समदुला में श्री [illegible] शर्मा के दरवाजे पर रुके। रात्रि भक्तों-शिष्यों से परिचय किया। [illegible] मठके लिये आर्थिक सहयोग जुटाया गया। आगे भी [illegible] किया गया। समदुला के [illegible] से परिचय किया। [illegible] भी हुआ। [illegible] और विशेष सहयोग भी देंगे।

समदुला से [illegible] रुपये [illegible] २०[illegible] रुपये गुरुपूजा मिली। दो धोती चादर भी मिला। [illegible] वापसी लौटे। [illegible] ११[illegible] रुपये [illegible] में तथा [illegible] से कुल [illegible] गुरुदक्षिणा मिली। १००० रुपये [illegible] को दिये। [illegible] ११२० + १००० = [illegible] तथा समदुला से [illegible] रुपये कुल ३२८० रुपये मठके लिये जमा। [illegible] रुपये [illegible] मिले। [illegible] -१२ रुपये [illegible] की।

कल प्रातः सहरसा पहुँचेंगे। [illegible] [illegible] पहुँचायेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः। यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते।२।
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः।३।

jñānaṁ te'haṁ savijñānamidaṁ vakṣyāmyaśeṣataḥ ।
yajjñātvā neha bhūyo'nyajjñātavyamavaśiṣyate ॥ 2 ॥
manuṣyāṇāṁ sahasreṣu kaścidyatati siddhaye ।
yatatāmapi siddhānāṁ kaścinmāṁ vetti tattvataḥ ॥ 3 ॥

अमावास्या सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

आज ११ बजे [illegible] [illegible] [illegible] - [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] /
[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] को [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible]
[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] - [illegible] [illegible] [illegible]

शुद्ध आषाढ़ कृष्ण ३०, रविवार, 16 JUNE

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५२

अमावास्या

आज [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] वाराणसी पहुँचे। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का
[illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] है जो [illegible] [illegible], [illegible] गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च। अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।४।
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्। जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।५।

bhūmirāpo'nalo vāyuḥ khaṁ mano buddhireva ca ।
ahaṅkāra itīyaṁ me bhinnā prakṛtiraṣṭadhā ॥ 4 ॥
apareyamitastvanyāṁ prakṛtiṁ viddhi me parām ।
jīvabhūtāṁ mahābāho yayedaṁ dhāryate jagat ॥ 5 ॥

पुरुषोत्तममासारम्भ   सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५२

[illegible] महाराज [illegible]
[illegible]
वे [illegible]
[illegible] दोनों [illegible] रहते थे। [illegible]
[illegible] कहा। [illegible]
[illegible] रहे। [illegible]
"[illegible]" कहा ही जाता है।
[illegible]
[illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय। अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।६।
मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।७।

etadyonīni bhūtāni sarvāṇītyupadhāraya ।
ahaṁ kṛtsnasya jagataḥ prabhavaḥ pralayastathā ॥ 6 ॥
mattaḥ parataraṁ nānyatkiñcidasti dhanañjaya ।
mayi sarvamidaṁ protaṁ sūtre maṇigaṇā iva ॥ 7 ॥

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३

आज मध्यमंडलेश्वर स्वामी [illegible] गिरिजी [illegible] महाराज
[illegible] [illegible] तथा [illegible] दो बार
सेवकों [illegible] में आ पहुँचा। उसी समय [illegible]
सहयोगी श्री [illegible] पहुँचे थे। [illegible]
श्रीमान् महामंडलेश्वर [illegible] बातें होती रहीं, [illegible]
[illegible] होती रहीं।
[illegible] के बाद [illegible]
में गये।
आज [illegible]
[illegible]

आज [illegible] गंगाप्रसाद सच्चिदानंद [illegible]
और [illegible] शर्मा आदि [illegible]
कि [illegible]
[illegible] श्री रामकृष्ण [illegible]
का विस्तृत [illegible] लिख गया।
आज दाल [illegible] मंगवानी चाही।
[illegible]

अपने अपमान तथा स्वामीकी स्नेहहीनताको दूसरोंके समक्ष प्रकट नहीं करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः। प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु।८।
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ। जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु।९।

raso'hamapsu kaunteya prabhāsmi śaśisūryayoḥ ।
praṇavaḥ sarvavedeṣu śabdaḥ khe pauruṣaṁ nṛṣu ॥ 8 ॥
puṇyo gandhaḥ pṛthivyāṁ ca tejaścāsmi vibhāvasau ।
jīvanaṁ sarvabhūteṣu tapaścāsmi tapasviṣu ॥ 9 ॥

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३

आज [illegible]
को [illegible]।
[illegible]।

संत परोपकार करता न दिखाई दे तो भी अद्वितीय परोपकारी है, क्योंकि वह स्वयं जलती हुई मशाल है जो अपने उदाहरण से ही उपदेशादि से भी अधिक प्रभावशाली ढंग से संसार को सच्चे सुख और स्वावलम्बन का रास्ता दिखाने, रागद्वेष और भ्रम आदि का हरना सिखाता है।

जिस तरह राजा के उदाहरण से लोग सांसारिकता की शिक्षा लेते हैं उसी तरह संत के जीवन से शुद्ध आचरण की शिक्षा लेते हैं। संत चरित्र का राजा है। उसे अपने पद की मर्यादा की रक्षा करनी चाहिये। संतपना त्याग प्रधान है।

जिसकी सब प्रवृत्तियाँ शुद्धात्मा के प्रेम और उद्देश्य से प्रेरित होती हैं — जिसमें आत्मस्वरूप के ज्ञान का आलोक है और उसमें निष्ठा है वही संत सत् उद्देश्यवाला होता है।

अपयश से पतन को, और प्रशंसा से सुधार को प्रोत्साहन मिलता है। यह समझकर बिना उपयुक्त कारण के किसी की साख एकाएक न बिगाड़नी चाहिये, बल्कि सबको सुधार का अवसर देना चाहिये।

मनुष्य की आत्मा के अन्दर वह शक्ति रहती है जो हमारे मनुष्यत्व को बदलकर देवत्व में परिणत कर देती है।

वैरका अन्त वैरसे नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।१४।
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः। माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः।१५।

daivī hyeṣā guṇamayī mama māyā duratyayā ।
māmeva ye prapadyante māyāmetāṁ taranti te ॥ 14 ॥
na māṁ duṣkṛtino mūḍhāḥ prapadyante narādhamāḥ ।
māyayāpahṛtajñānā āsuraṁ bhāvamāśritāḥ ॥ 15 ॥

सूर्यो० ५।४, सूर्यो० ६।५३

आज हरेराम दिल्ली गये। [illegible] स्वामी [illegible] महाराज से स्वामी [illegible] [illegible] दिल्ली [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होजायें।

आज [illegible] रहा। [illegible] [illegible]

अधिक आषाढ़ शुक्ल ७, रविवार, 23 JUNE

सूर्यो० ५।४, सूर्यो० ६।५३

आज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

आज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

RajGuru Math Shivala Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ।१६।
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते। प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।१७।

caturvidhā bhajante māṁ janāḥ sukṛtino'rjuna ।
ārto jijñāsurarthārthī jñānī ca bharatarṣabha ॥ 16 ॥
teṣāṁ jñānī nityayukta ekabhaktirviśiṣyate ।
priyo hi jñānino'tyarthamahaṁ sa ca mama priyaḥ ॥ 17 ॥

आज [illegible] के बाद निर्माण कार्य शुरू हुआ सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३
दक्षिण की [illegible] में [illegible] हुई। सांयकाल [illegible]
नाथ शर्मा आ पहुँचे। [illegible] है और [illegible] समाचार [illegible] है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्।१८।
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।१९।

udārāḥ sarva evaite jñānī tvātmaiva me matam ।
āsthitaḥ sa hi yuktātmā māmevānuttamāṁ gatim ॥ 18 ॥
bahūnāṁ janmanāmante jñānavānmāṁ prapadyate ।
vāsudevaḥ sarvamiti sa mahātmā sudurlabhaḥ ॥ 19 ॥

आज भी डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा [illegible] हैं। सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३
मैं पत्र लेकर महर्षि देव शर्मा के यहाँ गये थे। आज भी लोगों
[illegible] का काम हो रहा है। आज पत्र [illegible] हरिकृष्ण [illegible] जी
के गद्दी को छोड़कर [illegible] पत्र दिया [illegible]
[illegible] चिकित्सा करा रहे हैं। [illegible]
[illegible] के संबंध में उन्होंने लिखकर [illegible] उन्हें
[illegible] दे दिया। आज [illegible]
भी पत्र लिखा। [illegible] का पत्र
आया [illegible]
[illegible] के लिये [illegible] सहायता [illegible]
[illegible] १० [illegible]
डॉ० योगीन्द्रनाथ शर्मा, महर्षि देवराज के यहाँ [illegible]
[illegible] बातें हुईं। वे शरीर में [illegible]
चलना फिरना [illegible] लगा है। [illegible]
[illegible] कार्य की सफलता के लिये प्रयास करेंगे।
डा० योगीन्द्र पुनः २८ ता० को [illegible]
आयेंगे इस संबंध में आगे [illegible]
आज

आयु, लक्ष्मी व यश सदाचरणसे मिलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया। २०।
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्। २१।

kāmaistaistairhṛtajñānāḥ prapadyante'nyadevatāḥ ।
taṁ taṁ niyamamāsthāya prakṛtyā niyatāḥ svayā ॥ 20 ॥
yo yo yāṁ yāṁ tanuṁ bhaktaḥ śraddhayārcitumicchati ।
tasya tasyācalāṁ śraddhāṁ tāmeva vidadhāmyaham ॥ 21 ॥

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३

डा० रामवचन शर्मा. पटना को
वैद्य खड्गधारी शर्मा. कानपुर को पत्र लिख भेजा।
श्री केशवराम पोस्टमास्टर, नईबाजार द्वारा।
श्री मनमोहनराय. पाण्डेयपुर प्रजाइन्टर मौजाह. को मकान के पते पर
आकर मिलने के लिये एक पत्र भेजा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्। २२।
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्। देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि। २३।

sa tayā śraddhayā yuktastasyārādhanamīhate ।
labhate ca tataḥ kāmānmayaiva vihitānhi tān ॥ 22 ॥
antavattu phalaṁ teṣāṁ tadbhavatyalpamedhasām ।
devāndevayajo yānti madbhaktā yānti māmapi ॥ 23 ॥

पुरुषोत्तमी एकादशीव्रत — सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

आज भी प्रमोद कुमार जी कर्णधार नहीं आ सके।
मैं [illegible] हीन-सा हूँ। कुछ कष्ट है। अकेला दिनभर
अकेला रहता हूँ। प्रभु के दरबार में कोई भी चूक हो न
आज [illegible] बाबा भी आ गये थे। रहे। सब कोई कुछ
लेकर [illegible] रहे। [illegible]
[illegible] है।
आज शिवमूर्ति [illegible] समाप्त हुआ। उन्होंने
आदि की समीक्षा की - प्रोत्साहन आशीर्वाद दिया। वापस
गये। मैंने [illegible] देव शर्मा को संदेश भेजा।
[illegible] दिनभर प्रमोद [illegible]
[illegible] नहीं [illegible]। मन में चिन्ता
एवं [illegible] भाव रहता है। [illegible]
में पड़ा [illegible] है।
"कल्याण" का "संत-अंक" कुछ पृष्ठ पढ़ता और कुछ
लिखता रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः। परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्। २४।
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः। मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्। २५।

avyaktaṁ vyaktimāpannaṁ manyante māmabuddhayaḥ ।
paraṁ bhāvamajānanto mamāvyayamanuttamam ॥ 24 ॥
nāhaṁ prakāśaḥ sarvasya yogamāyāsamāvṛtaḥ ।
mūḍho'yaṁ nābhijānāti loko māmajamavyayam ॥ 25 ॥

प्रदोषव्रत — सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

आज वर्षा सफल नहीं हुआ। दोपहर में हरेराम दिल्ली से लौटकर आये। [illegible] राम ने कुछ किया नहीं। वे दौड़ते हैं। पुनः [illegible] होगा कि [illegible] [illegible] के माध्यम से उन्हें कहे कहलायें। [illegible] रात में भोजन किया। सायंकाल [illegible] राम [illegible] को [illegible] [illegible] और चले गये। [illegible] [illegible] में रहता है। [illegible] को [illegible] दिखाई देते आते हैं या नहीं!

पाप ही एकमात्र विपत्ति है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन। भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन।२६।
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत। सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप।२७।

vedāhaṁ samatītāni vartamānāni cārjuna ।
bhaviṣyāṇi ca bhūtāni māṁ tu veda na kaścana ॥ 26 ॥
icchādveṣasamutthena dvandvamohena bhārata ।
sarvabhūtāni sammohaṁ sarge yānti parantapa ॥ 27 ॥

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

आज भी बेकैदा कलेक्टर नहीं आया - काम पड़ा ही रहा।
पं० योगीन्द्रनाथ शर्मा. श्रीपुर से प्रातः ही आ गये थे. पे.ए. [illegible]
को भारती पहुंचकर [illegible] थे।
यहीं भोजन करके आगे कार्य के उद्देश्य से आगे चले गये।
मिश्राजी को छोड़कर, जो मेरे साथ [illegible] गया था.
गत ११ जून को. उन्हें ही धन्यवाद पत्र लिखकर [illegible]
[illegible] देकर - कुमार के [illegible] - गंगाप्रसाद -
[illegible] शर्मा और प्रो० [illegible] आदि के पास
पुस्तकें और [illegible] के लिये भेजा। [illegible]
[illegible] नहीं है [illegible] के [illegible]।)

अधिक आषाढ़ शुक्ल १४, रविवार, 30 JUNE

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

व्रत-पूर्णिमा

आज प्रमोदकुमार सपरिवार चले आये। आज कैलाशपति-
मिश्रजी को [illegible] के माध्यम से पत्र लिखकर दिया।
आज डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा. लखनऊ. आगे [illegible]
कार्य में पैसों के लिये गये। मैंने [illegible] के गंगाप्रसाद राय कुमार
श्री प्रभाकर राव [illegible] "जंगल" की एक [illegible] देकर.
डा० योगीन्द्र को सहयोग देने का अनुरोध किया।
प्रमोद के आने से [illegible] में [illegible] आ गई है।
श्रीरामलोचन पांडे का [illegible] - "[illegible]" राय को [illegible]
[illegible] में [illegible] के लिये आया है।
श्रीराम [illegible] के [illegible] [illegible] बिल्कुल और [illegible]
रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्। ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः। २८।
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये। ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्। २९।

yeṣāṁ tvantagataṁ pāpaṁ janānāṁ puṇyakarmaṇām ।
te dvandvamohanirmuktā bhajante māṁ dṛḍhavratāḥ ॥ 28 ॥
jarāmaraṇamokṣāya māmāśritya yatanti ye ।
te brahma tadviduḥ kṛtsnamadhyātmaṁ karma cākhilam ॥ 29 ॥

पूर्णिमा सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।५४

आज कल्लू जी के द्वारा १००० [illegible] रुपये मजदूरी के मद
मे प्रमोद द्वारा दिये गये। १०० रुपये अपने कोष से प्रमोद पत्नी को
दवा उपचार के लिये दिया। फोटो बनवाने के लिये दिया गया -
कल यहीं से [illegible] बनवाने के लिये दिया [illegible] है।

स्वार्थ और अभिमानका त्याग किये बिना मनुष्य श्रेष्ठ नहीं बन सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः। प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः। ३०।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः।७।

sādhibhūtādhidaivaṁ māṁ sādhiyajñaṁ ca ye viduḥ ।
prayāṇakāle'pi ca māṁ te viduryuktacetasaḥ ॥ 30 ॥

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।५४

आज प्रातः प्रमोद के साथ दानापुर-रेल के
[illegible] का [illegible] पास बनवाने - उसका नवीनीकरण करवाने
पहुँचे। श्री कृष्ण प्रताप सिंह - आयुक्त - विकास
का भी पालक [illegible] है। उ. [illegible] बड़ी [illegible] और
पास - कार्ड की [illegible] न होने से [illegible] पर ही
आवेदन पत्र लेकर. [illegible] के लिये [illegible]
तक को [illegible] बना था। प्रमोद के साथ बच्चा
भी श्री कृष्ण ठाकुर [illegible] - [illegible] की व्यवस्था
करने के लिये चले गये। रात्रि विश्राम किया।

अधिक कुछ न बन सके तो उदास बैठे हुएको हँसाओ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथाष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम। अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते।१।
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन। प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः।२।

arjuna uvāca

kiṁ tadbrahma kimadhyātmaṁ kiṁ karma puruṣottama ।
adhibhūtaṁ ca kiṁ proktamadhidaivaṁ kimucyate ॥1॥
adhiyajñaḥ kathaṁ ko'tra dehe'sminmadhusūdana ।
prayāṇakāle ca kathaṁ jñeyo'si niyatātmabhiḥ ॥2॥

सूर्यो० ५।७, सूर्यां० ६।५४

आज अपराह्न चार बजे [illegible] के साथ
महामण्डलेश्वर स्वामी [illegible] गिरि जी श्री [illegible] के सहयोग में
पंजाब मेल से पटना पहुंचे। मार्ग में बक्सर में [illegible]
[illegible] मिश्र - [illegible] ट्रेन में
महामण्डलेश्वर जी के स्वागत में मिले। [illegible] जेल के [illegible]
के किसी [illegible] कार्यक्रम में साथ पटना नहीं चल सके।
गाड़ी दिल्ली [illegible] साढ़े बारह बजे पटना जंक्शन पहुंची।
श्री हरीकृष्ण ठाकुर अपने [illegible] सहयोगियों - मित्रों एवं पुत्र
श्री [illegible] ठाकुर के साथ स्वागतार्थ फूल माला सहित आये और
महामण्डलेश्वर जी उनकी मंडली सहित इन सभी को अपने निवास
९२ सरस्वती सदन [illegible] नगर - पटना - १६ पर ले गये। यथोचित
सबका सत्कार किया - भोजन जलपान कराया - रात्रि विश्राम
किया गया।

नोट - भूल से ४ जुलाई की डायरी ३ को में अंकित
होगयी। आज की [illegible] [illegible] हैं।

[illegible] के [illegible]। [illegible]
से भेंट [illegible] मिश्र - [illegible]
[illegible] से [illegible]। [illegible]
[illegible] जी की [illegible]
मठ में पहुंचा।

नम्रतासे कही हुई कठोर बातें भी अच्छी लगती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसञ्ज्ञितः।३।
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम्। अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर।४।

śrībhagavānuvāca

akṣaraṁ brahma paramaṁ svabhāvo'dhyātmamucyate ।
bhūtabhāvodbhavakaro visargaḥ karmasañjñitaḥ ॥ 3 ॥
adhibhūtaṁ kṣaro bhāvaḥ puruṣaścādhidaivatam ।
adhiyajño'hamevātra dehe dehabhṛtāṁ vara ॥ 4 ॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत — सूर्यो० ५।७, सूर्या० ६।५४

लेख का विवरण आगे [illegible]
अंकित कर दिया गया है।-

"क्रियासिद्धि सत्वे भवति महतां नोपकरणे"
को ध्यान में रख. आत्मविश्वास और धैर्य के साथ कार्य
करना उचित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्। यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः।५।
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।६।

antakāle ca māmeva smaranmuktvā kalevaram I
yaḥ prayāti sa madbhāvaṁ yāti nāstyatra saṁśayaḥ II 5 II
yaṁ yaṁ vāpi smaranbhāvaṁ tyajatyante kalevaram I
taṁ tamevaiti kaunteya sadā tadbhāvabhāvitaḥ II 6 II

पूर्व निश्चित योजना के अनुसार सूर्यो० ५।७, सूर्यां० ६।५४

श्री हरिकृष्ण ठाकुर के पार्क में (घाटे) महामंडलेश्वर जी के
आध्यात्मिक प्रवचन की व्यवस्था है। गाड़ी के भोगल तालाब है
श्री अखिल भारत के प्रधान रामानंद भी साथ थे और
उद्योग [illegible] और [illegible] - नरिकागार पर के ही साथ थे।
अधिवक्ता श्री मूलचन्द मिश्र, प्रो० दीनानाथ राम, कालिन्दी [illegible],
तथा दादा दलोंग संस्थान इत्यादि बुद्धिजीवी प्रवचन में पहुंचे,
मुझे भी कुछ कहना पड़ा। सभा प्रायः सफल रही।
सभा तो ठीक थी-पर सभी लोग श्रद्धालु, सम्भ्रान्त
चरित्रवान् होते हैं।
भोजन और विश्राम के बाद श्री हरिकृष्ण ठाकुर द्वारा
गाड़ी का प्रबन्ध किया गया और महामंडलेश्वर जी की मंडली
के साथ मैं भी प्रेमेश सहित स्वामी रामानंद ब्रह्मचारी जी
[illegible] वर्ली [illegible] गिरि पहुंचे।
सायंकाल समय प्रवचन का कार्यक्रम ५ बजे तक चला।
महाराज जी की प्रेरणा से मुझे भी कुछ कहना पड़ा।

हेतुमें ईर्ष्या करनी चाहिये, फलमें नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्।७।
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना। परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्।८।

tasmātsarveṣu kāleṣu māmanusmara yudhya ca |
mayyarpitamanobuddhirmāmevaiṣyasyasaṁśayam ||7||
abhyāsayogayuktena cetasā nānyagāminā |
paramaṁ puruṣaṁ divyaṁ yāti pārthānucintayan ||8||

आज श्री राजगुरु कैलाश-विद्यातीर्थ सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।५४
आश्रम में सभा-प्रवचन में भाग लेते हुए - कैलाशजी

सजातीय बंधुओं से संपर्क करता रहा - सामाजिक चर्चा होती रही। दोनों पालियों में मुझे भी प्रवचन में भाग लेना पड़ता रहा। यहाँ के अध्यापक बन्धु [illegible] समोधनों [illegible] वार्ता करता रहा। तारन विजय के साथ श्याम सिंह - बखल में [illegible] पूर्व [illegible] (सर्वोपरि [illegible]) से विनोद किया फिर श्री तथा सिंगौर के श्री मुकुन्द प्रसाद [illegible] गोपाल धाम से भेंट और बातें।
आश्रमवासी के यहाँ मिष्ठान्न-भोजन - प्रसाद प्राप्त हुआ।

अधिक आषाढ़ कृष्ण ७, रविवार, 7 JULY

सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।५४

आज भोजन के बाद श्री [illegible] सभा में प्रवचन किया - विदाई - ७० रुपये महाराज जी की ओर से। [illegible] बन्धु पं० [illegible] मिश्र जी मुजफ्फरपुर - के [illegible] आ पहुँचे। उनके एक सहयोगी साथ भी थे। उन्हीं की जीप से चलकर [illegible] पटना - गांधीनगर - श्रीकृष्ण [illegible] देवोत्तर के अवसर पर पहुँच गये। भोजन विश्राम किया गया। आश्रम स्वामी दोनों में ७० रुपये दक्षिणा विदाई प्राप्त हुई।
स्टेशन - काशी से - आज पं० कैलाशपति मिश्र से मिलने के लिये ठहरे थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः । सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् । ९ ।
प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव । भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ।१०।

kaviṁ purāṇamanuśāsitāramaṇoraṇīyāṁsamanusmaredyaḥ ।
sarvasya dhātāramacintyarūpamādityavarṇaṁ tamasaḥ parastāt ॥ 9 ॥
prayāṇakāle manasācalena bhaktyā yukto yogabalena caiva ।
bhruvormadhye prāṇamāveśya samyak sa taṁ paraṁ puruṣamupaiti divyam ॥ 10 ॥

आज प्रात: प्रमोदकुमार और हरेराम सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।५४
पं० कैलासपति मिश्र जी से, अपने मित्र [illegible] उनके
भाजपा कार्यालय 7- पटेल मार्ग पटना में मिले।
मिलकर आने के बाद कृष्णकान्त सिंह जी का [illegible]
पहुँचे। वहाँ देर के बाद [illegible] हम लोग -
बक्सर उतरकर अपने आश्रम में गये। रात को विश्राम
किया। आश्रम भी अस्त-व्यस्त स्थिति देखा।
[illegible]
का और गाना सुना।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री सच्चिदानंद राय - बुढ़ुपर . वहां के शिष्यों की पूजा राशि पढ़ौतन आज मध्याह्न आती (कुल [illegible]) मिले। जिसमें - [illegible] की राशि है; और शेष ३०० रु. [illegible] अन्त पूजा. —

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये । ११ ।
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च । मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् । १२ ।

yadakṣaraṁ vedavido vadanti viśanti yadyatayo vītarāgāḥ |
yadicchanto brahmacaryaṁ caranti tatte padaṁ saṅgraheṇa pravakṣye || 11 ||
sarvadvārāṇi saṁyamya mano hṛdi nirudhya ca |
mūrdhnyādhāyātmanaḥ prāṇamāsthito yogadhāraṇām || 12 ||

ग्राम - बुढ़ुपर - (कैमूर) के शिष्यों की पूजा

सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।५४

(1) श्री परमहंस राय 101/=	(23) श्री रामसूरत राय 200/=
(2) " विभूतिनारायणराय 200/=	(24) " उदयनारायण " 30/=
(3) " श्रीनारायण राय 51/=	(25) " विजय बहादुर " 51/=
(4) " शिवमूर्ति राय 50/=	(26) " विन्ध्याचल " 25/=
(5) " गंगाप्रसाद राय 61/=	(27) " राकेश मिश्र (दुन्दुन) 50/=
(6) " राम दयाल " 75/=	(28) " भुवनेश्वर राय 21/=
(7) " दूर्ग " 100/=	(29) " श्रीराम " 250/=
(8) " विपिनबिहारी " 51/=	(30) " सदानन्द " 151/=
(9) " ब्रह्मदेव " 101/=	(31) " जमुना " 50/=
(10) " कपिलदेव " 51/=	(32) " सच्चिदानन्द " 151/=
(11) " गौरी शंकर " 51/=	979/=
(12) " साहेब दयाल " 101/=	पूजा का - 1919
(13) " जयनारायण " 50/=	कुलयोग 2898/=
(14) " रवीन्द्र प्रसाद " 30/=	
(15) " नर्वदेश्वर " 200/=	(33) श्री जलेसर राय 100/=
(16) " बुलेश्वर " 50/=	(34) " श्रीपति राय 50/=
(17) " कैलास " 20/=	(35) " राजगृह " 50/=
(18) " सारंगधर " 101/=	योग 3098/=
(19) " मनभूषन " 40/=	
(20) " रामप्रवेश " 25/=	
(21) " बब्बन " 400/=	
(22) " सुदामा " 10/=	
1919/=	

किसीका आशीर्वाद प्राप्त करो तो हानि नहीं, परन्तु किसीका अन्तःकरण दुःखी करके शाप तो मत लो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्। १३।
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः। १४।

omityekākṣaraṁ brahma vyāharanmāmanusmaran |
yaḥ prayāti tyajandehaṁ sa yāti paramāṁ gatim || 13 ||
ananyacetāḥ satataṁ yo māṁ smarati nityaśaḥ |
tasyāhaṁ sulabhaḥ pārtha nityayuktasya yoginaḥ || 14 ||

सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।५४

आज सिर-गाँव के शिक्षाविद् श्री वीरेन्द्र सिंह-प्राचार्य-
श्री हरिश्चन्द्र डिग्री कॉलेज को-एक अनुसन्धानात्मक ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रस्ताव
[illegible] मैं जानता कि [illegible] नाम सिंह और विश्वमुक्ति
रामपुर भोजपुर के लड़कों का [illegible] महाविद्यालय में नामांकन
कराने में सहानुभूतिपूर्वक योगदान करें। इस सम्बन्ध में प्रमोद कुमार से
कुछ आपसी मतभेद हो गये थे [illegible] रहे हैं।
बाद में महादेव राय-चन्द्रिका कॉलोनी-(ज्योती-गाजीपुर) के
घर गये। उनसे मठ में हो रहे निर्माण कार्य के संबंध में सविस्तार
बातें हुईं। वह यहाँ ठीक कर रहे। कल्लू ठीकेदार जो मूलतः तथा
कार्य में लापरवाही उपेक्षा तथा उदासीनता के सम्बन्ध में भी
बातें हुईं। महादेव राय ने स्वयं के [illegible] सिंह [illegible]
से अनुरोध किया कि वे अपना-पार्श्ववर्ती आदमी ठीकेदार
देकर कार्य सम्पन्न करावें। उन्होंने स्वीकार किया।
वह आदमी संध्याकाल में आकर कार्य देखा था और
इसके लिए [illegible] सहित आने की बात कहकर वापस
गया। कल से ही गंगापुर के शिवकुमार [illegible] पुत्र
श्री ब्रजकिशोर अपनी पत्नी-बच्चे सहित दवा कराने के
काम में [illegible] मठ में रहे हैं।

दूसरेका अपमान करनेवाला स्वयं अपनी जातिका अपमान करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्। नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः। १५।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन। मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते। १६।

māmupetya punarjanma duḥkhālayamaśāśvatam ।
nāpnuvanti mahātmānaḥ saṁsiddhiṁ paramāṁ gatāḥ ॥ 15 ॥
ābrahmabhuvanāllokāḥ punarāvartino'rjuna ।
māmupetya tu kaunteya punarjanma na vidyate ॥ 16 ॥

पुरुषोत्तमी एकादशीव्रत — सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।५४

आज भी ठीकेदार नहीं आया न आनन्द सिंह काली आश्रमों आया। प्रमोद राय भी नाराज थे - वीरबहादुर सिंह के यहां [illegible] शिवजी के आगे धामों के [illegible] को लेकर - शत्रुभाव, एक दूसरे रखना उचित है। किन्तु जिसको जहां आना होता है, वह भगवान से [illegible] शिकस्त हो जाता है।

बहुत दिनों, मित्रता और आत्मीयता के बाद स्थिति सुधरी। काम चलता है। मन में भी [illegible] है कि सब कुछ स्वीकार, जो सेवा करता है, सम्मानित करता है. उसके व्यक्तिगत दोषों को, गलतियों को क्षमा किया जाता है।

श्री प्रमोद कुमार - आश्रम के निकट लोगों में सर्वोपरि योगिराज हैं। मैं फिर भी और सेवक हैं। मैं कोई [illegible] नहीं सकता। वे आप [illegible] के [illegible] सेवा करते हैं। [illegible] रहे। [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्त्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः । रात्रिं युगसहस्त्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः । १७ ।
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे । रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके । १८ ।

sahasrayugaparyantamaharyadbrahmaṇo viduḥ ।
rātriṁ yugasahasrāntāṁ te'horātravido janāḥ ॥ 17 ॥
avyaktādvyaktayaḥ sarvāḥ prabhavantyaharāgame ।
rātryāgame pralīyante tatraivāvyaktasañjñake ॥ 18 ॥

प्रदोषव्रत — सूर्यो० ५ । १०, सूर्या० ६ । ५३

आज ब्रजकिशोर - सपरिवार वापस गये। पू० गुरुदेव देखते,
[illegible] आदि कर्मों से पूजा रूप में देखते। अंजोरी के
श्री शिवकुमार का परिवार श्रद्धालु सेवक और भक्त है। अतः
उनकी परीक्षा करके और सेवा का मूल्यांकन करना आवश्यक
है। आज श्री छिद्दालाल जी - महेश्वर शर्मा के साथ आये।
वे एक हजार आर्थिक सहयोग देकर गये। दोनों केला,
सात नींबू और सेब साथ ले आये।
पू० गुरुदेव पं० कमला कान्त जी ज्योतिषी, पंचांग गुरुदेव पत्रिकाओं
की पुस्तक कार्यवाही स्व० गुरुदेव पंचांग को उनकी इच्छा पूर्ण
किया। गुरुदेव की [illegible] खायी।

नीम सर्वत्र, चन्दन कहीं-कहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे।१९।
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।२०।

bhūtagrāmaḥ sa evāyaṁ bhūtvā bhūtvā pralīyate ।
rātryāgame'vaśaḥ pārtha prabhavatyaharāgame ॥ 19 ॥
parastasmāttu bhāvo'nyo'vyakto'vyaktātsanātanaḥ ।
yaḥ sa sarveṣu bhūteṣu naśyatsu na vinaśyati ॥ 20 ॥

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३

आज शिवमुनि राय आने पर भेंट नहीं हुई। दोपहर में विश्राम काल में आये थे। उसके पूर्व श्री [illegible] आये उनसे [illegible] हुआ। उन्होंने पूर्णतः आश्वस्त किया कि [illegible]। सायंकाल प्रमोद कुमार [illegible] [illegible] के संबंध में [illegible] [illegible] के प्रवेश के संबंध में भी अनुकूल बातें हुईं। [illegible] को [illegible] [illegible]। सायंकाल प्रमोद जी [illegible] [illegible]। [illegible] प्राप्त हुए। [illegible]।

अधिक आषाढ़ कृष्ण १४, रविवार, 14 JULY

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३

आज [illegible] के पते पर तथा श्री [illegible] को पत्र [illegible]। [illegible] सत्संग में [illegible] विशेष [illegible] लिये तथा [illegible] की [illegible] समिति की बैठक में आने का [illegible] लिखा। श्री [illegible] प्रमोद कुमार [illegible] की [illegible] कल स्नान के बाद [illegible] घर जायेंगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्। यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।२१।
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।२२।

avyakto'kṣara ityuktastamāhuḥ paramāṁ gatim ।
yaṁ prāpya na nivartante taddhāma paramaṁ mama ॥ 21 ॥
puruṣaḥ sa paraḥ pārtha bhaktyā labhyastvananyayā ।
yasyāntaḥsthāni bhūtāni yena sarvamidaṁ tatam ॥ 22 ॥

सोमवती अमावास्या, पुरुषोत्तममास समाप्त   सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५३

आज चन्द्रमणि त्रिपाठी एवं श्री राजेन्द्र तिवारी को
१७ जुलाई की न्यास समिति की बैठक में अपेक्षा संक्षिप्त
योगदान के लिये प्रार्थना रूप में निवेदन पत्र भेजे गये।
स्वास्थ्य ठीक नहीं है। गर्दन की नाड़ी-दर्द और गले में दर्द है।
यद्यपि कुछ भोजन पाने में मन स्थिर रहा है। यह अपने पिछले कर्मों
का फल है। असंयम का दण्ड है। प्रकृति किसी को क्षमा नहीं करती।

तपस्यासे प्रेम नहीं मिलता, प्रत्युत शक्ति मिलती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः। प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ।२३।
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।२४।

yatra kāle tvanāvṛttimāvṛttiṁ caiva yoginaḥ ।
prayātā yānti taṁ kālaṁ vakṣyāmi bharatarṣabha ॥ 23 ॥
agnirjyotirahaḥ śuklaḥ ṣaṇmāsā uttarāyaṇam ।
tatra prayātā gacchanti brahma brahmavido janāḥ ॥ 24 ॥

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५२

आज के शंकर राय जी को [illegible] - पोस्टमास्टर
नई बस्ती [illegible] को पत्र भेजकर उन्हीं के माध्यम से, उसी में
उपहार के रूप में श्री [illegible] शर्मा - [illegible] - सचिव, वयस्क आश्रम-
न्यास समिति को भी आप [illegible] तथा श्री काशी नारायण-
लाल [illegible] (सचिव पद) हैं। [illegible] पत्र भी भेजे गये।

x x x

अंग्र एवं [illegible] के लब्धप्रतिष्ठ समाज के एक मूर्धन्य व्यक्ति
[illegible] - सिद्धेश्वरी प्रसाद सिंह के पुत्र - अरुण सिंह जी - जो [illegible]
शर्मा के दामाद भी हैं - मठ में कई दिनों के अनुरोध के बाद अपने
पिता की सहायता से एक [illegible] ठेकेदार तथा एक मित्र - इंजीनियर
के साथ - मठ के निर्माण कार्य की समीक्षा और सहायता के लिये
आये। उन्होंने संपूर्ण स्थिति की समीक्षा करके कहा कि
दो तीन दिनों में कार्य प्रारम्भ करा दूंगा और दस दिनों के भीतर
छत की ढलाई हो जायेगी। उन्होंने कई बिंदुओं पर अपनी
सलाह भी दी। सीमेंट की [illegible] को [illegible] बताया।
छत को [illegible] - लोहे की रॉड और [illegible] देकर
सेंटरिंग को प्रारम्भ करने की बात बतायी। उनके ठेकेदार -
भी [illegible] संम्यक रूप से लोहे के [illegible] को प्रारम्भ करेंगे
[illegible] लड़के को लेकर [illegible]
पर श्री राजेन्द्र [illegible] डाक्टर के यहाँ चिकित्सा कराने गये। [illegible]
[illegible] तथा [illegible] साथ [illegible] गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् । तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते । २५ ।
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते । एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः । २६ ।

dhūmo rātristathā kṛṣṇaḥ ṣaṇmāsā dakṣiṇāyanam ।
tatra cāndramasaṁ jyotiryogī prāpya nivartate ॥ 25 ॥
śuklakṛṣṇe gatī hyete jagataḥ śāśvate mate ।
ekayā yātyanāvṛttimanyayāvartate punaḥ ॥ 26 ॥

आज हरिकृष्ण ठाकुर

श्रीजगदीश-रथयात्रा — सूर्यो० ५ । १३, सूर्या० ६ । ५२

को पटना-:सरस्वती सदन के पते पर एक पत्र :व्यापक रूप में लिफाफे में लिखकर छोड़ा गया। श्री रामकौशल पांडे-सिकरी को ३० जुलाई गुरुपूर्णिमा की महत्वपूर्ण बैठक तथा निर्माण में विशेष सक्रिय हो योगदान करने के लिये अन्तर्देशीय पत्र लिखकर छोड़ा। [illegible] जोड़ गया-म० गिरीश के आय-व्यय का।
[illegible] [illegible] पाँच लाख चौदह हजार छः सौ विभिन्न स्रोतों से एकत्र हुए तथा [illegible] हजार व्यय भी हो गये। उसमें लौटे के लिये [illegible] चौदह हजार छः सौ [illegible] [illegible] के पास जमा किये जा चुके हैं। आज डा० ओमप्रकाश तिवारी मेनरोड-रांची-[illegible] श्री कल्पनाथ तिवारी-को उनके लैटरपैड का उत्तर विस्तारपूर्वक लिख दिया जो कल डाक में छोड़ा जायेगा।
डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा जी को ३० [illegible] की [illegible] सूचना लिफाफे में लिखकर छोड़ा।

अंजन माँहि निरंजन रहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन । तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन।२७।
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् । अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्।२८।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः।८।

naite sṛtī pārtha jānanyogī muhyati kaścana ।
tasmātsarveṣu kāleṣu yogayukto bhavārjuna ॥ 27 ॥
vedeṣu yajñeṣu tapaḥsu caiva dāneṣu yatpuṇyaphalaṁ pradiṣṭam ।
atyeti tatsarvamidaṁ viditvā yogī paraṁ sthānamupaiti cādyam ॥ 28 ॥

सूर्यो० ५।१३, सूर्या० ६।५१

आज गोरखपुर के अत्यन्त श्रद्धालु
लब्ध प्रतिष्ठ- गौतमगोत्रीय श्री रामलक्षणराय - ग्राम- [illegible]-
पोस्ट बघाई और अनेकपरिवारोंके [illegible] [illegible]
से मठ में आये। ब्रह्मर्षि [illegible]" पुस्तक के लिये और ब्राह्मणवंश-
के लिये आये। मैंने उन्हें - ब्रह्मर्षि [illegible], ब्राह्मणवंश की
प्राची- [illegible], [illegible] निर्णय [illegible] दीपक
आदि पुस्तकें और [illegible] स्वामी सहजानंद सरस्वती
तथा स्वामी सहजानंद सरस्वती की जीवनी आदि दिया।
उन्होंने कुछ [illegible] दिये। बहुत श्रद्धा सम्मान प्रदर्शित किया।
[illegible] प्रसाद को [illegible] दिया - [illegible] के लिये [illegible]।
इसके पूर्व [illegible] पाण्डेय के यहां गये - जगदम्बी
संशोधन तथा प्रसाद की अंगूठी आदि के लिये। उन्होंने सत्कार [illegible]
किया। [illegible] उनकी धर्मपत्नी ने दिये। उन्हें [illegible]
में [illegible] होगा।
[illegible] किशोर - राजेश [illegible] के यहां से [illegible] दवा [illegible]
[illegible]। उन्होंने दवा के लिये [illegible] पर [illegible] लिये -
[illegible] किया गया।
आज मैंने सकलप्रसाद राय - [illegible] उनके भतीजा
के [illegible] कुछ [illegible] दान [illegible] के लिये [illegible]
[illegible] भेजा। [illegible]। श्री [illegible]
प्रसाद सिंह - [illegible] को भी एक [illegible] पत्र
लिखकर भेजा।

नम्रताको कोई नहीं मार सकता, कपासकी रूई तलवारसे नहीं कटती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे । ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् । १ ।
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् । प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् । २ ।

śrībhagavānuvāca

idaṁ tu te guhyatamaṁ pravakṣyāmyanasūyave |
jñānaṁ vijñānasahitaṁ yajjñātvā mokṣyase'śubhāt || 1 ||
rājavidyā rājaguhyaṁ pavitramidamuttamam |
pratyakṣāvagamaṁ dharmyaṁ susukhaṁ kartumavyayam || 2 ||

सूर्यो० ५।१४, सूर्या० ६।५१

आज · [illegible] राज [illegible],
एवं श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह - मुजफ्फरपुर और देवनारायण शर्मा -
मोहीउद्दीननगर को पत्र [illegible] [illegible]
के लिये दिया। [illegible]
[illegible]। कल ग्राम से श्री - रामनारायण शर्मा [illegible]
के [illegible] "[illegible]" [illegible]
[illegible]
[illegible] ! गायत्री [illegible] और
[illegible] - श्री [illegible] शर्मा को - [illegible]
को [illegible] पर [illegible] भेजा।
राजकीय पोस्टकार्ड पर [illegible] राज को प्रणाम [illegible]
के [illegible] लिखा।

आलस्य, अज्ञान और अश्रद्धा—ये तीनों महान् शत्रु हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप। अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि।३।
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना। मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः।४।

aśraddadhānāḥ puruṣā dharmasyāsya parantapa ।
aprāpya māṁ nivartante mṛtyusaṁsāravartmani ॥ 3 ॥
mayā tatamidaṁ sarvaṁ jagadavyaktamūrtinā ।
matsthāni sarvabhūtāni na cāhaṁ teṣvavasthitaḥ ॥ 4 ॥

सूर्यो० ५।१४, सूर्यां० ६।५१

आज आगमोक्त रूप के निर्माण में, [illegible]
द्वारा [illegible] भेजा। राजकोष पांडे, [illegible]
को भी इस हेतु [illegible] अपने-अपने यहां से
स्थान से लाने की सूचना भेजा।
श्री स्वामी [illegible] सरस्वती संन्यासी [illegible]
के स्वर्गवास [illegible] भी डा० [illegible]
को [illegible] शोक पत्र भेजा।
डा० योगीन्द्रनाथ लखनऊ से शंकर-काशी स्थान में आये।
उनका स्थानान्तरण वाराणसी-क्षेत्र के आशापुर में हो
जाने की पूरी आशा है।

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल ६, रविवार, 21 JULY

सूर्यो० ५।१५, सूर्यां० ६।५०

आज प्रातः हैदराबाद-परिवार के [illegible] पहुँचाने
गये। आज प्रातः मैं महादेव राम- चन्द्रिका कॉलोनी
के निवास पर गये। वहां से [illegible] सम्पन्न कराने के बारे में
भी [illegible] से बात हुई। उन्होंने शीघ्र [illegible]
[illegible] कार्य [illegible] करायेंगे [illegible]
कहे। सायंकाल श्री शिवमुनि राम आये और गये।
श्री चन्द्रमौलि तिवारी भी आये-पांच [illegible]
[illegible] सायंकाल [illegible] श्री [illegible] शर्मा [illegible]
[illegible] ५०० रुपये दे गये। सायंकाल [illegible]
[illegible] साढ़े [illegible] । आज [illegible]
[illegible] श्री [illegible] राय - [illegible]
[illegible] [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः।५।
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्। तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय।६।

na ca matsthāni bhūtāni paśya me yogamaiśvaram ।
bhūtabhṛnna ca bhūtastho mamātmā bhūtabhāvanaḥ ॥5॥
yathākāśasthito nityaṁ vāyuḥ sarvatrago mahān ।
tathā sarvāṇi bhūtāni matsthānītyupadhāraya ॥6॥

आज कुछ दिनों के बाद श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मा सूर्यो० ५।१५, सूर्यां० ६।५०
सायंकाल मठ में आये- [illegible] निर्माण कार्य के सहयोग [illegible] १०० रुपये
[illegible] लिये दे रहे थे। मैंने नहीं स्वीकार किया। फिर [illegible] लेंगे।
सायंकाल श्री [illegible] राय [illegible] का आना हुआ। [illegible]
श्रद्धालु और समाजसेवा [illegible] के लिये समर्पित [illegible] हैं।
[illegible] वापस लौटकर [illegible] लौटे हैं।

ज्ञान मुक्त करता है, पर ज्ञानका अभिमान नरकोंमें ले जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः । भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ।८।

sarvabhūtāni kaunteya prakṛtiṁ yānti māmikām |
kalpakṣaye punastāni kalpādau visṛjāmyaham || 7 ||
prakṛtiṁ svāmavaṣṭabhya visṛjāmi punaḥ punaḥ |
bhūtagrāmamimaṁ kṛtsnamavaśaṁ prakṛtervaśāt || 8 ||

आज १० बजे महर्षि देवरात जी आये। सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९
उनके कहने के बाद उधमसिंहनगर खटीमा के [illegible]
सब लोग सिंह [illegible] पहले दो मैं
के लिया [illegible] हुआ। कलवारियों में - [illegible] सिंह के [illegible]
से वे बाजार के मजदूरों के घर लेकिन [illegible]
[illegible] बाद में दोनों
चले गये। महर्षि देवरात जी - [illegible] दो हजार
रुपये लोहे के रूप में दिये गये। इस प्रकार उनके [illegible]
मन में [illegible] है।
इसके बाद प्रमोदकुमार [illegible] गाजीपुर गये [illegible]
को दस बजे लौटे।
[illegible] सारी [illegible] उनसे [illegible]
और लोहे की [illegible] वे [illegible]
[illegible] देंगे।
[illegible] लोहे की आवश्यकता का [illegible]
पहुँचा देंगे।

स्वार्थ जीवनका भयानक मानसिक रोग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय। उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु। ९।
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते। १०।

na ca māṁ tāni karmāṇi nibadhnanti dhanañjaya ।
udāsīnavadāsīnamasaktaṁ teṣu karmasu ॥ 9 ॥
mayādhyakṣeṇa prakṛtiḥ sūyate sacarācaram ।
hetunānena kaunteya jagadviparivartate ॥ 10 ॥

आज डेढ़ [illegible] के बाद ग्यारह दिन में
सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९
श्री [illegible] [illegible] दिन [illegible]
दिनों के बाद - काशी लौटे - [illegible] में गये थे।

ग्राम देउरियाँ - भोजपुर के शिष्यों की पूजा —

①	श्री वंशरोपन सिंह	121/=	१२१ रु० [illegible]
②	" हंसा "	021/=	२१ रु०
③	" रूपनारायण "	051/=	५१ रु०
④	" गुप्तेश्वर "	45/=	पैंतालिस रु०
⑤	" रामयतन "	20/=	बीस रुपये
⑥	" शिवलखन "	100/=	[illegible] शर्मा
⑦	" रामसिंह "	40/=	चालीस रुपये
⑧	" रमता "	150/=	१५० श्री रमता शर्मा
⑨	" [illegible] "	11/=	ग्यारह
⑩	" रामाश्रय "	20/=	[illegible] रुपये
⑪	" जयप्रकाश "	11/=	ग्यारह
⑫	" केदार "	10/=	दस
		600/=	कुल ६०० [illegible]

तथा 5 बोरी चावल (लगभग पौने दो कुन्तल) प्राप्त हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।११।
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः। राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः।१२।

avajānanti māṁ mūḍhā mānuṣīṁ tanumāśritam |
paraṁ bhāvamajānanto mama bhūtamaheśvaram || 11 ||
moghāśā moghakarmāṇo moghajñānā vicetasaḥ |
rākṣasīmāsurīṁ caiva prakṛtiṁ mohinīṁ śritāḥ || 12 ||

सूर्यो० ५।१७, सूर्यो० ६।४८

आज प्रातः स्वा० हरिदर्शनानंद - २० दिनों के
बाद मुझसे मिलेंगे। - उन्होंने बदजीवन [illegible] नहीं की छूटी है आवश्यक
है। कुछ भी होगा जो जैसा व्यवहार रखेगा, तदनुसार उसका
परिणाम प्राप्त करेगा। समाज को बदलना, बड़ा ठीक होता है।
हां यह हाथ लगे रहते हैं, और जो तीव्र आनंद संयोग जुटाते हैं।
वे गुरुभक्ति की पुनः स्थापना करेंगे।

न्याय और प्रेम—दोनों उन्नतिके साधन हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः। भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्। १३।
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः। नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते। १४।

mahātmānastu māṁ pārtha daivīṁ prakṛtimāśritāḥ ।
bhajantyananyamanaso jñātvā bhūtādimavyayam ॥ 13 ॥
satataṁ kīrtayanto māṁ yatantaśca dṛḍhavratāḥ ।
namasyantaśca māṁ bhaktyā nityayuktā upāsate ॥ 14 ॥

हरिशयनी एकादशीव्रत सूर्यो० ५ । १७, सूर्या० ६ । ४८

आज बादाम तथा छुहारा आदि इकट्ठा किये हैं, और।
आज बृजकिशोर ओंकारपुर के आने का पता चला।
पर वे मिले नहीं। कहीं बाहर गये हैं।
आज देवीसिंह तथा बीबी को लेने रिक्शा भेजे गये।
आज हरिहरपुर के कवि एवं प्राध्यापक - विश्वनाथ राय अमलांजलि
के बदले [illegible] पत्रिका द्वारा प्रेषित [illegible] पत्रों के
विस्तृत उत्तर विवरण - फोटो तथा 'हउआ' आदि की
समीक्षा सहित सभी सामग्री - प्रमोदकुमार के आगे कर दिया।
अनुकूल है गुरु जी को उनके माध्यम से अंचल भी भेज दिया
गया। वे स्वामी परमानंद - पूर्णानंद तथा संतों में कुछ लिख रहे हैं।

× × ×

" उस काल का प्रभाव। जिसके बारे में कोई नहीं जानता
और जिसके समक्ष मृत्यु भी पराजित है! एक कवि ने कहा है:—

''

प्रेम भगवान्‌में अपनापन होनेसे मिलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्। १५।
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्। मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्। १६।

jñānayajñena cāpyanye yajanto māmupāsate |
ekatvena pṛthaktvena bahudhā viśvatomukham || 15 ||
ahaṁ kraturahaṁ yajñaḥ svadhāhamahamauṣadham |
mantro'hamahamevājyamahamagniraham hutam || 16 ||

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।४७

[illegible]

शुद्ध आषाढ़ शुक्ल १३, रविवार, 28 JULY

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।४७

प्रदोषव्रत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः। वेद्यं पवित्रमोङ्कार ऋक्साम यजुरेव च।१७।
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्।१८।

pitāhamasya jagato mātā dhātā pitāmahaḥ ।
vedyaṁ pavitramoṅkāra ṛksāma yajureva ca ॥ 17 ॥
gatirbhartā prabhuḥ sākṣī nivāsaḥ śaraṇaṁ suhṛt ।
prabhavaḥ pralayaḥ sthānaṁ nidhānaṁ bījamavyayam ॥ 18 ॥

व्रत-पूर्णिमा सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।४६

आज व्रतकी पूर्णिमा थी। [illegible] आदि।
[illegible] लिखे। [illegible]
हुई। ५० रुपये पूजा के लोग दे गये।

संसारकी सत्ता बाधक नहीं है, प्रत्युत उसकी महत्ताका असर बाधक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च । अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ।१९।
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते । ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान् ।२०।

tapāmyahamahaṁ varṣaṁ nigṛhṇāmyutsṛjāmi ca |
amṛtaṁ caiva mṛtyuśca sadasaccāhamarjuna || 19 ||
traividyā māṁ somapāḥ pūtapāpā yajñairiṣṭvā svargatiṁ prārthayante |
te puṇyamāsādya surendralokamaśnanti divyāndivi devabhogān || 20 ||

गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा — सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।४५

आज गुरुपूर्णिमा पूजा प्रातः से [illegible] शुरू
के [illegible] शर्मा आगरा के लोग - सहसराय के [illegible]
भी आये। शिवनाथ [illegible] कलकत्ते भी आये थे।
उन्होंने दो [illegible]
[illegible]
[illegible] डा० योगीन्द्र [illegible] आदि
[illegible]
[illegible]
[illegible] आये। [illegible]
हुए। [illegible]
[illegible] १५०० [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] बड़े ही लोग। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] सुरेन्द्र [illegible]
[illegible]
[illegible]

संत तीर्थोंको भी तीर्थ बनाते हैं—'तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति । एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते ।२१।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।२२।

te tam̐ bhuktvā svargalokam̐ viśālam̐ kṣīṇe puṇye martyalokam̐ viśanti |
evam̐ trayīdharmamanuprapannā gatāgatam̐ kāmakāmā labhante || 21 ||
ananyāścintayanto mām̐ ye janāḥ paryupāsate |
teṣām̐ nityābhiyuktānām̐ yogakṣemam̐ vahāmyaham || 22 ||

आज प्रातः ८ बजे आरती [illegible] पूजा की गयी। (सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।४५
[illegible] बाजार गया। [illegible]
आगी। [illegible] बैंक [illegible] में गया हुआ। [illegible]
[illegible]
[illegible] खड़गधारी शर्मा जी [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] को खड़गधारी जी [illegible]
[illegible]
खड़गधारी शर्मा से [illegible] में [illegible]
[illegible]
[illegible]
उन्हें विभिन्न ग्रंथों की याद दिलाया।

काम ज्ञानको हरण करके पापमें प्रवृत्त करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः । तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् । २३ ।
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च । न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते । २४ ।

ye'pyanyadevatā bhaktā yajante śraddhayānvitāḥ ।
te'pi māmeva kaunteya yajantyavidhipūrvakam ॥ 23 ॥
ahaṁ hi sarvayajñānāṁ bhoktā ca prabhureva ca ।
na tu māmabhijānanti tattvenātaścyavanti te ॥ 24 ॥

सूर्यो० ५ । २०, सूर्या० ६ । ४४

आज २५ अगस्त की [illegible] के
लिये, [illegible] सदस्यों को पत्र [illegible] । [illegible]
श्री [illegible] को [illegible] । [illegible]
[illegible] सिमरी को [illegible] । [illegible]
श्री [illegible] शर्मा को [illegible] में [illegible]
[illegible] । सायंकाल [illegible] के [illegible]
होता रहा । [illegible]
[illegible] कॉलेज [illegible] में [illegible] हैं ।
श्री [illegible] का [illegible] रहा ।
[illegible] को यहाँ [illegible]
[illegible] । [illegible] जी [illegible] सायंकाल
[illegible] में [illegible] मिले थे ।

आवश्यकतासे अधिक धनसंग्रहका मोह त्याग दीजिये ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः । भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् । २५ ।
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति । तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः । २६ ।

yānti devavratā devānpitṝnyānti pitṛvratāḥ |
bhūtāni yānti bhūtejyā yānti madyājino'pi mām || 25 ||
patraṁ puṣpaṁ phalaṁ toyaṁ yo me bhaktyā prayacchati |
tadahaṁ bhaktyupahṛtamaśnāmi prayatātmanaḥ || 26 ||

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत सूर्यो० ५ । २१, सूर्या० ६ । ४३

आज श्री आनंदबहादुर सिंह-मदनी "प्रसिद्धपत्रकार" ने [illegible] निर्माण कार्य के लिये [illegible] से "चेक" द्वारा दिया।
आज श्री [illegible] राय को आये, डा० [illegible] शर्मा-शेरपुर श्री रामश्रेया पांडे-सिमरी और [illegible] के श्री [illegible] यह मैं [illegible] गये। [illegible] तीनों सज्जनों को [illegible] के लिये सूचना और [illegible] को [illegible] -
आज श्री [illegible] राय के संकेत के अनुसार उनके माध्यम से मिले आर्थिक सहयोग के दो सजातीय दाताओं को लंबे पत्र - लिखे गये।
श्री [illegible]-औरंगाबाद, ग्राम- [illegible], पो० [illegible] को १००० के चेक के लिये। इसी डा० राम [illegible] [illegible] शर्मा को लिखे। ग्राम-पो० - श्रमवीर नगर (मोदा) जिला-औरंगाबाद के उनको चेक जाये।
[illegible] है - बरजा - [illegible] के आसपास गाँव के सजातीय श्री नवीन कुमार सिंह को भी धन्यवाद एवं प्रेरणा का पत्र लिखा गया जो संप्रति सरकारी रेलवे सेवा में रेलवे मंडल प्रबंधक - [illegible] में "पद अनुभाग" (कार्मिक अनुभाग) में प्रधान लिपिक पद पर कार्य करते हैं तथा दानापुर में [illegible] एवं [illegible] के कार्य में संलग्न होते हैं। [illegible] हैं।
महात्मापुर के अपने शिष्य श्री [illegible] को २५॥६॥।
आगे मिश्र स्ट्रीट, कलकत्ता "मगाडु" के ठिकाने पर बहुत दिनों के बाद विस्तृत प्रेम पत्र लिख भेजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् । २७ ।
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः । सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि । २८ ।

yatkaroṣi yadaśnāsi yajjuhoṣi dadāsi yat |
yattapasyasi kaunteya tatkuruṣva madarpaṇam || 27 ||
śubhāśubhaphalairevaṁ mokṣyase karmabandhanaiḥ |
sannyāsayogayuktātmā vimukto māmupaiṣyasi || 28 ||

सूर्यो० ५ । २१, सूर्या० ६ । ४३

आज प्रातः [illegible] प्रसाद राय - [illegible] मिश्र [illegible] और [illegible] - [illegible] आदि मिले।

आज [illegible] के श्री विनोद कुमार (सैरमपुर) ने; मठ के सत्संग भवन के निर्माण कार्य में १००१ एक हजार एक [illegible] श्री शिवमुनि [illegible] प्र० [illegible] मेरे [illegible] को [illegible] देने के लिये, साधुवाद और [illegible] प्रोत्साहक [illegible]।

श्रावण कृष्ण ५, रविवार, 4 AUG.

सूर्यो० ५ । २२, सूर्या० ६ । ४२

आज [illegible] बजे [illegible] कमलाकान्त पाण्डेय ज्यौतिषाचार्य, पं० [illegible] शर्मा एवं उनके छोटे भाई [illegible] के साथ - रामपुरा श्री स्वदेश [illegible] के यहाँ "सत्यनारायण भगवान" की कथा के क्रम में पहुँचे। विधिवत् [illegible] कथा एवं [illegible] होने में दो घंटे लगे। [illegible] बजे कार्य संपन्न हुआ। प्रसाद [illegible] वहाँ से [illegible] पैदल ही आना पड़ा। [illegible] श्री शिवमुनि [illegible] प्रतीक्षा [illegible] थे। श्री [illegible] नारायण सिंह [illegible] [illegible] के निमित्त आये थे। [illegible] ११ [illegible] विश्व विद्यालय [illegible] जाना है [illegible]।
[illegible] से [illegible] - पचास [illegible], [illegible] मिलेगा। [illegible] भी नहीं लोगे - [illegible] लायेंगे।
श्री [illegible] सिंह [illegible] के [illegible] गये। [illegible] के यहाँ [illegible] से [illegible] मिला [illegible]

:x: [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः। ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्। २९।
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः। ३०।

samo'haṁ sarvabhūteṣu na me dveṣyo'sti na priyaḥ ।
ye bhajanti tu māṁ bhaktyā mayi te teṣu cāpyaham ॥ 29 ॥
api cetsudurācāro bhajate māmananyabhāk ।
sādhureva sa mantavyaḥ samyagvyavasito hi saḥ ॥ 30 ॥

आज "दवा" के लिये पत्र [illegible] सूर्यो० ५।२३, सूर्या० ६।४१
आदि को "ब्राह्मण" को देकर सामान मंगा दिये गये।
मिश्री लाल जी दास को लिखे १ पत्र में "नारायण" को दिया। मिश्री लाल जी दास
कृपा। दोपहर में श्री भजनाथ-विश्वनाथ पांडे-[illegible]। [illegible]
आये स्वर्ग [illegible] [illegible] के लिये [illegible]
व [illegible] एकला [illegible] में भी गई।
आज [illegible] का [illegible] हुआ। [illegible]
[illegible] आया। [illegible] किया गया। [illegible]
[illegible] :— ① 22 M.M. — 288·100 - 3 बंडल
② 8 M.M. — 525 - 700 6 - बंडल
③ 12 MM — × 300 - 9 - बंडल
[illegible] 854 - 100 " — 10 बंडल
रखी गई। [illegible]
श्री भजनाथ-विश्वनाथ आदि गये। श्रद्धापूर्वक २० [illegible] गये।

दानका अर्थ है ऐश्वर्यका त्याग अर्थात् ममताका त्याग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति। ३१।
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्। ३२।

kṣipraṁ bhavati dharmātmā śaśvacchāntiṁ nigacchati ।
kaunteya pratijānīhi na me bhaktaḥ praṇaśyati ॥ 31 ॥
māṁ hi pārtha vyapāśritya ye'pi syuḥ pāpayonayaḥ ।
striyo vaiśyāstathā śūdrāste'pi yānti parāṁ gatim ॥ 32 ॥

सूर्यो० ५ । २३, सूर्या० ६ । ४१

आज [illegible] निर्माण में विशेष तत्व [illegible]
१० [illegible] बजे [illegible] था [illegible]।
उसके पूर्व भी [illegible] के [illegible] और प्रभारी अभियंता
आये। निर्माण के संबंध में आवश्यक विचार [illegible] होता रहा।
उसी समय [illegible] आये!
[illegible] और भूमिका [illegible]
दोष थे। [illegible] उन्हें प्रवृत्तमार्गी एवं निवृत्तमार्गी - दोनों के प्राचीन काल से
चले आ रहे ब्राह्मणों को ऐतिहासिक पौराणिक [illegible] बताते हुए [illegible]
[illegible] निवृत्तिमार्गी ब्राह्मण सिद्ध किया और उन्हें [illegible] फटकारा।
आज [illegible] से [illegible] थी।
[illegible]
"[illegible]" का [illegible] - वह [illegible]
[illegible] जायेगा।

विनोदपर हमेशा विवेकका अंकुश होना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा । अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् । ३३ ।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु । मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः । ३४ ।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः । ९ ।

kiṁ punarbrāhmaṇāḥ puṇyā bhaktā rājarṣayastathā |
anityamasukhaṁ lokamimaṁ prāpya bhajasva mām || 33 ||
manmanā bhava madbhakto madyājī māṁ namaskuru |
māmevaiṣyasi yuktvaivamātmānaṁ matparāyaṇaḥ || 34 ||

आज [illegible] सूर्यो० ५ । २४, सूर्या० ६ । ४०

[illegible]

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः। यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया।१।
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।२।

śrībhagavānuvāca

bhūya eva mahābāho śṛṇu me paramaṁ vacaḥ ।
yatte'haṁ prīyamāṇāya vakṣyāmi hitakāmyayā ॥1॥
na me viduḥ suragaṇāḥ prabhavaṁ na maharṣayaḥ ।
ahamādirhi devānāṁ maharṣīṇāṁ ca sarvaśaḥ ॥2॥

सूर्यो० ५। २४, सूर्यो० ६। ४०

आज भी सत्संगभवन की सेन्टरिंग [illegible] कार्य होता रहा। पूरा नहीं हो सका। कल [illegible] होगी।
घनश्याम सही राय [illegible] सिंह के इंजीनियर [illegible] आये सेलेक्ट करे। सभी लोग के निर्देश पर और लोहा मंगाकर - सेन्टरिंग में विशेष लोहा - [illegible] स्थान पर किया गया। [illegible] वाली [illegible], [illegible] कार्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् । असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते । ३ ।
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः । सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च । ४ ।

yo māmajamanādiṁ ca vetti lokamaheśvaram I
asammūḍhaḥ sa martyeṣu sarvapāpaiḥ pramucyate II 3 II
buddhirjñānamasammohaḥ kṣamā satyaṁ damaḥ śamaḥ I
sukhaṁ duḥkhaṁ bhavo'bhāvo bhayaṁ cābhayameva ca II 4 II

कामदा एकादशीव्रत (स्मार्त) सूर्यो० ५ । २५, सूर्या० ६ । ३९

आज आसाम मजदूरों के कुछ के लिए - दलाई आ गयी।
किन्तु वकीलों ने मना कर दिया है काम पूरा नहीं हो सका। ५ बजे तक
के बाद वकील लोगों दोनों कमिश्नरों ने [illegible] कमी
में कुछ [illegible] भावी और आया। १० ।। बजे रात
तक पूजा पाठ तो हुआ। दिन में भी साढ़े - ग्यारह बजे
तक [illegible] होता रहा। [illegible] जी दिल खोल कर श्रद्धालु और
समाजप्रेमी व्यक्ति हैं। उनकी विनयशीलता भी [illegible] है।
वे इग्यारह [illegible] - कमिश्नर को, मजदूरों को देने के
लिये दे दिया। यहाँ के मजदूरों ने शान्ति [illegible] वकीलों के बीच
आ कर [illegible] बैठ गये। ५०० रुपये प्रसाद चढ़ाकर
पूजा [illegible] विभाग में लौटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः । भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ।५।
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ।६।

ahiṁsā samatā tuṣṭistapo dānaṁ yaśo'yaśaḥ |
bhavanti bhāvā bhūtānāṁ matta eva pṛthagvidhāḥ ||5||
maharṣayaḥ sapta pūrve catvāro manavastathā |
madbhāvā mānasā jātā yeṣāṁ loka imāḥ prajāḥ ||6||

कामदा एकादशीव्रत (वैष्णव) सूर्यो० ५ । २५, सूर्या० ६ । ३८

आज भी ... के दिन ... की ... की गल ... में काम होता रहा ... काम पूरा हो गया।
मैं ... हूँ ... कि ... इतना बड़ा काम ... से ... पूरा हुआ। ... भी जोड़ी गई।
... रहा ... काम ...

श्रावण कृष्ण १२, रविवार, 11 AUG.

सूर्यो० ५ । २६, सूर्या० ६ । ३७

प्रदोषव्रत

आज ... से ... किया गया। तथा ... से ... किया ... मजदूरों से ... गिट्टी-बालू ... का ... हुआ। २० ... देवे ...
आज ... काम ... के लिये ... किये।
... सीमेंट ... काम ... २२,००० बाइस हजार ... हैं। ... गिट्टी-बालू ... मजदूरी ... १४००० चौदह हजार ... दिये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः। सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः।७।
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।८।

etāṁ vibhūtiṁ yogaṁ ca mama yo vetti tattvataḥ ।
so'vikampena yogena yujyate nātra saṁśayaḥ ॥ 7 ॥
ahaṁ sarvasya prabhavo mattaḥ sarvaṁ pravartate ।
iti matvā bhajante māṁ budhā bhāvasamanvitāḥ ॥ 8 ॥

सूर्यो० ५ । २६, सूर्या० ६ । ३६

आज हनुमानघाट स्नान से डॉ० ठेंगड़ी जी
की मृत्यु - क्रियाक्रम को देखने के लिए
इलाहाबाद गये। श्री [illegible] राम - [illegible] प्रयाग से
लौटकर आये।

इच्छाएँ शान्त करनेसे शान्त होंगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च। ९।
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।१०।

maccittā madgataprāṇā bodhayantaḥ parasparam |
kathayantaśca māṁ nityaṁ tuṣyanti ca ramanti ca || 9 ||
teṣāṁ satatayuktānāṁ bhajatāṁ prītipūrvakam |
dadāmi buddhiyogaṁ taṁ yena māmupayānti te || 10 ||

सूर्यो० ५ । ३७, सूर्या० ६ । ३५

मिदिलेशे [illegible]। दलदल पानी पड़ रहा है।
दो मजदूर चंदौली के [illegible] दिखाते हैं - वहीं पानी डालते हैं।
आखिर पानी डालने के [illegible] मजदूरी देनी होगी।
उन मजदूरों ने बाहर पड़ी मिट्टी-बालू [illegible] रुपये
मजदूरी देनी पड़ेगी।
सेनापति श्री [illegible] राय श्री आदि [illegible] आगे बढ़
गये। उनका स्वागत [illegible] जिले में [illegible]
[illegible] है। [illegible] है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा। असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे।१३।
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव। न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः।१४।

āhustvāmṛṣayaḥ sarve devarṣirnāradastathā |
asito devalo vyāsaḥ svayaṁ caiva bravīṣi me || 13 ||
sarvametadṛtaṁ manye yanmāṁ vadasi keśava |
na hi te bhagavanvyaktiṁ vidurdevā na dānavāḥ || 14 ||

स्वतन्त्रतादिवस   सूर्यो० ५। २७, सूर्या० ६। ३३

आज डा० चन्द्रशेखर मिश्र, शांतिकुञ्ज से आये पत्राधिकारी श्री त्रिभुवन नाथ शर्मा को पत्र तथा ओंकारनाथ चौधरी को रजिस्टर पत्र लिखा गया।
~~[illegible]~~ आज भी पूर्ववत् पानी पड़ा। आंगन के उत्तरी पीछे पटनल में पड़ गिरु - मा दिलगोड़ दीयमड़ी। उसे सकुशलता ही बाँधके - पटनल इत्यादि मकान साफ हो गया। साफ हुई है।

अनासक्तिसे ही प्राणी बन्धनसे मुक्ति पा सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते।१५।
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।१६।

svayamevātmanātmānaṁ vettha tvaṁ puruṣottama |
bhūtabhāvana bhūteśa devadeva jagatpate || 15 ||
vaktumarhasyaśeṣeṇa divyā hyātmavibhūtayaḥ |
yābhirvibhūtibhirlokānimāṁstvaṁ vyāpya tiṣṭhasi || 16 ||

सूर्यो० ५।२८, सूर्या० ६।३२

आज [illegible] -अरविन्द [illegible]
[illegible]
मजबूती [illegible]
[illegible] आज [illegible]
हो जाता है। [illegible] इस प्रकार
हो रहा है। [illegible] उल्टी होती है।
[illegible] प्रसाद राय [illegible]
[illegible]
हुआ [illegible] है। [illegible]
स्वामी विद्यानंद गिरि जी [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible]
[illegible] में [illegible] और [illegible]
है। [illegible] नहीं है। [illegible]
[illegible] है।

नाम-चिन्तनसे जन्म, जरा, भय और व्याधि छूट जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन्। केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया। १७।
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन। भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्। १८।

kathaṁ vidyāmahaṁ yogiṁstvāṁ sadā paricintayan |
keṣu keṣu ca bhāveṣu cintyo'si bhagavanmayā || 17 ||
vistareṇātmano yogaṁ vibhūtiṁ ca janārdana |
bhūyaḥ kathaya tṛptirhi śṛṇvato nāsti me'mṛtam || 18 ||

सूर्यो० ५।२८, सूर्या० ६।३२

आज · प्रमोद कुमार अवस्था में दौड़ते घूमते रहे। किन्तु कोई खास कार्यक्रम नहीं बन सका।
श्री लोकेन्द्र [illegible] प्रसाद राय [illegible] (सात) आये। उन्होंने [illegible] पर निवेदन किया, जो [illegible] उन्होंने दिया है। [illegible] जायेंगे। उनके पिता अस्वस्थ हैं।
[illegible] त्रिपाठी जी गोरखपुर वाले आये। उन्होंने मठ के [illegible] कार्य की समीक्षा की और [illegible] बताया।
बहुत दिनों के बाद श्री कल्लू [illegible] आये। उन्हें [illegible] श्री [illegible] के साथ [illegible] [illegible] उन्हें उनके [illegible] में स [illegible] देने के लिए [illegible] का [illegible]। [illegible] [illegible] बाद देकर [illegible]
[illegible] [illegible]

श्रावण शुक्ल ४, रविवार, 18 AUG.
सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।३१

[illegible] [illegible]

आज प्रातः श्री [illegible] नारायण राय [illegible] आये [illegible] [illegible] [illegible] देव राय [illegible] [illegible] [illegible] के साथ गये हैं। [illegible] [illegible] गये। [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]।

श्री सुरेश [illegible] तिवारी [illegible] आये। [illegible] उनसे [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] की बात [illegible]। [illegible] में [illegible] देने की बात भी मैंने [illegible] में कही। [illegible] पानी टंकी के पास से [illegible] और [illegible] [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे। १९।
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः। अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च। २०।

śrībhagavānuvāca

hanta te kathayiṣyāmi divyā hyātmavibhūtayaḥ I
prādhānyataḥ kuruśreṣṭha nāstyanto vistarasya me II 19 II
ahamātmā guḍākeśa sarvabhūtāśayasthitaḥ I
ahamādiśca madhyaṁ ca bhūtānāmanta eva ca II 20 II

नागपञ्चमी · सूर्यो० ५। २९, सूर्या० ६। ३०

आज प्रमोद भोटमें [illegible] नारायण पहुँच गये थे।
वर्षा भी होती रही - [illegible]। तीसरा सोमवार था।
कुछ पढ़ता लिखता रहा।

नित्य नियमपूर्वक सत्सङ्ग करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्। मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी।२१।
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः। इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना।२२।

ādityānāmahaṁ viṣṇurjyotiṣāṁ raviraṁśumān ।
marīcirmarutāmasmi nakṣatrāṇāmahaṁ śaśī ॥ 21 ॥
vedānāṁ sāmavedo'smi devānāmasmi vāsavaḥ ।
indriyāṇāṁ manaścāsmi bhūtānāmasmi cetanā ॥ 22 ॥

आज दुर्ग सेवके बनी - सभीने भोजन किया - सूर्यो० ५।३०, सूर्या० ६।२९
शान्तनु प्रमोद भी आगये। नारायण भी आये।
मंगलचंद से प्रमोद की [illegible] सहित आगी।

आज सहसा गुलाब शर्मी [illegible] उनके पौत्र के साथ
आ पहुँचे। उनकी मानव संसाधन विभाग के प्रकाशित
पद की [illegible] नौकरी के क्रममें।
संभवतः [illegible] के कोई राज विभाग के कार्यालय
में [illegible] [illegible] दे लिये हैं।
उन्होंने एक [illegible] दूजा के दिये।

डाक विभाग इलाहाबाद से [illegible] १०००
रुपये आया। १०० रुपये उधार

नाशवान् सुखका सर्वथा त्याग करनेसे अविनाशी सुखकी प्राप्ति होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्। वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्। २३।
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः। २४।

rudrāṇāṁ śaṅkaraścāsmi vitteśo yakṣarakṣasām ।
vasūnāṁ pāvakaścāsmi meruḥ śikhariṇāmaham ॥ 23 ॥
purodhasāṁ ca mukhyaṁ māṁ viddhi pārtha bṛhaspatim ।
senānīnāmahaṁ skandaḥ sarasāmasmi sāgaraḥ ॥ 24 ॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदास-जयन्ती   सूर्यो० ५।३०, सूर्या० ६।२८

आज इरशाद मेजर 'सिमटी - रामकोशपुरम - दिल्ली टेली
के साथ आये। [illegible] आई [illegible] हुए है। साथ ही बीच
और [illegible] [illegible] पत्र लेकर [illegible] कि
[illegible] नहीं आ सकते कोई [illegible] है।
मैंने तत्काल उन्हें पत्र लिखवाया मेजर [illegible] मेजर
के उद्देश्य से [illegible] है। उन्हें फलदायी और
प्रेरित प्रभावित करने के लिये भी कुछ लिखा।

आज पाण्डेय जी प्रमोद [illegible] और मैनेजमेंट की फीस
के [illegible] किया। सब्जी [illegible] के [illegible] को [illegible]
आया। [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]।

याद रखो—भगवान्‌का प्रत्येक विधान आपके परम हितके लिये है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्। यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः। २५।
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः। गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः। २६।

maharṣīṇāṁ bhṛgurahaṁ girāmasmyekamakṣaram |
yajñānāṁ japayajño'smi sthāvarāṇāṁ himālayaḥ || 25 ||
aśvatthaḥ sarvavṛkṣāṇāṁ devarṣīṇāṁ ca nāradaḥ |
gandharvāṇāṁ citrarathaḥ siddhānāṁ kapilo muniḥ || 26 ||

कल से ही सर्दी जुकाम से गति काट रहे हैं। सूर्यो० ५।३१, सूर्या० ६।२७

डा० त्रिपाठी कल आये थे दवा दिया था। वह दवा चल रही थी - पर हुए आराम के होने से. डा० पी० राजेन्द्र सिंह बुधवा (का पामना-) के अन्दर वरके, दीक्षा आयान चल रही है।

आज रात को भोजन किया पर पाचन शुद्ध नहीं हो सका।

रात में मनोज सिंह जी का टेलीफोन राजकुमार सिंह के बारे। वह बड़ा धूर्त और तिकड़मी है।

आज कहा कि रचना को संन्यास भूल गयी. पानी का रहना चाहिये। मनोज सिंह कह रहे हो सकता। उनको पढ़वाना पसंद नहीं आती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्। २७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्। प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः। २८।

uccaiḥśravasamaśvānāṁ viddhi māmamṛtodbhavam ।
airāvataṁ gajendrāṇāṁ narāṇāṁ ca narādhipam ॥ 27 ॥
āyudhānāmahaṁ vajraṁ dhenūnāmasmi kāmadhuk ।
prajanaścāsmi kandarpaḥ sarpāṇāmasmi vāsukiḥ ॥ 28 ॥

आज प्रातः श्री सत्य० सिंहकी दवा आयी। सूर्यो० ५।३१, सूर्या० ६।२६
भोजन नहीं किया - दोनों दिनतक।
आज साईंजी घनश्याम साही प्रातः आये - उनसे प्रकाशित
पारमार्थिक कार्यों के बनाने की योजना स्कीमें आदिके
संबंधमें बातें हुई। उनकी भी राय है कि स्वदिवस
खुलना चाहिये।
आज मुजफ्फरपुर - निवासी प्रसाद सिंहके, मातृभूमि कुण्डके
संबंधमें पत्र लिखा। डॉ० राजनारायण शर्मा - श्रीमद्-
भगवद्गीता - समग्र मैं अपना लिखा। पण्डित के शिष्य
श्री नारायण भी श्रीमान् मेरा कोपना लिखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्। पितृणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्। २९।
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्। मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्। ३०।

anantaścāsmi nāgānāṁ varuṇo yādasāmaham ।
pitṛīṇāmaryamā cāsmi yamaḥ saṁyamatāmaham ॥ 29 ॥
prahlādaścāsmi daityānāṁ kālaḥ kalayatāmaham ।
mṛgāṇāṁ ca mṛgendro'haṁ vainateyaśca pakṣiṇām ॥ 30 ॥

सूर्यो० ५ । ३२, सूर्या० ६ । २५

आज चौकी से भी डा० ... आए हैं।
डा० ... शर्मा ... के ... हैं। वहीं हैं। ... कल बैठक में आयेंगे।
तबियत ठीक नहीं थी। ... एकादशी व्रत ... किया,
... को सूचना दी गई। ... व कल भी ...
... भी ... प्रा० ... -प्राध्यापक,
... बोलते रहे। ... एक
... देखने आए लौट गये। ... पत्नी भी
थीं। ... भी आ पहुँचे हैं। अकेले हैं।

श्रावण शुक्ल ११, रविवार, 25 AUG.

सूर्यो० ५ । ३२, सूर्या० ६ । २४

पुत्रदा एकादशीव्रत

आज ... समिति की ... बैठक हुई। ... सिंह,
... शर्मा ... शर्मा -
... आदि ... सिंह ... आदि ...
... महादेव ... सिंह ... बहादुर सिंह -
भी ... आदि लोग आये।
...
... देखे। ... भी
बैठक में ... भाग लेते रहे। ... का प्रोग्राम
... बनाने की योजना ... गई।
... सिंह ... तथा ... आये।
... भी आये। बैठक अच्छी रही।
... तथा
... भी आये।
... बजे ...
... लौट ... के ...
...
...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्। झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी। ३१।
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन। अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम्। ३२।

pavanaḥ pavatāmasmi rāmaḥ śastrabhṛtāmaham ।
jhaṣāṇāṁ makaraścāsmi srotasāmasmi jāhnavī ॥ 31 ॥
sargāṇāmādirantaśca madhyaṁ caivāhamarjuna ।
adhyātmavidyā vidyānāṁ vādaḥ pravadatāmaham ॥ 32 ॥

सोमप्रदोष — सूर्यो० ५। ३३, सूर्या० ६। २३

आज प्रातः काशी आये [illegible]। रमेश पाण्डेय इंजी. [illegible]
[illegible]। [illegible]। [illegible]।
आज [illegible] के [illegible] के पुत्र [illegible] भोजन [illegible] के आगे
थे - [illegible]। रात में देर से पं० [illegible] शर्मा [illegible]
आये थे। [illegible] प्रतिमा को रुद्राभिषेक करने का निश्चय हुआ।
आज मैंने श्रीकृष्ण [illegible], राजवेन्द्र [illegible], तथा [illegible] - राम [illegible]
और [illegible] शर्मा और [illegible] रामगोपाल [illegible]
आदि को पत्र लिखा। कल [illegible] में [illegible]।
[illegible] श्रीकृष्ण [illegible] और राजवेन्द्र को तथा शेष पोस्टकार्ड
लिखे गये। आज अपराह्न सायंकाल [illegible] शर्मा - मिलने आये।
[illegible]।
आज तबियत खराब थी - विश्राम किया - भोजन [illegible]
किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च । अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः । ३३ ।
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् । कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा । ३४ ।

akṣarāṇāmakāro'smi dvandvaḥ sāmāsikasya ca |
ahamevākṣayaḥ kālo dhātāhaṁ viśvatomukhaḥ || 33 ||
mṛtyuḥ sarvaharaścāhamudbhavaśca bhaviṣyatām |
kīrtiḥ śrīrvākca nārīṇāṁ smṛtirmedhā dhṛtiḥ kṣamā || 34 ||

सूर्यो० ५ । ३३, सूर्या० ६ । २२

आज पत्रोत्तर दिए – [illegible] ठाकुर [illegible] पटना, पटेल नगर
के पतेपर कालिकाठाकुर 'सहृदय' – चन्द्रमणि त्रिपाठी आदि को पत्र
लिखकर सूचना भेजा तथा विभिन्न कार्योंमें सहयोग मांगा।
आज आनन्द चौधरी को भी पत्र लिखकर [illegible] किया।
श्री विश्वनाथ शर्मा – ऊर्मिला शर्मा – द्रौपदी – सिमरी को पत्र लिखा

आज डा० पी० ठाकुर के यहाँ जाकर आँख दिखाया जांच करायी।
डाक्टर [illegible] ने देखकर कहा कि आपकी आँख की रोशनी ठीक है।
चश्मा भी ठीक ही लिया हुआ। बाद में सहृदयतापूर्वक कहा कि तीन महीने
के बाद आकर दिखाइये। [illegible] कि [illegible] में भी
कुछ गड़बड़ी होगी तो आपरेशन करके बना दूंगा।
उन्होंने एक दवा [illegible] आँखमें डालने को लिखा तथा
एक "कैप्सूल" [illegible] दिन और [illegible] खाने को
लिखा। आज दिनकी दोनों दवा लानेमें [illegible] रुपये
लगे। श्री राधेश्याम पाण्डेय – सिमरी – [illegible] (दोहा – इंडिया, [illegible])
ने [illegible] के [illegible] में [illegible] रुपये दिये थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्। मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः। ३५।
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्। ३६।

bṛhatsāma tathā sāmnāṁ gāyatrī chandasāmaham ।
māsānāṁ mārgaśīrṣo'hamṛtūnāṁ kusumākaraḥ ॥ 35 ॥
dyūtaṁ chalayatāmasmi tejastejasvināmaham ।
jayo'smi vyavasāyo'smi sattvaṁ sattvavatāmaham ॥ 36 ॥

पूर्णिमा, श्रावणीकर्म (यज्ञोपवीत-पूजन), रक्षाबन्धन सूर्यो० ५ । ३४, सूर्या० ६ । २१

आज साढ़े सात बजे प्रातः पं० सुरेश्वर शर्मा एवं उनके अनुज-पंडितवर तेजस्वी श्री जयति यादव शर्मा तथा दो अन्य युवक पंडितों ने मिलकर श्रावणी पूर्णिमा के उपलक्ष में विधिवत्, वैदिकविधि से रुद्राभिषेक संपन्न किया। करीब तीन घंटे तक रुद्राध्यायी का पाठ चलता रहा। इस अवसर पर श्री गुरुदेव स्वतंत्रानन्द नागरि [illegible] भी विद्यमान थे तथा डा० योगेन्द्र नाथ शर्मा, चौधरी हीरालालजी पंडित, शिष्य एवं स्वतंत्रता [illegible] । [illegible] भी उपस्थित थे। अतिथि सत्कार में पंडितों ने पूरी खीर भोजन किया। पंडितों को पच्चपन दक्षिणा दी गई। शिवराम ने २१ रुपये पूजन में दिये। डा० योगेन्द्र नाथ शर्मा ने भी पच्चीस रुपये [illegible] जाते समय दानस्वरूप सहयोग दिया।

संत-महापुरुषोंके सिद्धान्तके अनुसार अपना जीवन बनाना ही उनकी सच्ची सेवा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः। मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः।३७।
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्। मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्।३८।

vṛṣṇīnāṁ vāsudevo'smi pāṇḍavānāṁ dhanañjayaḥ |
munīnāmapyahaṁ vyāsaḥ kavīnāmuśanā kaviḥ || 37 ||
daṇḍo damayatāmasmi nītirasmi jigīṣatām |
maunaṁ caivāsmi guhyānāṁ jñānaṁ jñānavatāmaham || 38 ||

आज राँची के सुबोध ग्रन्थमाला कार्यालय के सूर्या० ५।३४, सूर्या० ६।२०
अभिनन्दन स्व० पं० रामसुंदर शर्मा 'भावतोषी', के पुत्र श्री
[illegible] पत्र लिखकर [illegible] के [illegible], शास्त्र [illegible]
[illegible] पुस्तकें [illegible] गीता [illegible] की प्रतियाँ [illegible]
अपनी पूँजी से "वडवानल" महाकाव्य [illegible] उपन्यास
"[illegible]" [illegible] के संबंध में [illegible]
लिखा। [illegible] उनको संबोधित [illegible]
श्री हरिकृष्ण ठाकुर को मैंने [illegible] पत्र लिखा।
[illegible] सम्मान पत्र [illegible] ले गये।

सुखकी इच्छा, आशा और भोग—ये तीनों सम्पूर्ण दुःखोंके कारण हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन। न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्। ३९।
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप। एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया। ४०।

yaccāpi sarvabhūtānāṁ bījaṁ tadahamarjuna ।
na tadasti vinā yatsyānmayā bhūtaṁ carācaram ॥ 39 ॥
nānto'sti mama divyānāṁ vibhūtīnāṁ parantapa ।
eṣa tūddeśataḥ prokto vibhūtervistaro mayā ॥ 40 ॥

सूर्यो० ५।३५, सूर्या० ६।१९

आज 'सेन्टरिंग' खुलने लगी - ठेकेदार और उनके मिस्त्री आये। खुलने वाले [illegible] लोगों को [illegible] तथा पारिश्रमिक [illegible] दिये गये। [illegible] व्यवस्था [illegible] हुआ।

जो दूसरोंके दुःखसे दुःखी होता है उसे अपने दुःखसे दुःखी नहीं होना पड़ता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा। तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम्।४१।
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन। विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्।४२।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः।१०।

yadyadvibhūtimatsattvaṁ śrīmadūrjitameva vā |
tattadevāvagaccha tvaṁ mama tejoṁ'śasambhavam || 41 ||
athavā bahunaitena kiṁ jñātena tavārjuna |
viṣṭabhyāhamidaṁ kṛtsnamekāṁśena sthito jagat || 42 ||

कज्जली तृतीया, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, बहुलाव्रत सूर्यो० ५।३५, सूर्या० ६।१८

आज सेन्टीज का बहुत सामान खुला और [illegible]
सामान· लोहापटरी तथा बल्लियाँ आईं। कल्लू भी आ गये।
ठिकेदार के आदमियों को उन्होंने अपनी कुछ बल्लियाँ ले
जाते पकड़ा। सेंटीज किसी को कह कर उठाने लगे थे [illegible]
कुछ बल्लियों तथा पट्टों को, राजकमल टेन्ट हाउस के - ठेकेदार
ने [illegible] किया है जो [illegible] के [illegible] हैं।
× आज प्रमोदकुमार ने बड़े प्रयास के बाद [illegible] की [illegible]।
[illegible] रुपये लगे।
आज [illegible] शर्मा; पत्ते से [illegible] देहरादून के
[illegible] स्थान पर [illegible]।
[illegible]
श्री स्वामी [illegible] में उद् दो अध्याय का स्वाध्याय किया।

भाद्रपद कृष्ण ४, रविवार, 1 SEPT.

सूर्यो० ५।३६, सूर्या० ६।१६

आज कल्लू [illegible] का [illegible] किया। उन्हें आज
[illegible] रुपये दिये गये। [illegible]
को एक [illegible] पत्र भेजा कि [illegible] कल्लू [illegible] के लिये
भी [illegible]। साथ ही उनसे [illegible] के [illegible]
के लिये [illegible] के [illegible] की सूचना भी भेजी।
सीमेंट भेजवाने के लिये भी कल्लू द्वारा संदेश भेजा। पानी
की दो टंकियाँ मंगाई गईं। [illegible] रुपये लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथैकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसञ्ज्ञितम्। यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम।१।
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया। त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्।२।

arjuna uvāca
madanugrahāya paramaṁ guhyamadhyātmasañjñitam |
yattvayoktaṁ vacastena moho'yaṁ vigato mama ||1||
bhavāpyayau hi bhūtānāṁ śrutau vistaraśo mayā |
tvattaḥ kamalapatrākṣa māhātmyamapi cāvyayam ||2||

आज स्वामी [illegible] चन्द्रषष्ठीव्रत सरस्वती - सूर्यो० ५।३६, सूर्या० ६।१५
सुकदेवानंद पुरी, [illegible] को पत्र भेजा। स्वामी को कार्य हेतु [illegible]।
आज [illegible] [illegible] [illegible]
माध्यम से [illegible] के संबंध में [illegible]
[illegible] बोला। [illegible]
[illegible] से आयी।
आज [illegible] कुछ कार्य नहीं किया गया।
आज [illegible] नाराज हो गये। पं० राम सिंह के यहां
से आयुर्वेद दवा लायी गयी। [illegible] हो गये।
रात को भोजन नहीं किया।

समय बहुत मूल्यवान् है ऐसे ही भगवान्‌की स्मृति भी बहुत मूल्यवान् है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर। द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम।३।
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो। योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम्।४।

evametadyathāttha tvamātmānaṁ parameśvara ।
draṣṭumicchāmi te rūpamaiśvaraṁ puruṣottama ॥ 3 ॥
manyase yadi tacchakyaṁ mayā draṣṭumiti prabho ।
yogeśvara tato me tvaṁ darśayātmānamavyayam ॥ 4 ॥

हलषष्ठीव्रत (ललहीछठ) सूर्यो० ५ । ३७, सूर्या० ६ । १४

आज के कल्ह में तीन मजदूरों को लगा कर कुछ महत्व की सफाई, ऊपर नीचे, सलंगमवाली कराई। कैलाशनदेवजी की [illegible] एक इक बालू गंगा का छोटा [illegible] लेकर आया। आज वाल्व का विरोध के गेट है के मन्दिर में [illegible] की [illegible] [illegible] रहता लगे।

आध्यात्मिक [illegible] प्रमोद [illegible] आये। [illegible] के लिये आश्रम आया। हीरालाल जी [illegible] भाई कल [illegible] चले गये और [illegible] भी छोड़ गये। अब पुराने में [illegible] की खोज उनमें [illegible] हैं। सम्यक विचार एवं उनको [illegible] निवारण करना होगा। [illegible] स्वभाव इसी है।

आज राजघाट से [illegible] - विद्युत बिल [illegible] [illegible] पांच [illegible] है। कोई [illegible] [illegible] - [illegible] - संबंध विच्छेद कर देगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः । नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ।५।
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा । बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ।६।

śrībhagavānuvāca

paśya me pārtha rūpāṇi śataśo'tha sahasraśaḥ ।
nānāvidhāni divyāni nānāvarṇākṛtīni ca ॥5॥
paśyādityānvasūnrudrānaśvinau marutastathā ।
bahūnyadṛṣṭapūrvāṇi paśyāścaryāṇi bhārata ॥6॥

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (स्मार्त) सूर्यो० ५ । ३७, सूर्या० ६ । १३

आज प्रात: हिमालयजी चौधरी को आवश्यक पत्र लिखा।
श्री रामनरेश पाठक जी को कार्ड लिखकर उनके कार्यक्रम की
सूचना दिया तथा आनन्द चौधरी को भी इनके कार्यक्रम की
सूचना देते हुए मिलने का आग्रह किया तथा "ब्रह्म विवेक विस्तर"
की १०० प्रतियाँ जाने या काशी पहुँचाने के संबंध में भी अनुरोध
किया। फिर आनन्द स्वरूप जी वर्मा जी के आदेश व अपने भाई के
पत्र लिखवाया कल कलकत्ता किसी सज्जन को भेजने एवं देने
कैसे प्रदान करेंगे। भागों के नामांकन की भी बातें आई हैं।
उन्होंने कुछ नाम भेज आयुष्मान। चौधरी राजनारायण शर्मा का पत्र
मिला, उन्हें कल उत्तर भेज देंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्। मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि।७।
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्।८।

ihaikasthaṁ jagatkṛtsnaṁ paśyādya sacarācaram |
mama dehe guḍākeśa yaccānyaddraṣṭumicchasi || 7 ||
na tu māṁ śakyase draṣṭumanenaiva svacakṣuṣā |
divyaṁ dadāmi te cakṣuḥ paśya me yogamaiśvaram || 8 ||

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (वैष्णव) सूर्यो० ५ । ३७, सूर्या० ६ । १२

आज मठ में लक्ष्मीनारायण मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी [illegible]
मनाया गया। १०.३० के बाद [illegible] अष्टमीव्रत की पारायण
फलाहार किया गया। यह शास्त्रीय अनुशासन है।

भगवान्‌में लग जाना ही सर्वोत्तम भाग्य है बाकी तो सब कुछ अभाग्य ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः । दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् । ९ ।
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् । १० ।

sañjaya uvāca

evamuktvā tato rājanmahāyogeśvaro hariḥ ।
darśayāmāsa pārthāya paramaṁ rūpamaiśvaram ॥ 9 ॥
anekavaktranayanamanekādbhutadarśanam ।
anekadivyābharaṇaṁ divyānekodyatāyudham ॥ 10 ॥

आजकल में जोरशोर से सत्संगभवन की ...

सूर्यो० ५ । ३८, सूर्या० ६ । ११

~~[illegible]~~

~~[illegible]~~

पड़ता है। ~~[illegible]~~

कल करण सिंह की पत्नी आयेंगी।

संकर्षण गुरुशरण शर्मा - कल अपने [illegible] सहित [illegible] जायेंगे।

~~[illegible]~~

~~[illegible]~~

सुख लेनेसे अन्तःकरण अशुद्ध होता है और सुख देनेसे अन्तःकरण शुद्ध होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् । सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ।११।
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता । यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ।१२।

divyamālyāmbaradharaṁ divyagandhānulepanam ।
sarvāścaryamayaṁ devamanantaṁ viśvatomukham ॥ 11 ॥
divi sūryasahasrasya bhavedyugapadutthitā ।
yadi bhāḥ sadṛśī sā syādbhāsastasya mahātmanaḥ ॥ 12 ॥

आज प्रातः गुप्तेश्वर शर्मा · संस्कृत पंडित सूर्यो० ५।३८, सूर्या० ६।१०
[illegible] - परशुराम [illegible] आये [illegible]
संस्कृत के [illegible] के साथ [illegible] दिल्ली गये। मैंने उनके
कार्य के संबंध में तथा [illegible] के लिये [illegible]
संपादक [illegible] - आज़म दिल्ली [illegible]
को [illegible] दिया तथा [illegible]
श्री [illegible] को श्री [illegible] लिखा तथा [illegible] शर्मा।
संस्कृत के [illegible] तथा [illegible] संस्कृत संस्थान के निदेशक को
भी [illegible] दिया। [illegible] के संबंध में भी पत्र
में संकेत किया। सायंकाल [illegible] आये। [illegible]
कल्लू से तथा प्रमोद कुमार से [illegible] कार्य के [illegible]
किया [illegible] तथा [illegible] के हिसाब [illegible] किया। [illegible]
[illegible] कल्लू को [illegible] - [illegible]
[illegible] हो रहा है। [illegible]

भाद्रपद कृष्ण ११, रविवार, 8 SEPT.

[illegible] ४१०० रुपया का [illegible]
सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।९
का दिया। [illegible] खाते में जायेगा।

अजा एकादशीव्रत

आज श्री [illegible] आये [illegible] बाहर
[illegible] कल्लू [illegible] को [illegible]
आज के [illegible] के पते पर
श्री [illegible] को प्रकाशित [illegible] की [illegible]
श्री [illegible] को भी पत्र भेजा।
श्री [illegible] शर्मा [illegible]
उनके [illegible] के पते पर पत्र भेजा।
आज रात [illegible] श्री [illegible]
[illegible] मैं यहां [illegible] दिन पर आया। [illegible]
के [illegible] भवन में [illegible]
[illegible] पहले गये। [illegible]
[illegible]। दिन में [illegible]
था। रात में भोजन किया - [illegible] और [illegible]
[illegible] किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा। अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा।१३।
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः। प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत।१४।

tatraikastham̐ jagatkṛtsnam̐ pravibhaktamanekadhā ।
apaśyaddevadevasya śarīre pāṇḍavastadā ॥ 13 ॥
tataḥ sa vismayāviṣṭo hṛṣṭaromā dhanañjayaḥ ।
praṇamya śirasā devam̐ kṛtāñjalirabhāṣata ॥ 14 ॥

आज भी सीमेंट नहीं आ सका न [illegible] सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।८
कोई [illegible] तथा [illegible] सफाई के कार्य होते
रहे। राजमिस्त्री राम [illegible] में [illegible]
[illegible]। [illegible]
[illegible] में मंगाया।
आज [illegible], तथा [illegible] को पता [illegible] भी
[illegible]।

प्रमोद कुमार [illegible] को [illegible]।
[illegible]।
आज भी [illegible] नहीं आ सके।
[illegible] हैं। [illegible] अनेक [illegible] हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्। ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्।१५।

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्। नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप।१६।

arjuna uvāca

paśyāmi devāṁstava deva dehe sarvāṁstathā bhūtaviśeṣasaṅghān |
brahmāṇamīśaṁ kamalāsanasthamṛṣīṁśca sarvānuragāṁśca divyān || 15 ||
anekabāhūdaravaktranetraṁ paśyāmi tvāṁ sarvato'nantarūpam |
nāntaṁ na madhyaṁ na punastavādiṁ paśyāmi viśveśvara viśvarūpa || 16 ||

भौमप्रदोष सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।७

आज दो बार सीढ़ियों पर से [illegible] गया। [illegible]
[illegible] आज सहसा [illegible]
[illegible] गये।
[illegible] दिया।
[illegible]
[illegible] होगा। [illegible]
[illegible] जाने के बाद [illegible]
[illegible]
५०० [illegible] दिया। [illegible]
गये। [illegible]
दिये। [illegible] आये।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
श्री [illegible] थे। उन्हें [illegible]
शांत किया - भोजन [illegible] दिया, व
तत्काल [illegible] के लिये वापस गये। [illegible]
को [illegible] आयेंगे। [illegible]
[illegible] के लिये।

उच्चारणमें प्रधान बात है—परिमित बोले और शुभ बोले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्। पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्।१७।
त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्। त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे।१८।

kirīṭinaṁ gadinaṁ cakriṇaṁ ca tejorāśiṁ sarvato dīptimantam |
paśyāmi tvāṁ durnirīkṣyaṁ samantāddīptānalārkadyutimaprameyam || 17 ||
tvamakṣaraṁ paramaṁ veditavyaṁ tvamasya viśvasya paraṁ nidhānam |
tvamavyayaḥ śāśvatadharmagoptā sanātanastvaṁ puruṣo mato me || 18 ||

सूर्यो० ५।४०, सूर्या० ६।६

आज राज नाथ राय की [illegible] गुप्त [illegible]
जांच कर रिपोर्ट मिली। प्रातः स्टेशन जायेंगे।
उन्होंने [illegible] कहा कि [illegible] राम [illegible] से संपर्क करेंगे। काशी [illegible] में [illegible] के लिए।
१ [illegible] रविवार [illegible] के दिन [illegible]
सम्पादकों और [illegible] की बैठक [illegible] का [illegible]
हो गया है। [illegible] आयेंगे नहीं।
आज राजकुमार सिंह ठेकेदार [illegible] सिंह के [illegible] कि [illegible]
और [illegible] का [illegible]। आपस में [illegible]
बांटते हैं। [illegible] सीमेंट [illegible]
का मामला [illegible] है। कल [illegible] जायेगा।
[illegible]
कल से [illegible] होगा। [illegible]
और [illegible]।

संसारसे कुछ भी लेना—बन्धन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यमनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्। पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्।१९।
द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः। दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्।२०।

anādimadhyāntamanantavīryamanantabāhuṁ śaśisūryanetram |
paśyāmi tvāṁ dīptahutāśavaktraṁ svatejasā viśvamidaṁ tapantam || 19 ||
dyāvāpṛthivyoridamantaraṁ hi vyāptaṁ tvayaikena diśaśca sarvāḥ |
dṛṣṭvādbhutaṁ rūpamugraṁ tavedaṁ lokatrayaṁ pravyathitaṁ mahātman || 20 ||

कुशोत्पाटिनी-अमावास्या सूर्यो० ५।४०, सूर्या० ६।४

आज देहरादून के ज्योतिषी [illegible] [illegible] शर्मा - सेमरा
का पत्र समाचार आया । आज कुछ कुछ [illegible] प्रयोग
भी कारगर हुआ । आज भी सीमेंट नहीं आ सका । कलकत्ता
भी टेलीफोन ठीक हो गया है किन्तु राजकुमार से बहुत [illegible]
बात नहीं हो पाती है, वे बीमार हो गई हैं । राजकुमार सिंह बेईमानी से
ही [illegible] का आदेश प्राप्त करते हैं ।
आज सायंकाल सिर में दर्द रहा, रात में पेट में दर्द - [illegible]
रहा । कल वाले [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] - [illegible] को [illegible] तथा [illegible] में
आर्थिक सहयोग जुटाने के लिए जाने के कार्यक्रम के सम्बन्ध
में [illegible] से बात हो गई ।

मिठास कहाँ है—जहाँ प्रेम है; जलन, विष कहाँ है—जहाँ द्वेष है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति। स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः।२१।
रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च। गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे।२२।

amī hi tvāṁ surasaṅghā viśanti kecidbhītāḥ prāñjalayo gṛṇanti |
svastītyuktvā maharṣisiddhasaṅghāḥ stuvanti tvāṁ stutibhiḥ puṣkalābhiḥ || 21 ||
rudrādityā vasavo ye ca sādhyā viśve'śvinau marutaścoṣmapāśca |
gandharvayakṣāsurasiddhasaṅghā vīkṣante tvāṁ vismitāścaiva sarve || 22 ||

आज [illegible] सूर्यो० ५।४१, सूर्यो० ६।३
[illegible] हुआ। [illegible]
[illegible]
[illegible] के लिये।

[illegible] कालेज के प्राचार्य [illegible] सिंह से [illegible]
[illegible] के लिये [illegible]
[illegible] में सक्षम नहीं है।

आज [illegible]
[illegible] जायेगा। [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] हुआ
[illegible] है।
[illegible]
नहीं। [illegible] की [illegible]
[illegible] अभी पांच दिन पहले आये थे, उन्हें
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] रहे हैं।
[illegible] और
[illegible]

जिस त्यागमें आनन्द और शान्ति मिलती है वही यथार्थ त्याग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम्। बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्।२३।
नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्। दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो।२४।

rūpaṁ mahatte bahuvaktranetraṁ mahābāho bahubāhūrupādam |
bahūdaraṁ bahudaṁṣṭrākarālaṁ dṛṣṭvā lokāḥ pravyathitāstathāham || 23 ||
nabhaḥspṛśaṁ dīptamanekavarṇaṁ vyāttānanaṁ dīptaviśālanetram |
dṛṣṭvā hi tvāṁ pravyathitāntarātmā dhṛtiṁ na vindāmi śamaṁ ca viṣṇo || 24 ||

आज भी सत्संग भवन में पारायण एवं सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।२
पोथी की समाप्ति का काम होता रहा। कल तक [illegible]।
आज उन्हें दो हजार रुपये दिये गये। आज केलेश्वर स्थान
तथा महाविद्यालय के सामने इमली मार्केट में [illegible]
वालों के साथ [illegible] पर चंदे के लिये फेरी लगाई
गई। तत्काल तो कुछ मिला नहीं पर मिलने की आशा
है। समाज के प्रति श्रद्धा रखने वालों से भी [illegible] किया।
उसी [illegible] [illegible]
([illegible]) प्रयागराज थाने के समक्ष के [illegible] में [illegible] के
लड़कों से [illegible] पर मिलकर चंदे के लिये अनुरोध
करते हुए राजगुरु मठ के [illegible] की पृष्ठभूमि का
सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला गया। [illegible] के [illegible]
भोजन किया। विश्राम किया।

भाद्रपद शुक्ल २, रविवार, 15 SEPT.

सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।१

आज भी [illegible] काम होता रहा। आज [illegible] के
[illegible] सिंह पाल आ गये। [illegible]
सामाजिक आध्यात्मिक चर्चा होती रही। [illegible] स्वामी
[illegible] स्वामी [illegible]
आदि की सामाजिक [illegible] होती रही।
इसके बाद [illegible]
अनुरोध किया गया। कुछ देर बाद [illegible]
[illegible] होती रही।
[illegible] गये। [illegible]
[illegible] कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास॥२५॥
अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः। भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः॥२६॥

daṁṣṭrākarālāni ca te mukhāni dṛṣṭvaiva kālānalasannibhāni |
diśo na jāne na labhe ca śarma prasīda deveśa jagannivāsa || 25 ||
amī ca tvāṁ dhṛtarāṣṭrasya putrāḥ sarve sahaivāvanipālasaṅghaiḥ |
bhīṣmo droṇaḥ sūtaputrastathāsau sahāsmadīyairapi yodhamukhyaiḥ || 26 ||

हरितालिकाव्रत, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (चन्द्रदर्शन-निषिद्ध) . सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ६।०

आज भी पखाना होता रहा। [illegible] आये थे
दवा तथा कुछ आवश्यक चीजें खरीदने के लिये दो सौ रुपये
निकाल कर प्रमोद के जिम्मे लगाया।
प्रमोद पत्नी एवं प्रमोद वन्दिता के लिये - तथा अंजलि [illegible] और
अन्य लोगों के लिये भी संकेत किया। कल विश्वकर्मा पूजा
से काम बन्द रहेगा।
[illegible] के विषय - [illegible] जी [illegible] के लोभ में
[illegible] में फँसा है - क्रोध [illegible] शान्त किया।
यह समाज और इसके अधिकांश सदस्य [illegible] हैं,
स्वार्थी और संकुचित मनोवृत्ति के हैं। सदा [illegible]
[illegible] लोभ में फंसे [illegible] सकते हैं।

ऐसा होना चाहिये और ऐसा नहीं होना चाहिये—इसमें ही सब दुःख भरे हुए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि। केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः।२७।
यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति। तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति।२८।
यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः। तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः।२९।

vaktrāṇi te tvaramāṇā viśanti daṁṣṭrākarālāni bhayānakāni |
kecidvilagnā daśanāntareṣu sandṛśyante cūrṇitairuttamāṅgaiḥ || 27 ||
yathā nadīnāṁ bahavo'mbuvegāḥ samudramevābhimukhā dravanti |
tathā tavāmī naralokavīrā viśanti vaktrāṇyabhivijvalanti || 28 ||
yathā pradīptaṁ jvalanaṁ pataṅgā viśanti nāśāya samṛddhavegāḥ |
tathaiva nāśāya viśanti lokāstavāpi vaktrāṇi samṛddhavegāḥ || 29 ||

ऋषिपञ्चमीव्रत, विश्वकर्मापूजा सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ५।५८

आज कलशू निकाला गया। उसे ~~[illegible]~~ एक हजार रुपये दिये गये। कलसे काम होगा। जगदीशसिंह को इसके लिये प्रमोदजीने [illegible] किया।

सायंकाल "श्री [illegible] कृपालु" काशी महाविद्या[illegible] सहसा मठमें आ पहुँचे। आँख कमजोर है। वे देर तक विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर विचार विमर्श तथा [illegible] होते रहे। [illegible] "रामकेशव [illegible]" [illegible]।

श्रीकृपालजी स्वामी करपात्रीजी के [illegible] पहले कलकत्ते में थे जो केदारघाट मठ में रहते हैं।

* * *

~~डा० राजबलधर शर्मा [illegible] बाग कॉलोनी में [illegible]~~ के पीछे मनोहर (राजेन्द्रनगर) के मकान का पता चला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः। तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो।३०।
आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद। विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्।३१।

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः। ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।३२।

lelihyase grasamānaḥ samantāllokānsamagrānvadanairjvaladbhiḥ I
tejobhirāpūrya jagatsamagraṁ bhāsastavogrāḥ pratapanti viṣṇo II 30 II
ākhyāhi me ko bhavānugrarūpo namo'stu te devavara prasīda I
vijñātumicchāmi bhavantamādyaṁ na hi prajānāmi tava pravṛttim II 31 II

śrībhagavānuvāca

kālo'smi lokakṣayakṛtpravṛddho lokānsamāhartumiha pravṛttaḥ I
ṛte'pi tvāṁ na bhaviṣyanti sarve ye'vasthitāḥ pratyanīkeṣu yodhāḥ II 32 II

लोलार्कषष्ठी — सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५७

आज सायंकाल-प्रमोद कुमार और अभिषेक राय एवं हिमलालजी सहित पंजाबमेल एक्सप्रेस में आरक्षित स्थान पर बैठ-कलकत्ता के लिये प्रस्थान किया।

अनुजों का पारस्परिक [illegible] देखने पर मुझे [illegible] अच्छा। कौटिल्य प्रसंग-मदन [illegible] का प्रयोग है। [illegible] हुए [illegible] सभी [illegible] प्रायः भौतिक ही अधिक सहानुभूति दिखाते हैं। पैसे [illegible] कम ही हैं। आने के पूर्व-श्री [illegible] की [illegible] की सूचना [illegible] नहीं था। [illegible] तथा [illegible] बहुत आवश्यक [illegible] से यह कदम उठाया।

प्रस्थान करने के पहले श्री. स्वामी दिव्यानन्द जी को. [illegible] पर स्मरण-संदेश तथा आपके जाने और लौटने की तिथि दे दिया।

जो समय भगवान्के स्मरण–चिन्तनमें लगता है वही सार्थक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्। मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।३३।
द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्। मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।३४।

सञ्जय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी। नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य।३५।

tasmāttvamuttiṣṭha yaśo labhasva jitvā śatrūnbhuṅkṣva rājyaṁ samṛddham |
mayaivaite nihatāḥ pūrvameva nimittamātraṁ bhava savyasācin || 33 ||
droṇaṁ ca bhīṣmaṁ ca jayadrathaṁ ca karṇaṁ tathānyānapi yodhavīrān |
mayā hatāṁstvaṁ jahi mā vyathiṣṭhā yudhyasva jetāsi raṇe sapatnān || 34 ||

sañjaya uvāca

etacchrutvā vacanaṁ keśavasya kṛtāñjalirvepamānaḥ kirīṭī |
namaskṛtvā bhūya evāha kṛṣṇaṁ sagadgadaṁ bhītabhītaḥ praṇamya || 35 ||

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५६

[illegible]
[illegible]
[illegible] उपासना की।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] रहा। [illegible]
रहा। [illegible]
[illegible]

आप भगवान्‌को नहीं देखते, पर भगवान् आपको निरन्तर देख रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च । रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः । ३६ ।
कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे । अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् । ३७ ।
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् । वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप । ३८ ।

arjuna uvāca

sthāne hṛṣīkeśa tava prakīrtyā jagatprahṛṣyatyanurajyate ca |
rakṣāṁsi bhītāni diśo dravanti sarve namasyanti ca siddhasaṅghāḥ || 36 ||
kasmācca te na nameranmahātman garīyase brahmaṇo'pyādikartre |
ananta deveśa jagannivāsa tvamakṣaraṁ sadasattatparaṁ yat || 37 ||
tvamādidevaḥ puruṣaḥ purāṇastvamasya viśvasya paraṁ nidhānam |
vettāsi vedyaṁ ca paraṁ ca dhāma tvayā tataṁ viśvamanantarūpa || 38 ||

श्रीराधाष्टमी सूर्यो० ५ । ४३, सूर्या० ५ । ५५

आज श्री [illegible] के [illegible] गये। दर्शन किया। [illegible] इष्ट मित्रों [illegible] के [illegible] होने पर उद्बोधक प्रवचन [illegible] किया।
सायंकाल पुनः [illegible] के आवास स्थान पर लौट आये जहाँ ठहरे हैं।

दूसरे [illegible] की [illegible] राय के यहाँ गये, भोजन किया। [illegible] श्री [illegible] राय बन्धु। उनके [illegible] भी हैं। [illegible] बड़ी [illegible] प्रवीण [illegible] हैं। [illegible] गी। [illegible] के [illegible] की [illegible] हैं "[illegible]" [illegible]।

यदि मनुष्य आजका काम कलपर न टाले तो वह बहुत-सी बुराइयोंसे बच सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च । नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।३९।
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व । अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।४०।
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति। अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि।४१।

vāyuryamo'gnirvaruṇaḥ śaśāṅkaḥ prajāpatistvaṁ prapitāmahaśca |
namo namaste'stu sahasrakṛtvaḥ punaśca bhūyo'pi namo namaste || 39 ||
namaḥ purastādatha pṛṣṭhataste namo'stu te sarvata eva sarva |
anantavīryāmitavikramastvaṁ sarvaṁ samāpnoṣi tato'si sarvaḥ || 40 ||
sakheti matvā prasabhaṁ yaduktaṁ he kṛṣṇa he yādava he sakheti |
ajānatā mahimānaṁ tavedaṁ mayā pramādātpraṇayena vāpi || 41 ||

सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ५।५४

आज प्रातः साढ़े दस बजे कलकत्ता में - सुशीला तथा
इन्दु. पंजाब के [illegible] विद्यालय की प्रा. [illegible] - जिज्ञासु
सुशीला राज के आवास [illegible] गये। वहाँ [illegible]
[illegible] मन्नू - [illegible] के [illegible] मौसी ([illegible]) तथा
महादेव राय के साथ [illegible] भोजन किया। [illegible]
किया। [illegible] भी थी।

सायंकाल इन्दु और शर्मा - [illegible] आये।

भाद्रपद शुक्ल १०, रविवार 22 SEPT.

सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ५।५२

महारविवारव्रत

आज भी [illegible] नहीं
[illegible] तथा [illegible]
काटने का काम होता रहा।
कैलाश [illegible] राजेन्द्र भी आये हैं [illegible]
हैं, आते रहे, बातें करते रहे। [illegible] कुछ
[illegible] दिन भर होते रहा।
जो चंपा [illegible] रहा है वह [illegible] तथा [illegible]
पाराडेम के [illegible] है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु । एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ।४२।
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् । न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ।४३।
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् । पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ।४४।

yaccāvahāsārthamasatkṛto'si vihāraśayyāsanabhojaneṣu |
eko'thavāpyacyuta tatsamakṣaṁ tatkṣāmaye tvāmahamaprameyam || 42 ||
pitāsi lokasya carācarasya tvamasya pūjyaśca gururgarīyān |
na tvatsamo'styabhyadhikaḥ kuto'nyo lokatraye'pyapratimaprabhāva || 43 ||
tasmātpraṇamya praṇidhāya kāyaṁ prasādaye tvāmahamīśamīḍyam |
piteva putrasya sakheva sakhyuḥ priyaḥ priyāyārhasi deva soḍhum || 44 ||

पद्मा एकादशीव्रत, श्रीवामनद्वादशीव्रत सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ५।५१

आज श्राद्ध दिवस था - ब्राह्मणों [illegible] था। श्री श्रीराम पाण्डेय के यहाँ गये। सायंकाल मिष्ठान्न भोजन किया - [illegible] पौत्रियों भी ले गये। चौबे जी में गुण बहुत है, सच्चे सेवक हैं. लोगों [illegible] है. किन्तु हठी और स्वाभिमानी [illegible] हैं।

आज प्रमोद के पत्र: प्रभात और [illegible] से दीनानाथ पाण्डेय की पत्नी के काशी [illegible] में दीक्षा [illegible] किन्तु लोगों का विरोध किया किन्तु [illegible] काशी चलकर। उसी समय काशी में अपनी [illegible] शिला न्यास करने का भी [illegible] हुआ।

[illegible] [illegible] के पुत्र [illegible] के यहाँ थोड़ा [illegible] भोजन श्री श्रीराम पाण्डेय के यहाँ हुआ।

रामप्रसाद पाण्डेय ने:- [illegible] में वार्षिक श्राद्ध विधान: करने का निश्चय लिया. उनकी व्यवस्था करनी है. मैं काशी से [illegible] भेजूंगा और २४-२५ अक्टूबर को। काशी से [illegible] टिकट लेकर [illegible] पहुँचूंगा।

बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ बिषय भोग बहु घी तें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे। तदेव मे दर्शय देवरूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास।४५।
किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव। तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते।४६।

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्। तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्।४७।

adṛṣṭapūrvaṁ hṛṣito'smi dṛṣṭvā bhayena ca pravyathitaṁ mano me ।
tadeva me darśaya devarūpaṁ prasīda deveśa jagannivāsa ॥ 45 ॥
kirīṭinaṁ gadinaṁ cakrahastamicchāmi tvāṁ draṣṭumahaṁ tathaiva ।
tenaiva rūpeṇa caturbhujena sahasrabāho bhava viśvamūrte ॥ 46 ॥

śrībhagavānuvāca

mayā prasannena tavārjunedaṁ rūpaṁ paraṁ darśitamātmayogāt ।
tejomayaṁ viśvamanantamādyaṁ yanme tvadanyena na dṛṣṭapūrvam ॥ 47 ॥

भौमप्रदोष सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ५।५०

आज भोजन श्री [illegible] राउत के यहाँ हुआ।
राजेन्द्र पांडे के प्रयास करके एक लड़की का [illegible] -
एक [illegible] का होटल में - दो बिस्तरे की गद्दी - पट्टी आदि
सामान जुटाकर दिये।

श्री दीनानाथ पाण्डेय ने अपनी ओर से इक्कीस हजार
रुपये निर्माणार्थ दान किये। [illegible] पाण्डे [illegible] ५,
पांच हजार कृष्णगोपाल, पांच हजार श्री [illegible]
नगर सेठ बहुत लोग। [illegible] हजार कुल
दानदाताओं के द्वारा [illegible] महामण्डलेश्वर के [illegible]
स्वामी ने २५००० [illegible] दान किये,
साथ ही एक [illegible] - बच्चों का खेल आदि
दिये।

आज सायंकाल पंजाबकोलोनी में प्रवचन किया।
हीरालालजी, महादेव राम [illegible], प्रमोद कुमार
आदि साथ रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः। एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर।४८।
मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्। व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य।४९।

सञ्जय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः। आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा।५०।

na vedayajñādhyayanairna dānairna ca kriyābhirna tapobhirugraiḥ |
evaṁrūpaḥ śakya ahaṁ nṛloke draṣṭuṁ tvadanyena kurupravīra || 48 ||
mā te vyathā mā ca vimūḍhabhāvo dṛṣṭvā rūpaṁ ghoramīdṛṁmamedam |
vyapetabhīḥ prītamanāḥ punastvaṁ tadeva me rūpamidaṁ prapaśya || 49 ||

sañjaya uvāca

ityarjunaṁ vāsudevastathoktvā svakaṁ rūpaṁ darśayāmāsa bhūyaḥ |
āśvāsayāmāsa ca bhītamenaṁ bhūtvā punaḥ saumyavapurmahātmā || 50 ||

अनन्त चतुर्दशीव्रत — सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ५।४९

आज काशी कैंट स्टेशन. हिरालाल चौधरी प्रमोद कुमार
आदि के साथ १२ बजे पहुंचा। श्री महाविदेहराम, अपने आवास.
चंद्रिका कॉलोनी गये। हिरालाल, प्रमोद सहित मठमें आया।
मठवासी प्रतीक्षा कर रहे थे। कोई चल रहा था।
भोजन विश्राम किया। इसके पूर्व हिरालाल चौधरी को
भोजन कर बाद प्रमोद सहित गाडी भाड़ सहित. नवनाथपुर
उनके घर भेजा। शिवरात्रि यात्रा के समय तक काशी रहेंगे।

चार चीजोंका सदा सेवन करना चाहिये—सत्सङ्ग, सन्तोष, दान और दया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन। इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः।५१।

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम। देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः।५२।

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया। शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा।५३।

arjuna uvāca

dṛṣṭvedaṁ mānuṣaṁ rūpaṁ tava saumyaṁ janārdana ।
idānīmasmi saṁvṛttaḥ sacetāḥ prakṛtiṁ gataḥ ॥ 51 ॥

śrībhagavānuvāca

sudurdarśamidaṁ rūpaṁ dṛṣṭvānasi yanmama ।
devā apyasya rūpasya nityaṁ darśanakāṅkṣiṇaḥ ॥ 52 ॥
nāhaṁ vedairna tapasā na dānena na cejyayā ।
śakya evaṁvidho draṣṭuṁ dṛṣṭavānasi māṁ yathā ॥ 53 ॥

व्रत-पूर्णिमा, महालयारम्भ, पूर्णिमा-श्राद्ध   सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ५।४८

आज भी कार्य चलता रहा। गत सप्ताह में आये गोरखपुर से कुछ आदमी। मिस्त्री मजदूर लोग हैं।
काशीवास के ~~विश्वनाथ स्वर्गीय [illegible]~~ अपनी पत्नी बच्चे पत्नियों सहित [illegible] में आये हैं। विश्वविद्यालय में नया भवन [illegible] बनाते रहे। उन्हें रहने की व्यवस्था की गई।
अपना सामान आदि [illegible] लाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन। ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप।५४।
मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः। निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव।५५।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः। ११।

bhaktyā tvananyayā śakya ahamevaṁvidho'rjuna ।
jñātuṁ draṣṭuṁ ca tattvena praveṣṭuṁ ca parantapa ॥ 54 ॥
matkarmakṛnmatparamo madbhaktaḥ saṅgavarjitaḥ ।
nirvairaḥ sarvabhūteṣu yaḥ sa māmeti pāṇḍava ॥ 55 ॥

पूर्णिमा, प्रतिपदा-श्राद्ध सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ५।४७

आज श्री महादेव रायको - १० हजार रुपये दे गये

एक मिल चुके में से। कल्लू को दो हजार रुपये दिये गये।

दान और सत्कर्म करो पर फलकी कामनासे नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते। ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।१।

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते। श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः।२।
ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते। सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम्।३।

arjuna uvāca

evaṁ satatayuktā ye bhaktāstvāṁ paryupāsate ।
ye cāpyakṣaramavyaktaṁ teṣāṁ ke yogavittamāḥ ॥ 1 ॥

śrībhagavānuvāca

mayyāveśya mano ye māṁ nityayuktā upāsate ।
śraddhayā parayopetāste me yuktatamā matāḥ ॥ 2 ॥
ye tvakṣaramanirdeśyamavyaktaṁ paryupāsate ।
sarvatragamacintyaṁ ca kūṭasthamacalaṁ dhruvam ॥ 3 ॥

द्वितीया-श्राद्ध सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ५।४६

आश्विन कृष्ण ३, रविवार, 29 SEPT.

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ५।४५

तृतीया-श्राद्ध

आज मगध एक्सप्रेस से प्रमोदकुमार सेठिया वर्धमान
पहुँचे। पारस [illegible] की नौकरी [illegible] पता चला
कि पेंशन पुस्तिका भूल गये। कागजों की थैली में छूट गई।
[illegible] सिंह उदय एक्सप्रेस से आज के
रात में काशी मठ में पहुँचा।
इनके पहले [illegible] तिवारी के [illegible]।
श्री रामतपस्या तिवारी तथा केशवप्रसाद [illegible]
[illegible]। जी। [illegible] से फोन में [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ।४।
क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ।५।
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ।६।

sanniyamyendriyagrāmaṁ sarvatra samabuddhayaḥ ।
te prāpnuvanti māmeva sarvabhūtahite ratāḥ ॥ 4 ॥
kleśo'dhikatarasteṣāmavyaktāsaktacetasām ।
avyaktā hi gatirduḥkhaṁ dehavadbhiravāpyate ॥ 5 ॥
ye tu sarvāṇi karmāṇi mayi sannyasya matparāḥ ।
ananyenaiva yogena māṁ dhyāyanta upāsate ॥ 6 ॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चतुर्थी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ५।४४

आज बैंक और कोषागार अंतिम कार्य दिवस होने से बंद हैं। अतः कार्यालय का कोई कार्य नहीं हो सका। वर्षा भी होने लगी। प्रमाद कर गये।

दिनभर बुरी भावनाओं और बुरे कर्मोंसे बचकर रहना रातभरके भजनसे बढ़कर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्। भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।७।
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय। निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।८।
अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्। अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय।९।

teṣāmahaṁ samuddhartā mṛtyusaṁsārasāgarāt ।
bhavāmi nacirātpārtha mayyāveśitacetasām ॥ 7 ॥
mayyeva mana ādhatsva mayi buddhiṁ niveśaya ।
nivasiṣyasi mayyeva ata ūrdhvaṁ na saṁśayaḥ ॥ 8 ॥
atha cittaṁ samādhātuṁ na śaknoṣi mayi sthiram ।
abhyāsayogena tato māmicchāptuṁ dhanañjaya ॥ 9 ॥

पञ्चमी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ५।४३

आज प्रमोद कुमार काशी से लौटे नहीं।
मैं [illegible] गया। वहां [illegible] श्यामाजि [illegible]
श्री भगवत आदि से मिला। आश्रम की सफाई के लिये
राजेन्द्र को ले आया। सात [illegible]।
आज [illegible] कोठी [illegible] से रामकिशोर चौधरी
डा. चन्द्रशेखर मिश्र के साथ आ पहुंचे।
शाम को तब मैं [illegible] लेकर आश्रम पहुँचे।
दोनों [illegible] देखते रहे। मिश्र जी - [illegible]
और [illegible] को दिखाते रहे। फिर बाद में
[illegible] आवास स्थान पर गये।

संसार दुःखका सागर है और श्रीराम सुखके सागर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव। मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि।१०।
अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः। सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्।११।
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते। ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्।१२।

abhyāse'pyasamartho'si matkarmaparamo bhava ।
madarthamapi karmāṇi kurvansiddhimavāpsyasi ॥ 10 ॥
athaitadapyaśakto'si kartuṁ madyogamāśritaḥ ।
sarvakarmaphalatyāgaṁ tataḥ kuru yatātmavān ॥ 11 ॥
śreyo hi jñānamabhyāsājjñānāddhyānaṁ viśiṣyate ।
dhyānātkarmaphalatyāgastyāgācchāntiranantaram ॥ 12 ॥

श्रीगाँधीजयन्ती, षष्ठी-श्राद्ध सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ५।४२

आज गणेश मिश्र - राजेन्द्र शर्मा, व्यक्ति आये।
आश्रम के हेतु पाठ जोड़े जाते रहे।
आज दिन में डा० चन्द्रशेखर मिश्र और चौधरी जी
नहीं आ सके। रात में डेढ़ बजे आये और डेढ़ घंटे
तक विभिन्न पहलुओं पर विमर्श करते रहे।
कल प्रातः वे लोग पुनः आयेंगे।

मुक्त पक्ष पर चलने का कार्यक्रम निश्चित किया लोगों ने,
रचना को प्रस्ताव आदि एवं मनडुवा तक १ नवंबर को काशी
आपसी बीच तय हुई। उन लोगों ने एक अलग आश्रम दिया
मेरे पास पत्र प्रदक्ष पत्रक बाबा। उन लोगों ने

नीतिकौशल के बारे, रघुनाथ पाण्डेय, लोकनायक सभी
आदि से भी बातें की हैं। रामजन्म ओझा आदि सभी को
इन लोगों ने शामिल किया है।
इसमें चौधरी तथा मिश्र जी की अपनी स्वार्थी
राजनीति भी है, जो हो मुझे सहायता भी जाने और सफलता
लोगों से मिल कर चलने में सार्थकता है।

इसी बीच प्रमोद कुमार ... से आ गये।
उनसे भी चौधरी तथा मिश्र जी से भेंट हुई।

हिन्दू-विवाहका उद्देश्य क्रमशः विषयासक्तिसे मुक्त होकर भगवान्‌की ओर बढ़ना ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी।१३।
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।१४।
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः। हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः।१५।

adveṣṭā sarvabhūtānāṁ maitraḥ karuṇa eva ca |
nirmamo nirahaṅkāraḥ samaduḥkhasukhaḥ kṣamī || 13 ||
santuṣṭaḥ satataṁ yogī yatātmā dṛḍhaniścayaḥ |
mayyarpitamanobuddhiryo madbhaktaḥ sa me priyaḥ || 14 ||
yasmānnodvijate loko lokānnodvijate ca yaḥ |
harṣāmarṣabhayodvegairmukto yaḥ sa ca me priyaḥ || 15 ||

सप्तमी-श्राद्ध सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ५।४१

आज दानापुर गये। मगध एक्सप्रेस से आवश्यक दिनचर्या की।
फलतः डेढ़ घण्टा कूप में, बड़ी ग्लानि सहते हुए, टेलिफोन
रेलवे प्लेटफार्म पर आनन्द पहुँचे। नगेन्द्र कुमार शर्मा-आयुष्
मिल गये। ~~सब कामकाज आदि सुविधा किया तथा~~
पातः पुस्तिका के अनुवाद में प्रमः सोमवार ७ ता. के
अन्त को कथ। कागज पत्र पेंशन पुस्तिका ले लिया।

हमलोग दादर-गौहाटी से चलकर लौटे। आरक्षण तो
वह ठीक मिल गया। किन्तु गाड़ी जुड़ने के ऊपर
खींचने से ८ बजे रात को बक्सर स्टेशन पहुँची।
हमलोग रिक्शा से आश्रम पहुँचे और भोजन विश्राम
किया।

सारा दर्शनशास्त्र दो शब्दोंमें—संयम और सेवा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः । सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः । १६ ।
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति । शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः । १७ ।
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः । शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः । १८ ।

anapekṣaḥ śucirdakṣa udāsīno gatavyathaḥ |
sarvārambhaparityāgī yo madbhaktaḥ sa me priyaḥ || 16 ||
yo na hṛṣyati na dveṣṭi na śocati na kāṅkṣati |
śubhāśubhaparityāgī bhaktimānyaḥ sa me priyaḥ || 17 ||
samaḥ śatrau ca mitre ca tathā mānāpamānayoḥ |
śītoṣṇasukhaduḥkheṣu samaḥ saṅgavivarjitaḥ || 18 ||

अष्टमी-श्राद्ध, जीवत्पुत्रिकाव्रत सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ५।४०

आज प्रातः नर्वदेश्वर राम चौधरी [illegible] सहयोग समिति के [illegible] भवन पर मिले। वे [illegible] वृद्ध [illegible] परिवार की [illegible] मिलने से मिले। किन्तु वे हैं बड़े ही [illegible] और [illegible]। बाद में [illegible] मिलने कर [illegible] आश्रम पर लौटे।

सेन्ट्रल बैंक गये। [illegible] ४४००० रुपये [illegible] तथा शेष [illegible] निकाले।

तीन हजार रुपये लाये और १५००० रुपये [illegible] खाते में जमा किया।

[illegible] पांच महीने की साढ़े सात हजार [illegible] है। [illegible] तीन [illegible] मास की [illegible] भरा गया।

[illegible] सीमेंट - तथा [illegible] के लिये दो सौ रुपये - २५० दे दिया। ३० रुपये [illegible] को दिया जो [illegible] रहा है और [illegible] है।

श्याम बिहारी राय को एक [illegible] के लिये १२५ रुपये दिये।

राम [illegible] तथा [illegible] के [illegible] १३०० रुपये [illegible] रहे [illegible] कि [illegible] नहीं मिले। गोपाल [illegible] [illegible] से। मैंने

दूसरोंपर दोषारोपण करके हम स्वयंको अँधेरेमें ही रहने देते हैं।

राय [illegible] [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्। अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः।१९।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते। श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः।२०।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः।१२।

tulyanindāstutirmaunī santuṣṭo yena kenacit |
aniketaḥ sthiramatirbhaktimānme priyo naraḥ || 19 ||
ye tu dharmyāmṛtamidaṁ yathoktaṁ paryupāsate |
śraddadhānā matparamā bhaktāste'tīva me priyāḥ || 20 ||

नवमी-श्राद्ध सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ५।३९

आज [illegible]। [illegible]
[illegible]
[illegible]।

आश्विन कृष्ण ९, रविवार, 6 OCT.

सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ५।३८

दशमी-श्राद्ध

आज [illegible] राय शर्मा १०.३० [illegible] मठ में आये। मठ के
निर्माण कार्य की समीक्षा [illegible]
[illegible]
[illegible]।
[illegible]
[illegible] का [illegible]।
[illegible]
आज [illegible]। [illegible]
[illegible] का [illegible]" [illegible]
[illegible] का [illegible] को [illegible] वे अपने
[illegible] कहते हैं कि [illegible]।
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते । एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः । १ ।
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत । क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम । २ ।
तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् । स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु । ३ ।

śrībhagavānuvāca

idaṁ śarīraṁ kaunteya kṣetramityabhidhīyate ।
etadyo vetti taṁ prāhuḥ kṣetrajña iti tadvidaḥ ॥ 1 ॥
kṣetrajñaṁ cāpi māṁ viddhi sarvakṣetreṣu bhārata ।
kṣetrakṣetrajñayorjñānaṁ yattajjñānaṁ mataṁ. mama ॥ 2 ॥
tatkṣetraṁ yacca yādṛkca yadvikāri yataśca yat ।
sa ca yo yatprabhāvaśca tatsamāsena me śṛṇu ॥ 3 ॥

एकादशी-श्राद्ध सूर्यो० ५।५२, सूर्या० ५।३६

आज दीनानाथ पाण्डेय, को जैदीपगान, श वड़ा, सलकिआ के पते पर पत्र भेजा। श्री कैलासनाथ पाण्डेय, सलकिआ हावड़ा. ७११०६, औरंगी रोड, को पत्र लिखकर भेजा।

अमूल्य समयको अमूल्य कार्यमें लगाना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ।४।
महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च । इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः । ५।
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं सङ्घातश्चेतना धृतिः । एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् । ६।

ṛṣibhirbahudhā gītaṁ chandobhirvividhaiḥ pṛthak |
brahmasūtrapadaiścaiva hetumadbhirviniścitaiḥ || 4 ||
mahābhūtānyahaṅkāro buddhiravyaktameva ca |
indriyāṇi daśaikaṁ ca pañca cendriyagocarāḥ || 5 ||
icchā dveṣaḥ sukhaṁ duḥkhaṁ saṅghātaścetanā dhṛtiḥ |
etatkṣetraṁ samāsena savikāramudāhṛtam || 6 ||

इन्दिरा एकादशीव्रत सूर्यो० ५।५२, सूर्या० ५।३५

आज मगध एक्सप्रेस से स्टेशन मानिकपुर के पास [illegible] प्रमोद कुमार के साथ गये। बड़ी भीड़ थी। मुश्किल से [illegible] के डब्बे को पार करके भी आगे है। [illegible] पास की खिड़की [illegible] में नाम नहीं बच सका। [illegible] मझौसे [illegible] जाना पड़ेगा। [illegible] बहुत [illegible] लौटे। [illegible] विश्राम किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-MoE-Grant-2

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् । आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ।७।
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहङ्कार एव च । जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ।८।
असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु । नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ।९।

amānitvamadambhitvamahiṁsā kṣāntirārjavam ।
ācāryopāsanaṁ śaucaṁ sthairyamātmavinigrahaḥ ॥ 7 ॥
indriyārtheṣu vairāgyamanahaṅkāra eva ca ।
janmamṛtyujarāvyādhiduḥkhadoṣānudarśanam ॥ 8 ॥
asaktiranabhiṣvaṅgaḥ putradāragṛhādiṣu ।
nityaṁ ca samacittatvamiṣṭāniṣṭopapattiṣu ॥ 9 ॥

द्वादशी-श्राद्ध, प्रदोषव्रत सूर्यो० ५।५३, सूर्या० ५।३४

आज ११.३० को सेन्ट्रल बैंक गये। पेंशन के खाते से तीन हजार का चेक [illegible] फिक्स खाते से - सेविंग्स बैंक के खाते में एक हजार रुपये जमा किया। दो हजार साथ ले लिया। उसमें १०० रुपये [illegible] के लिये [illegible] रुपये [illegible] मजदूर [illegible] के लिये पांच सौ [illegible] - [illegible] को दिया गया। १०० रुपये [illegible] की धर्मपत्नी को दिया।

[illegible] की [illegible] लिया - [illegible]।
श्री [illegible] तिवारी जी से मिलने गये। वहां [illegible] [illegible] नहीं [illegible] गये [illegible] विश्राम किया। -

तिवारी [illegible] पूजा किये।
[illegible] ।

वस्तुके त्यागकी अपेक्षा वस्तुके महत्त्वका त्याग श्रेष्ठ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी। विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ।१०।
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्। एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा।११।
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते। अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते।१२।

mayi cānanyayogena bhaktiravyabhicāriṇī |
viviktadeśasevitvamaratirjanasaṁsadi || 10 ||
adhyātmajñānanityatvaṁ tattvajñānārthadarśanam |
etajjñānamiti proktamajñānaṁ yadato'nyathā || 11 ||
jñeyaṁ yattatpravakṣyāmi yajjñātvāmṛtamaśnute |
anādimatparaṁ brahma na sattannāsaducyate || 12 ||

त्रयोदशी-श्राद्ध — सूर्यो० ५।५३, सूर्या० ५।३३

आज प्रातः [illegible] बजे [illegible]
पकड़ कर [illegible] बनारस का बजी पहुँचे। रिक्शा का [illegible]
देकर मठमें पहुँचे।
पूजा करके हनुमान घाट के [illegible] में जप किया।
[illegible] के लिये [illegible] किये। [illegible]
[illegible] किये। [illegible] और १० [illegible]
आज के लिये। मठ का [illegible] कार्य [illegible] से [illegible] है।
[illegible] भी [illegible] है। [illegible]
गंगा [illegible] भी [illegible] है। [illegible]
सायंकाल [illegible] कहा [illegible]। मेरी [illegible] के
डा० [illegible] [illegible] हैं [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] गये हैं।
[illegible]
आज की [illegible] है। यह [illegible]
[illegible] है। [illegible] ध्यान देते हैं।
यह [illegible] गये?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-MoE-Grant-2

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति। १३।
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्। असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च। १४।
बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च। सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्। १५।

sarvataḥpāṇipādaṁ tatsarvato'kṣiśiromukham I
sarvataḥśrutimalloke sarvamāvṛtya tiṣṭhati II 13 II
sarvendriyaguṇābhāsaṁ sarvendriyavivarjitam I
asaktaṁ sarvabhṛccaiva nirguṇaṁ guṇabhoktṛ ca II 14 II
bahirantaśca bhūtānāmacaraṁ carameva ca I
sūkṣmatvāttadavijñeyaṁ dūrasthaṁ cāntike ca tat II 15 II

चतुर्दशी-श्राद्ध — सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ५।३२

मठ में पहुंच कर कार्यवृन्द देखा - कब्जू भू नहीं है। बालू चूना का अभाव बताकर गया बड़ है। १३ ता० की बैठक के लिये सम्पर्क किया गया। संबंधित सभी लोगों को सूचनायें दी गईं।

अपनी पेंशन के खाते से ४००० रुपये डाकखाना [illegible] बचत खाते में [illegible] में जमा किया। पांच सौ रुपये प्रमोद की पत्नी के दवा खाते को दिया - निर्माण कार्य हेतु लिया गया था उसे लौटाया। [illegible] उनकी पत्नी को पुनः [illegible] की दवा तथा [illegible] रुपये में [illegible] मिस्त्री आदि के लिये दिया।

किसी भी मनुष्य या प्राणीमें कोई भी गुण हो उसको ग्रहण करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्। भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।१६।
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते। ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।१७।
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः। मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते।१८।

avibhaktaṁ ca bhūteṣu vibhaktamiva ca sthitam ।
bhūtabhartṛ ca tajjñeyaṁ grasiṣṇu prabhaviṣṇu ca ॥ 16 ॥
jyotiṣāmapi tajjyotistamasaḥ paramucyate ।
jñānaṁ jñeyaṁ jñānagamyaṁ hṛdi sarvasya viṣṭhitam ॥ 17 ॥
iti kṣetraṁ tathā jñānaṁ jñeyaṁ coktaṁ samāsataḥ ।
madbhakta etadvijñāya madbhāvāyopapadyate ॥ 18 ॥

अमावास्या, पितृ-विसर्जन — सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ५।३१

आज पं० गुरुप्रसन्न शर्मा आये कलकी पूजा का आयोजन [illegible]। कल कलश स्थापना होगी। तथा [illegible] महानुष्ठान मंत्र का जप होगा।
सायंकाल तीसरे पहर राजेन्द्र [illegible] आ पहुँचे। मैं [illegible] जानता हूँ कि चन्द्रमणि तिवारी नहीं आवेंगे।
पर सायंकाल [illegible] राम [illegible] और कपिलदेव पांडे के भाई [illegible] आ पहुँचे।
समाचार का आदान प्रदान हुआ। — राजेन्द्र शर्मा आये। [illegible]

आश्विन शुक्ल १, रविवार, 13 OCT.

कल [illegible] की [illegible] गये। उनके भाई आवेंगे।

सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ५।३०

शारदीय नवरात्रारम्भ, मातामह-श्राद्ध

आज प्रातः गुरुप्रसन्न शर्मा [illegible] शर्मा दोनों भाई मठ में समय से आ गये। कलश स्थापना विधिवत् हुई और जप का [illegible] हुआ। [illegible] पंडितों के अतिरिक्त दे दिया।
[illegible] के [illegible] के निमित्त सामग्री [illegible] किया।
× × × ×

[illegible] में [illegible]-समिति के सदस्य राजेन्द्र [illegible] प्रमोद और मेरे [illegible] राजेन्द्र शर्मा [illegible] का [illegible]। [illegible] तथा [illegible]। [illegible]
और अनेक लोग आये [illegible] शर्मा ने [illegible]।
[illegible] १००१ [illegible]। [illegible] राम ने ५०० [illegible] दिये, राजेन्द्र [illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि। विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान्।१९।
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते। पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते।२०।
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्। कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु।२१।

prakṛtiṁ puruṣaṁ caiva viddhyanādī ubhāvapi |
vikārāṁśca guṇāṁścaiva viddhi prakṛtisambhavān || 19 ||
kāryakaraṇakartṛtve hetuḥ prakṛtirucyate |
puruṣaḥ sukhaduḥkhānāṁ bhoktṛtve heturucyate || 20 ||
puruṣaḥ prakṛtistho hi bhuṅkte prakṛtijānguṇān |
kāraṇaṁ guṇasaṅgo'sya sadasadyonijanmasu || 21 ||

सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ५।२९

[illegible] तिवारी बड़े कुटिल-धूर्त और स्वार्थी हैं।
ऐसे व्यक्ति का भोला [illegible]
आत्मप्रवंचना और बेवकूफी है। राजनीति में टिके हैं -
और आगे नहीं। राजनीतिज्ञ आज भी [illegible]
सिंहासन पर रहे और वहीं से चले जायेंगे।

सत्सङ्गसे इन्द्रिय संयम और मनकी शुद्धि होती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः । परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः । २२ ।
य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह । सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते । २३ ।
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना । अन्ये साङ्ख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे । २४ ।

upadraṣṭānumantā ca bhartā bhoktā maheśvaraḥ ।
paramātmeti cāpyukto dehe'sminpuruṣaḥ paraḥ ॥ 22 ॥
ya evaṁ vetti puruṣaṁ prakṛtiṁ ca guṇaiḥ saha ।
sarvathā vartamāno'pi na sa bhūyo'bhijāyate ॥ 23 ॥
dhyānenātmani paśyanti kecidātmānamātmanā ।
anye sāṅkhyena yogena karmayogena cāpare ॥ 24 ॥

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ५।२८

आज भी कोई काम नहीं हो सका। गंगा बालू
हरिश्चन्द्र घाट से खरीदा जायेगा। तीन ट्रैक्टर के लिए
७५० रुपये देने होंगे।
जूता कल ही आ गया। ३३० + ५० रुपये गाड़ी टाली का।
कुल तीन सौ अस्सी लगेगा।
प्रमोद जी ने भूल करके पानी जाने का रास्ता नहीं बनाया। कौन इतना परिश्रम करता है?

नारीका सर्वोत्तम और अनिवार्य आवश्यक गुण है—सतीत्व।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते। तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः। २५।
यावत्सञ्जायते किञ्चित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम्। क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ। २६।
समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्। विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति। २७।

anye tvevamajānantaḥ śrutvānyebhya upāsate |
te'pi 'cātitarantyeva mṛtyuṁ śrutiparāyaṇāḥ || 25 ||
yāvatsañjāyate kiñcitsattvaṁ sthāvarajaṅgamam |
kṣetrakṣetrajñasaṁyogāttadviddhi bharatarṣabha || 26 ||
samaṁ sarveṣu bhūteṣu tiṣṭhantaṁ parameśvaram |
vinaśyatsvavinaśyantaṁ yaḥ paśyati sa paśyati || 27 ||

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ५।२७

आज प्रातः मनोद के साथ दानापुर रेलवे पास के [illegible] के लिये प्रस्थान करके दानापुर पहुँचा। मगध एक्सप्रेस में एक सीट में बैठे थे। कंडक्टर ने उठाकर - शयनयान में जाने कहा। किसी [illegible] की सीट [illegible] के [illegible] उन्हें बैठाया। मैंने अपमान किया। [illegible] को नहीं माना।

वहां पहुंचने पर अनेक कठिनाइयों के बाद नागेन्द्र कुमार सिंह जी [illegible] वाला चेक [illegible] संध्याकाल में पू.उ. पर प्राप्त हुआ।

मगध एक्सप्रेस पकड़कर पौने नव बजे रात में चलकर और [illegible] से [illegible] पहुँचे। गोपालकुमार 'कृष्ण' मिले। जलपान के बाद विश्राम किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्। न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्।२८।
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः। यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति।२९।
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति। तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा।३०।

samaṁ paśyanhi sarvatra samavasthitamīśvaram |
na hinastyātmanātmānaṁ tato yāti parāṁ gatim || 28 ||
prakṛtyaiva ca karmāṇi kriyamāṇāni sarvaśaḥ |
yaḥ paśyati tathātmānamakartāraṁ sa paśyati || 29 ||
yadā bhūtapṛthagbhāvamekasthamanupaśyati |
tata eva ca vistāraṁ brahma sampadyate tadā || 30 ||

प्रातःकाल गंगा-स्नान किया। ७० मिनट सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२६
दिया कि पं० [illegible] की वाली तथा पास [illegible]
लोगों [illegible] आगया। [illegible] स्टेशन पहुँचे,
गाड़ी ७.४५ [illegible] मिनट की देरी और [illegible]
देना पड़ा। [illegible] से [illegible]।
[illegible] के [illegible] और [illegible] टैम्पो को
[illegible] किया। [illegible] बजे [illegible] पहुँचे।
[illegible] १० मिनट पैदल मठ में पहुँचे।
थोड़ी देर पहले [illegible] के [illegible] मिली।
[illegible] और कलकत्ता हावड़ा से [illegible]
के [illegible] दिये गये।
[illegible] है कि अब वार्षिक श्राद्ध किन्हीं कारणों से तत्काल
स्थगित हो गई है। पंडितों सहित अब [illegible] कहीं
जाना होगा। [illegible] की भी कोई [illegible]
नहीं है। अतः उस [illegible] को [illegible]
[illegible] है।
[illegible] निवेदन किया [illegible] से [illegible]
[illegible] काम [illegible] जायेंगे। [illegible] रहे हैं,
[illegible] है कि [illegible]।
[illegible] मेल में [illegible] किये। [illegible]
[illegible]
मालूम हुई।

सारे साधनोंका प्राण है—भगवान्‌का नाम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः । शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते। ३१।
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते। ३२।
यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः। क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत। ३३।

anāditvānnirguṇatvātparamātmāyamavyayaḥ |
śarīrastho'pi kaunteya na karoti na lipyate || 31 ||
yathā sarvagataṁ saukṣmyādākāśaṁ nopalipyate |
sarvatrāvasthito dehe tathātmā nopalipyate || 32 ||
yathā prakāśayatyekaḥ kṛtsnaṁ lokamimaṁ raviḥ |
kṣetraṁ kṣetrī tathā kṛtsnaṁ prakāśayati bhārata || 33 ||

आज प्रात: श्रीकृष्णठाकुर का पत्र [illegible] सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२५
[illegible] उदासीनता और [illegible] के लिये।
[illegible] प्रात: [illegible] मिला। उससे पुस्तक [illegible]
के प्रकाशन की [illegible] बातें हुई।
[illegible] श्री [illegible]
आये। उन्होंने [illegible] किये। उन्हें "[illegible]"
[illegible]
[illegible] रूपमें दी गई। [illegible]
[illegible] किया कर [illegible]।

जिसके कार्यसे हरि सन्तुष्ट होते हैं, असलमें वही सत्कर्मी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा। भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्।३४।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः।१३।

kṣetrakṣetrajñayorevamantaraṁ jñānacakṣuṣā |
bhūtaprakṛtimokṣaṁ ca ye viduryānti te param ||34||

सूर्यो० ५।५८, सूर्या० ५।२४

आज भी कल्लू चौकीदार की
प्रतीक्षा की गई किन्तु नहीं आया।
अब सम्भवतः दशहरा के बाद काम लग सकेगा।
आज महाविद्यालय प्राचार्य : श्री रामप्रसाद पाण्डेय
के २ तारीख को वार्षिक श्राद्ध के कार्यक्रम को स्थगित
करने की मजबूरी की खबर मिली।

श्री दीनानाथ सिंह की पत्नी भी बीमार हो कर अस्पताल
में थी। शिलान्यास का कार्यक्रम स्थगित ही रहेगा।
[illegible] के स्थगित होगा।

आश्विन शुक्ल ८, रविवार, 20 OCT.

आज वेणीपुर के [illegible]
राम जी [illegible] कुछ मदद देकर गये।

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२३

श्रीदुर्गाष्टमी-नवमीव्रत

किसी से राजेन्द्र पाण्डेय की
खबर लगा। उनका दुर्घटना हो गया। मैंने कहा कि
[illegible] पड़ी है! जब चाहें [illegible] जायें।

सायंकाल पं० [illegible] आये। [illegible]
[illegible] की योजना थी। [illegible]
प्रमोद जी आ [illegible] के लिए गये। [illegible]
[illegible] पंडित से भी यात्रा की [illegible] के बाद
२ बजे [illegible] से [illegible]
हुआ। [illegible] होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्। यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः। १।
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः। सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च। २।
मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्। सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत। ३।

śrībhagavānuvāca

paraṁ bhūyaḥ pravakṣyāmi jñānānāṁ jñānamuttamam |
yajjñātvā munayaḥ sarve parāṁ siddhimito gatāḥ || 1 ||
idaṁ jñānamupāśritya mama sādharmyamāgatāḥ |
sarge'pi nopajāyante pralaye na vyathanti ca || 2 ||
mama yonirmahadbrahma tasmingarbhaṁ dadhāmyaham |
sambhavaḥ sarvabhūtānāṁ tato bhavati bhārata || 3 ||

विजयादशमी — सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२२

आज रातमें बिजली -
डा० रामवचन शर्मा आगये। दिनमें दर्शनपूजनके बाद मैंने
भोजन किया - विस्तृत विचारविमर्श हुआ। शिवजी [illegible]
से गाथाकाव्य धारावाहिक प्रकाशित करने करके लिये
कहा। शास्त्रीजीने स्वीकारा। आयता [illegible] [illegible]
और कार्यक्रम कहा। विवाहादि की [illegible] [illegible]।

डा० वेदवती पटना लौट गये।
सन्ध्याकाल [illegible] [illegible] [illegible] आये।
समाचार विचारविमर्श हुआ। देवीमाके विसर्जन [illegible]
आये। विचारविमर्श होता रहा।

संसारकी महत्ताका असर होनेसे गुलामी आ जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः। तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता।४।
सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः। निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।५।
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्। सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ।६।

sarvayonișu kaunteya mūrtayaḥ sambhavanti yāḥ |
tāsāṁ brahma mahadyoniraham bījapradaḥ pitā ||4||
sattvaṁ rajastama iti guṇāḥ prakṛtisambhavāḥ |
nibadhnanti mahābāho dehe dehinamavyayam ||5||
tatra sattvaṁ nirmalatvātprakāśakamanāmayam |
sukhasaṅgena badhnāti jñānasaṅgena cānagha ||6||

पापांकुशा एकादशीव्रत — सूर्यो० ६।००, सूर्या० ५।२२

आज २१ हजार महामृत्युंजय जप की पूर्णाहुति हवन तथा रुद्राभिषेक सहित [illegible] हुआ। पं. [illegible] शास्त्री एवं [illegible] तथा तीन अन्य ब्राह्मण पंडितों ने पूरा किया। ब्राह्मण भोजन - [illegible] दक्षिणा [illegible] किया गया। [illegible] भोजन [illegible] मिलाकर कुल पांच सौ [illegible] शामिल हुए। श्री [illegible] भी संयोग से आ गये - [illegible] भोजन में शामिल हुए। मन में शांति हुई।

श्री [illegible] मिले थे। उन्होंने [illegible] के अपने नाम लिखित [illegible] पत्र को दिखाया जिसमें महत्व की बातें हैं। मैंने उनसे उस पत्र की फोटोस्टेट प्रति देने को कहा।

[illegible] "[illegible]" की प्रति [illegible] के बाद वापस की। अपराह्न [illegible] श्री [illegible] के साथ [illegible] आये। आप [illegible] सामाजिक [illegible] हैं। [illegible] व्यापार [illegible] तथा [illegible] रहें।

कामनाके कारण ही कमी है, कामनासे रहित होनेपर कोई कमी बाकी नहीं रहेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् । तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ।७।
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ।८।
सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत । ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत ।९।

rajo rāgātmakaṁ viddhi tṛṣṇāsaṅgasamudbhavam |
tannibadhnāti kaunteya karmasaṅgena dehinam || 7 ||
tamastvajñānajaṁ viddhi mohanaṁ sarvadehinām |
pramādālasyanidrābhistannibadhnāti bhārata || 8 ||
sattvaṁ sukhe sañjayati rajaḥ karmaṇi bhārata |
jñānamāvṛtya tu tamaḥ pramāde sañjayatyuta || 9 ||

[illegible] श्रीप्रमोद [illegible]

सूर्यो० ६।००, सूर्या० ५।२१

प्रत्येक को लेकर चल रहे, [illegible]।
ओरिएंटल से भी भागों में मिले। देर से आये।

पीछे फोन से बक्सर से [illegible] मिश्र ने खबर की थी
कि 1 नवंबर को वापसी न होकर दो नवंबर को वापसी
की व्यवस्था की जाय। तदनुसार [illegible]
व्यवस्था बनानी होगी।

भगवान् जाति, वर्ण, आश्रमकी महत्ता नहीं देखते, भक्तिसे प्राप्त होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत। रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।१०।
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत।११।
लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा। रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ।१२।

rajastamaścābhibhūya sattvaṁ bhavati bhārata |
rajaḥ sattvaṁ tamaścaiva tamaḥ sattvaṁ rajastathā || 10 ||
sarvadvāreṣu dehe'sminprakāśa upajāyate |
jñānaṁ yadā tadā vidyādvivṛddhaṁ sattvamityuta || 11 ||
lobhaḥ pravṛttirārambhaḥ karmaṇāmaśamaḥ spṛhā |
rajasyetāni jāyante vivṛddhe bharatarṣabha || 12 ||

प्रदोषव्रत सूर्यो० ६।१, सूर्या० ५।२०

आज रामविलास राय गाजीपुर के आये। वे दाल उदवाले के काम में आये थे और मुझसे मिलने आये। उन्होंने ग्यारह रुपये पूजा दिये। प्रमोद स्टेशन गये। २ बजे को आरक्षण धाम से का कार बार लौट आये। १० रुपये नाश्ते के १० रुपये टिकट रद्द के वापसी में दे दिया गया- मनोद पत्नी आए।

प्रभुनारायण सिंह जालपुर के आये - उनसे हरिदशमानंद की खबर मिली कि दाल और पैसा जुटा रहे हैं। समय से अपनी इच्छा होने पर आयेंगे।

स्वामी पूर्णप्रकाशानन्द केदारघाट में डेरा डाले और मंदिर बनवाने के नाम पर अपना अड्डा जमाने के काम की खबर मिली। इधर मंदिर के जयप्रकाश आदि सज्जनों ने कुछ मदद नहीं दी।

अच्छी मिली फिर नया बहुओं के पैसे भी वहीं में काम और समाप्त हो जाते हैं।

१. आज ब्रजनन्दन प्रसाद आये और मिलाप केन्द्र में एक हजार रुपये नगद दे गये।

कल्लू माता जी लोहा रोकड़ पाखि काल से अकाल काम भेज मंगाया मुझे इस भूति के आने की आशा नहीं।

जाननेका अर्थ है—विश्वास हो जाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च। तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन। १३।
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्। तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते। १४।
रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते। तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते। १५।

aprakāśo'pravṛttiśca pramādo moha eva ca I
tamasyetāni jāyante vivṛddhe kurunandana II 13 II
yadā sattve pravṛddhe tu pralayaṁ yāti dehabhṛt I
tadottamavidāṁ lokānamalānpratipadyate II 14 II
rajasi pralayaṁ gatvā karmasaṅgiṣu jāyate I
tathā pralīnastamasi mūḍhayoniṣu jāyate II 15 II

सूर्यो० ६।२, सूर्या० ५।१९

आज प्रमोद की बच्चियों की दवा के लिये
जब अपने पैसों की खोज की तो प्रमोद से एक-एक हुई।
उन्होंने कहा कि पैसे खतम हो गये।
[illegible] से
आज डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा को एक कार्डपत्र तथा
श्री विक्रमादित्य (बीरू)-फलादू को निमन्त्रणपत्र लिखा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्। रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम्। १६।
सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च। प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च। १७।
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः। जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः। १८।

karmaṇaḥ sukṛtasyāhuḥ sāttvikaṁ nirmalaṁ phalam |
rajasastu phalaṁ duḥkhamajñānaṁ tamasaḥ phalam || 16 ||
sattvātsañjāyate jñānaṁ rajaso lobha eva ca |
pramādamohau tamaso bhavato'jñānameva ca || 17 ||
ūrdhvaṁ gacchanti sattvasthā madhye tiṣṭhanti rājasāḥ |
jaghanyaguṇavṛttisthā adho gacchanti tāmasāḥ || 18 ||

शरत्पूर्णिमा, कार्तिक-स्नानारम्भ सूर्यो० ६।३, सूर्या० ५।१८

आज प्रातः सन्त स्वयंसेवक श्री प्रमोदकुमार दीक्षित के साथ [illegible] पहुँचे। इस गाँव से खबर देने पर श्री शशिकान्त जी प्रधानाचार्य [illegible] और उनके साथ उनकी गाड़ी से आकर घर विश्राम किया। कल ग्रामीण क्षेत्र के तीन सजातीय ब्राह्मण गाँवों की सार्वजनिक सभाओं में संस्कार संगठन और सामाजिक अभ्युदय के विन्दुओं पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य की पृष्ठभूमि में विचार रखना है।

कार्तिक कृष्ण १, रविवार, 27 OCT.

सूर्यो ६।३, सूर्या० ५।१८

आज धरमारा, अम्बा और बेवरे की पूर्व आयोजित सभाओं में मेरा बहुभावी व्याख्यान हुआ। दो सभाओं में प्रत्येक में सवा दो-दो घंटे बोलना रहा। तीसरी में डेढ़ घंटे तक व्याख्यान हुआ। पहली में सामान्य उपस्थिति भी -सौ डेढ़ सौ तथा दूसरी तीसरी में तीन से चार सौ अपने [illegible] स्वजातीय जन थे। बहुत प्रभावित हुए। मैंने राजगुरुमठ की ऐतिहासिकता, उसके सामाजिक गौरव-गरिमा के केन्द्र बनने और उसके जीर्णोद्धार के उद्देश्यों पर विशद प्रकाश डाला। नवजागरण का आलोक पहुँचाया। अभ्युदय के मार्ग पर बढ़ने का आह्वान किया। 90 [illegible] को [illegible] लौटकर विश्राम किया। आयोजन की रूपरेखा तथा सद्भावना यात्रा के उद्देश्य के संबंध में लोगों को बताया। वहाँ के लोग [illegible] और [illegible] किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति । गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति । १९ ।
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् । जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते । २० ।

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो । किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते । २१ ।

nānyaṁ guṇebhyaḥ kartāraṁ yadā draṣṭānupaśyati |
guṇebhyaśca paraṁ vetti madbhāvaṁ so'dhigacchati || 19 ||
guṇānetānatītya trīndehī dehasamudbhavān |
janmamṛtyujarāduḥkhairvimukto'mṛtamaśnute || 20 ||

arjuna uvāca

kairliṅgaistrīnguṇānetānatīto bhavati prabho |
kimācārah kathaṁ caitāṁstrīnguṇānativartate || 21 ||

आज डा० रामकिशोर चौधरी प्राध्यापक सूर्यो० ६।४, सूर्या० ५।१७
की कार से - समस्तीपुर जिले के पास बैजी-श्रीरामपुर अयोध्या
गये। वहाँ चौधरी राजनारायण शर्मा से भेंट करके उन्हें अपने
कार्यक्रम से परिचित कराया तथा साथ लेकर - मुजफ्फरपुर
लौट आये। १०० किलोमीटर की यात्रा डा० रामकिशोर चौधरी की
श्रद्धा एवं कृपा से सम्पन्न हुई। बीच में कुछ और लोगों से
मिलते आए। मुजफ्फरपुर जातीय भूमिहार ब्राह्मणों
का गढ़ है। बड़े प्रबुद्ध और जागरूक तथा सम्पन्न [illegible] लोग हैं।
यहां बाबू लंगट सिंह तथा श्री रामदयालु सिंह जैसे महान् देशभक्त
तथा लोकप्रिय(?) [illegible] नायक और शिक्षाविद हुए।
यहां श्री महेश प्रसाद सिंह जैसे महान् नेता, [illegible] और उदारमना
लोग हुए। यह शहीदों की धरती है। यहाँ बलिदानी वीर भी हुए
जिन्होंने देश की स्वतंत्रता में भाग लेकर उसे स्वतंत्र बनाया।
इस क्षेत्र से जगन्नाथ स्वामी [illegible] सरस्वती [illegible]
रहा। [illegible] में चौधरी राजनारायण शर्मा सहित
[illegible] को लिये [illegible] शर्मा के निवास पर ठहरा।
उनके दामाद का [illegible] और [illegible] भी था।
उनके दामाद जी ने स्वागत किया। [illegible] लौटकर [illegible]
[illegible] में [illegible] सम्मान भी मिली। [illegible]
श्रम किये लोग [illegible] स्वार्थी [illegible] और [illegible]
[illegible] है। पाखंडमूर्ति [illegible] सिद्धियों का ढिंढोरा पीटने वाला

निष्काम भक्तके समान भगवान्को कोई भी प्रिय नहीं है।

[illegible] लोगों के आचरणीय [illegible] है। [illegible]
[illegible] हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव। न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति। २२।
उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते। गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते। २३।
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः। तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः। २४।

śrībhagavānuvāca

prakāśaṁ ca pravṛttiṁ ca mohameva ca pāṇḍava ।
na dveṣṭi saṁpravṛttāni na nivṛttāni kāṅkṣati ॥ 22 ॥
udāsīnavadāsīno guṇairyo na vicālyate ।
guṇā vartanta ityeva yo'vatiṣṭhati neṅgate ॥ 23 ॥
samaduḥkhasukhaḥ svasthaḥ samaloṣṭāśmakāñcanaḥ ।
tulyapriyāpriyo dhīrastulyanindātmasaṁstutiḥ ॥ 24 ॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (करवाचौथ)   सूर्यो० ६।५, सूर्या० ५।१६

आज भी स्व० मुकुन्द शर्मा के आवास [illegible]
ठहरा, खाते पीते - पढ़ रहे। इनकी पत्नी भी मिलीं, वह
८५ वर्षों की वृद्धा हैं। स्मृति खो चुकी हैं।
इनकी बेटी मिली। उन्होंने मेरी मानस के उद्देश्य को तथा
रामानुजन के जीर्णोद्धार का महत्व और उसकी सामाजिक
उपादेयता की जानकारी भी प्राप्त किया।
रामानुजन की गौरव गाथा और इतिहास से जानकार
[illegible] कहा कि काम पहुंचकर
स्थिति की समीक्षा करूंगा और यथासंभव सहायता
करके कुछ बनवाऊंगा। पर उन्हें रोये खूसट, स्वार्थी
और मक्कार [illegible] परिवार से, कोई विशेष आशा नहीं।
[illegible] परिवार के डाक्टर - और उनकी पत्नी डाक्टर हैं,
अपार धन कमाते हैं। स्व० मुकुन्द शर्मा के अतिरिक्त
कुलकर्णी और [illegible] में कोठी के उपभोक्ता हैं -
स्वयं कमाते हैं। वकील का बैंक खाता भी [illegible]। उन्हें
इन लोगों से [illegible] - बैठने की फुरसत नहीं
तो - मदद क्या देंगे? दो दामादों में किन्हीं का [illegible]
कोठी दर्ती है, ६० रुपये के [illegible] किराये का
है। यह ६५ [illegible] की मानसिकता।

जहाँ राम तहँ काम नहि।

Rajsuri Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः । सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते । २५ ।
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते । स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते । २६ ।

mānāpamānayostulyastulyo mitrāripakṣayoḥ ।
sarvārambhaparityāgī guṇātītaḥ sa ucyate ॥ 25 ॥
māṁ ca yo'vyabhicāreṇa bhaktiyogena sevate ।
sa guṇānsamatītyaitānbrahmabhūyāya kalpate ॥ 26 ॥

सूर्यो० ६।६, सूर्या० ५।१५

आज भी स्व० मुकुन्द शर्मा के आवास पर पड़ा रहा। बातचीत रहा। अंदाजा रहा कि आनन्द रहते तो ज्योति से मिलते। अपना संदेश सुनाते तथा संपर्क बनाते।

किन्तु चौधरी राजनारायण शर्मा के साथ चिन्ता होता रहा। डा० रामजी और चौधरी पटने में अपनी संस्था - शिक्षक सम्मेलन में २५-३० दिनों के लिये गये हैं। इधर कोई खास नहीं। शिवपूजन प्रसाद सिंह और भुवनेश्वर सिंह - माननीय करी गये थे। ऐसा पता चला। यह भी पता लगा कि वे लोग संभवतः मुजफ्फरपुर लौटेंगे। इस बीच, केन्द्रीय कार्य अधीक्षक, बक्सर, आ० चंद्रशेखर मिश्र जी, रक्त में विशेष अस्वस्थ हो जाने के कारण रुक गये। क्योंकि कार्यक्रम के अंतर मुजफ्फरपुर नहीं पहुँच सके।

२ सायंकाल जब रामजी और चौधरी पटने से लौटकर आये तो उनके साथ हमलोग उनके आने का विचार पर लौट आये।

साधकके लिये दो ही बातें मुख्य हैं—संसारसे हटना और परमात्मामें लगना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च। शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च। २७।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः। १४।

brahmaṇo hi pratiṣṭhāhamamṛtasyāvyayasya ca |
śāśvatasya ca dharmasya sukhasyaikāntikasya ca || 27 ||

आज प्रातः त्रिवेणीप्रसाद सिंह से सूर्यो० ६।६, सूर्या० ५।१५
मिलने गये, वहीं भुवनेश्वर सिंह, रामचन्द्र मिश्र के मामा
जी भी साथ में उनके पुत्र थे। वहाँ से टहलते हुए
[illegible] शशिकिशोर चौधरी के [illegible] गये। सायंकाल
त्रिवेणीप्रसाद सिंह के साथ श्री रघुनाथ पाण्डेय जी,
[illegible] मंत्री [illegible] के यहाँ गये थे। उन्होंने
सम्मानपूर्वक मिलकर एक कार्य [illegible]
किया। पश्चात् बतलाया कि दीपावली के बाद आ जाइयेगा
और एक कार्य करवा दूंगा।
इसके पूर्व श्री ओम शर्मा के यहाँ गये - उन्होंने [illegible]
दैनिक [illegible], सभी बातें भी [illegible]
व्यय किया। [illegible] के बाद और
कुछ आश्वासन दिया कि कुछ करवा देंगे।
तदुपरान्त नागेन्द्र सिंह [illegible] मंत्री के यहाँ गये।
उनके भी [illegible] कैलाशपति [illegible]
उन्होंने एक [illegible] काशी [illegible]
के बाद कुछ और [illegible] करने का वचन दिया।
उनके भाई संजीव [illegible] सिंह संस्कृत [illegible]
प्राध्यापक हैं, उनकी माता भी [illegible]
[illegible] और संस्कृत संस्कार और आध्यात्मिक
[illegible] मूर्तिमान [illegible] माता
[illegible] किसी [illegible]

भगवान्, संत-महात्मा, धर्म और शास्त्र ये कभी किसीके विमुख नहीं होते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्। छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।१।
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः। अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके।२।
न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा। अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा।३।

śrībhagavānuvāca

ūrdhvamūlamadhaḥśākhamaśvattham prāhuravyayam |
chandāṁsi yasya parṇāni yastaṁ veda sa vedavit || 1 ||
adhaścordhvaṁ prasṛtāstasya śākhā guṇapravṛddhā viṣayapravālāḥ |
adhaśca mūlānyanusantatāni karmānubandhīni manuṣyaloke || 2 ||
na rūpamasyeha tathopalabhyate nānto na cādirna ca sampratiṣṭhā |
aśvatthamenaṁ suvirūḍhamūlamasaṅgaśastreṇa dṛḍhena chittvā || 3 ||

आज प्रातः त्रिवेणी प्रसाद सिंह के साथ सूर्यो० ६।७, सूर्या० ५।१४
श्री [illegible] ओझा - [illegible] आवासी
(शिवालावासी) के यहाँ गये। वे संगीत के प्रोफेसर
[illegible] के सहपाठी मित्र हैं। उनसे बहुत सी
बातें हुईं। वे अच्छे [illegible] और
[illegible] प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं। उन्होंने [illegible] कि कुछ
[illegible] मदद भेजेंगे।

उसके बाद त्रिवेणी प्रसाद सिंह और राजनारायण
शर्मा [illegible] के साथ - श्रीमान् महेश प्रसाद सिंह [illegible]
उमा सिंह के यहाँ गये। [illegible] उनके पास भी [illegible]
[illegible] भी उनके [illegible] हैं। उन्होंने [illegible]
काशी [illegible] तक [illegible]
[illegible] का [illegible] किया।

सायंकाल - [illegible] में महेश प्रसाद सिंह के
यहाँ [illegible] वे धूर्त और राजनीतिक [illegible] हैं। [illegible]
[illegible] का प्रदर्शन [illegible] के लिए [illegible]। [illegible]
[illegible] है, सोचते हैं।

सरल बनो, कपटकी बात छोड़ दो।

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः। तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।४। निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः। द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसञ्ज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।५। न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।६।

tataḥ padaṁ tatparimārgitavyaṁ yasmingatā na nivartanti bhūyaḥ I
tameva cādyaṁ puruṣaṁ prapadye yataḥ pravṛttiḥ prasṛtā purāṇī II 4 II
nirmānamohā jitasaṅgadoṣā adhyātmanityā vinivṛttakāmāḥ I
dvandvairvimuktāḥ sukhaduḥkhasañjñairgacchantyamūḍhāḥ padamavyayaṁ tat II 5 II
na tadbhāsayate sūryo na śaśāṅko na pāvakaḥ I
yadgatvā na nivartante taddhāma paramaṁ mama II 6 II

सूर्यो० ६।७, सूर्या० ५।१३

आज प्रातः समता एक्सप्रेस से मुजफ्फरपुर से काशी
लौटने के लिये प्रस्थान किया। [illegible] और [illegible]
स्टेशन पर देर लगी। जलपान [illegible] के लिये
दिया। और रामनारायण शर्मा जी [illegible] लौटे।
मैं सायंकाल [illegible] काशी लौट आया। [illegible] पहुँचे।
विश्राम किया।

कार्तिक कृष्ण ८, रविवार, 3 NOV.

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।१३

अहोईव्रत

आज पं० गुप्तेश्वर शर्मा आ गये। उनसे बहुविध
विषयों पर विमर्श हुआ। पत्रिका के भाग के संबंध में [illegible]
गई। बृहस्पतिवार को [illegible] [illegible]। प्रस्थान करके
मोगलसराय से [illegible] दिल्ली एक्सप्रेस पकड़कर
[illegible] से [illegible] हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः। मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।७।
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः। गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्।८।
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च। अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते।९।

mamaivāṁśo jīvaloke jīvabhūtaḥ sanātanaḥ ।
manaḥṣaṣṭhānīndriyāṇi prakṛtisthāni karṣati ॥7॥
śarīraṁ yadavāpnoti yaccāpyutkrāmatīśvaraḥ ।
gṛhītvaitāni saṁyāti vāyurgandhānivāśayāt ॥8॥
śrotraṁ cakṣuḥ sparśanaṁ ca rasanaṁ ghrāṇameva ca ।
adhiṣṭhāya manaścāyaṁ viṣayānupasevate ॥9॥

आज · महादेवराव जी आये। सूर्यो० ६।८, सूर्या० ५।१२

मुज़फ्फरपुर की यात्रा की चर्चा हुई। परिवार सबका उन्हें सुना

दिया · आत्मबाहनों और प्राप्ति का विवरण दिया।

मनुष्योंसे जितना कम हो सके बात करो, ज्यादा बात करो ईश्वरसे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्। विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः।१०।
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्। यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः।११।
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्।१२।

utkrāmantaṁ sthitaṁ vāpi bhuñjānaṁ vā guṇānvitam |
vimūḍhā nānupaśyanti paśyanti jñānacakṣuṣaḥ || 10 ||
yatanto yoginaścainaṁ paśyantyātmanyavasthitam |
yatanto'pyakṛtātmāno nainaṁ paśyantyacetasaḥ || 11 ||
yadādityagataṁ tejo jagadbhāsayate'khilam |
yaccandramasi yaccāgnau tattejo viddhi māmakam || 12 ||

सूर्यो० ६।९, सूर्यां० ५।११

आज प्रातः [illegible] आये। कार्तिक [illegible]
लकड़ी [illegible] [illegible] लगा कर दिया
[illegible] [illegible], दरवाजा जाली आदि लगाये जायें।

x x x

आज [illegible] की दिवाल तोड़कर दक्षिण पश्चिम की
नींव खोदी गई। नींव में पत्थर देकर ऊपर से
ईंटें आदि देकर [illegible] [illegible] [illegible]।
दिवाल की कुछ जोड़ाई हुई। शेष कल [illegible]।

अपनी भलाई करनेवालेकी भलाईको भूल जाना कृतघ्नता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा । पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ।१३।
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ।१४।
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च । वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ।१५।

gāmāviśya ca bhūtāni dhārayāmyahamojasā |
puṣṇāmi cauṣadhīḥ sarvāḥ somo bhūtvā rasātmakaḥ || 13 ||
ahaṁ vaiśvānaro bhūtvā prāṇināṁ dehamāśritaḥ |
prāṇāpānasamāyuktaḥ pacāmyannaṁ caturvidham || 14 ||
sarvasya cāhaṁ hṛdi sanniviṣṭo mattaḥ smṛtirjñānamapohanaṁ ca |
vedaiśca sarvairahameva vedyo vedāntakṛdvedavideva cāham || 15 ||

आज भी दीवाल पिटाई. सूर्यो० ६ । १०, सूर्या० ५ । १०

दिवाल की जोड़ाई आदि के काम हुए।
कल्लू को चिट्ठी के लिये 200 रुपये दिये गये।
गाड़ी कहीं है. कोई न आता है, न कुछ देता है. नाहि [illegible] और [illegible] हो रही है। यह समाज विचित्र है। इसमें स्वार्थी और लोभी तथा धूर्त ही अब अधिक हो रहे हैं। अतः पतन होता जा रहा है।

आप परमात्माके चेतन अंश हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।१६।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः। यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।१७।
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः। अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।१८।

dvāvimau puruṣau loke kṣaraścākṣara eva ca ।
kṣaraḥ sarvāṇi bhūtāni kūṭastho'kṣara ucyate ॥ 16 ॥
uttamaḥ puruṣastvanyaḥ paramātmetyudāhṛtaḥ ।
yo lokatrayamāviśya bibhartyavyaya īśvaraḥ ॥ 17 ॥
yasmātkṣaramatīto'hamakṣarādapi cottamaḥ ।
ato'smi loke vede ca prathitaḥ puruṣottamaḥ ॥ 18 ॥

रम्भा एकादशीव्रत सूर्यो० ६।१०, सूर्या० ५।१०

आज भी दिवाल जोड़ी जा रही है। मैं प्रमोद के साथ दरगीपुर की यात्रा पर निकला। रेलवे से मुगलसराय चला पर जाम लगने से टेम्पो में भी घंटे भर से अधिक समय लगा। मुगलसराय पहुँचने पर पंजाब दिल्ली एक्सप्रेस २॥ ढाई घंटे देर से आयी। मिर्जापुर पहुँचते पहुँचते सूर्यास्त हो गया।

बड़ी कठिनाई से दरगीपुर के एक युवक श्रीकृष्ण प्रकाश मिले। उन्होंने मैक्स में इलाहाबाद से आती एक बस पर हम लोगों को बैठा दिया। वह बस बहुत अँधेरे में पहुँची और गाँव के दक्षिण ही रुक गई। बड़ी कठिनाई से जाते जाते गाँव के पश्चिम उत्तर शम्भुनाथ मिश्र का द्वार ढूँढते ढूँढते पहुँचे। वे नहीं थे। उनकी पत्नी जी। रमाशंकर मिश्र, हरीप्रसाद मिश्र, चन्द्रमा मिश्र आदि शिष्य जुट गये। सबों ने बड़ा सम्मान किया - जलपान भोजन का प्रबन्ध किया। आराम का स्थान दिया - विश्राम किया गया।
कल पार्वती की व्यवस्था की है। शम्भुनाथ मिश्र के आने पर अतः आराम ही रहा।

परमात्माको हर जगह देखनेपर भय कहीं रहता ही नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

अ० १५] कार्तिक कृष्ण १२, सं० २०५३, शुक्रवार, NOV. 8. 1996 [दिन ३१३

यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम्। स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत।१९।
इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ। एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।२०।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः।१५।

yo māmevamasammūḍho jānāti puruṣottamam |
sa sarvavidbhajati māṁ sarvabhāvena bhārata || 19 ||
iti guhyatamaṁ śāstramidamuktaṁ mayānagha |
etadbuddhvā buddhimānsyātkṛtakṛtyaśca bhārata || 20 ||

वत्सद्वादशी, प्रदोषव्रत, धनतेरस — सूर्यो० ६।११, सूर्या० ५।९

आज श्री जानकीपुर [illegible] में हरिप्रसाद मिश्र के
यहाँ भोजन किया। सन्ध्या समय [illegible] के पास
गुरुदेव की पुरानी कुटी और गुफा का [illegible] देखा।
पहले यहाँ उन्होंने घोर तपस्या की। सकाम और सिद्धि प्राप्त
की। [illegible] स्वामी-स्वामी मधुसूदनानन्द सरस्वती (रेवतीपुर)
यहाँ रहते थे। बाद में बीस वर्ष तक ओंकारानन्द सरस्वती
[illegible] (बाबा) ([illegible] प्रतीक्षा के) रहते थे। यहाँ के
लोगों की इच्छा है कि कोई संत रहकर [illegible] कुटी का उद्धार
करदें। [illegible] कर दें।

रात में चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र के यहाँ जलपान किया।
और मैं ही गांव के बीच [illegible]
और मैं [illegible] का [illegible]।

संग्रह की हुई वस्तुओंका सदुपयोग करो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥१॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्। दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्॥२॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता। भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत॥३॥

śrībhagavānuvāca

abhayaṁ sattvasaṁśuddhirjñānayogavyavasthitiḥ |
dānaṁ damaśca yajñaśca svādhyāyastapa ārjavam ||1||
ahiṁsā satyamakrodhastyāgaḥ śāntirapaiśunam |
dayā bhūteṣvaloluptvaṁ mārdavaṁ hrīracāpalam ||2||
tejaḥ kṣamā dhṛtiḥ śaucamadroho nātimānitā |
bhavanti sampadaṁ daivīmabhijātasya bhārata ||3||

श्रीधन्वन्तरि-जयन्ती, नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमज्जयन्ती सूर्यो० ६।१२, सूर्या० ५।१८

आज ५ बजे भोर में ही स्नानादि [illegible]
कर लिया। मंगला गाय का पूजा थाली [illegible] आदि
दान दिया। गौशाला में भी पूजा की। कुल २५० रुपये मात्र
पूजा में लगे किन्तु श्रद्धा सन्तोष बहुत मिला।
रात आठ बजे [illegible] जोडडीह पहुँचे
श्री [illegible] शर्मा [illegible] मिले।
दिन में ज्ञानबहादुर के यहाँ भोजन [illegible] किया।

कार्तिक कृष्ण १४, रविवार, 10 NOV.

सूर्यो० ६।१३, सूर्या० ५।१८

दीपावली

दीपावलीकी ज्योति हमें यह चेतावनी दे रही है कि जिस प्रकार बाहर दीप-पंक्तिकी ज्योति फैल रही है, इसी प्रकार अन्तःकरणमें ज्ञानरूपी ज्योतिकी आवश्यकता है। जैसे बाहरकी इस ज्योतिसे बाह्य अन्धकार दूर हो जाता है, ऐसे ही अन्तःकरणकी ज्योतिसे आन्तरिक अज्ञान नष्ट होकर परमात्माका ज्ञान हो जाता है। अतः हृदयस्थ अज्ञानके नाशके लिये भीतरकी ज्योति जगानी चाहिये।

आज रात्रि जोडडीह की वाटिका में
गये। कुआं बना देखा। अमरूद
फले हुए हैं। अरहर और गेहूँ आदि
खेती में बोया गया है।
स्वस्तिक मिला। मैंने कहा कि
कुएं की जगत बनायी जाय।
दूसरे दिन रमाशंकर शर्मा के
यहाँ भोजन करके — [illegible]
भी ज्ञानबहादुर के [illegible] [illegible]
पूजा रूप में दिये। श्रद्धापूर्वक बहुत खिलाया।
प्रयाग रामबाग पहुँचे [illegible] के भाई [illegible] शर्मा
[illegible] बड़े स्टेशन गये [illegible] पकड़कर
[illegible] गये — [illegible] पहुँचे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्।४।
दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव।५।
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च। दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु।६।

dambho darpo'bhimānaśca krodhaḥ pāruṣyameva ca ।
ajñānaṁ cābhijātasya pārtha sampadamāsurīm ॥ 4 ॥
daivī sampadvimokṣāya nibandhāyāsurī matā ।
mā śucaḥ sampadaṁ daivīmabhijāto'si pāṇḍava ॥ 5 ॥
dvau bhūtasargau loke'smindaiva āsura eva ca ।
daivo vistaraśaḥ prokta āsuraṁ pārtha me śṛṇu ॥ 6 ॥

अमावास्या, अन्नकूट, गोवर्धनपूजा — सूर्यो० ६।१३, सूर्या० ५।७

आज भोर में प्रमोद के दोनों भाई - नारायण की पत्नी
तथा प्रमोद की पत्नियां [illegible] चली
गईं। श्री महर्षिदेव [illegible] फोन से [illegible]।
सायंकाल [illegible] आये [illegible]
हुआ - उन्होंने [illegible] और [illegible] आदि के संबंध में महर्षिदेव
राय से हुई बातों का विवरण सुनाया।
साथ ही उन्होंने बड़गावँ के कालेज में [illegible]
[illegible] के माध्यम से अपने लड़के के नामांकन की चर्चा की।
उनके जाने के बाद ही अंधेरा होने पर स्वामी महर्षिदेव [illegible]
आ गये। फाटक, [illegible], जाली, [illegible] तथा [illegible]
[illegible] आदि के जुगाड़ और यथा शीघ्र पश्चिमी फाटक
बनवा कर फर्श का काम प्रारम्भ करने की योजना बनी, सलाह हुई।
बाद में वे वापस गये।
सायंकाल बहुत से मित्र [illegible] आ
गये। प्रमोद के [illegible] तथा [illegible] के पुत्र।
आज सहसा पं० [illegible] त्रिपाठी जी आ गये। उन्होंने
[illegible] राजगुरु [illegible]' उन्हें [illegible] की

सृष्टिमेंसे मनको खींचकर स्रष्टामें लगाना ही वैराग्य है।

बैठक की बात [illegible] आज का आग्रह किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः। न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते।७।
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्। अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम्।८।
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः। प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः।९।

pravṛttiṁ ca nivṛttiṁ ca janā na vidurāsurāḥ ।
na śaucaṁ nāpi cācāro na satyaṁ teṣu vidyate ॥ 7 ॥
asatyamapratiṣṭhaṁ te jagadāhuranīśvaram ।
aparasparasambhūtaṁ kimanyatkāmahaitukam ॥ 8 ॥
etāṁ dṛṣṭimavaṣṭabhya naṣṭātmāno'lpabuddhayaḥ ।
prabhavantyugrakarmāṇaḥ kṣayāya jagato'hitāḥ ॥ 9 ॥

यमद्वितीया (भैयादूज) सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ५।७

आज मैंने मुजफ्फरपुर की मांग के संबंध में, बक्सर के केन्द्रीय कारा अधीक्षक आनन्देश्वर मिश्र को लंबा विवरणात्मक पत्र लिखकर सभी बातें, गतिविधि तथा व्यवहार शैली सहयोग आश्वासन तथा औचित्य [illegible] आदि के संबंध में पत्र लिख भेजा।

आज भी कल्लू आया। जल स्प्रिंट मार्बुल पत्थर सेफ्टी सील आदि की व्यवस्था होगी तथा मन्नाबाबू ने संपर्क करके मार्बुल पत्थर पास करके फर्श का कार्य प्रारंभ करने का कार्यक्रम बना।

डॉ० रामअवतार शर्मा का पत्र, तथा भोजपुरी पत्रिका डाक से आज मिले।

राजीवजी [illegible] उपाध्याय सहित आये। चौमासा के गंगा स्नान किया [illegible]।

खाना खाने के बाद गपशप करके पुनः स्थान में बच्चों को पढ़ाने के लिए अड्डा जमाना चाहते हैं।

रुपयेका महत्त्व अन्तःकरणमें आया तब रुपयेकी इच्छा पैदा हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः। मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः।१०।
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः। कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः।११।
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः। ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान्।१२।

kāmamāśritya duṣpūraṁ dambhamānamadānvitāḥ |
mohādgṛhītvāsadgrāhānpravartante'śucivratāḥ || 10 ||
cintāmaparimeyāṁ ca pralayāntāmupāśritāḥ |
kāmopabhogaparamā etāvaditi niścitāḥ || 11 ||
āśāpāśaśatairbaddhāḥ kāmakrodhaparāyaṇāḥ |
īhante kāmabhogārthamanyāyenārthasañcayān || 12 ||

सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ५।६

आज कल्लू नहीं आ सके। दिन भर प्रमोद कार्यों में प्रगति लाने हेतु व्यवस्था में दौड़ते रहे।

अपराह्न भोला मांझी रोशनाबाद के लकड़ी मिस्त्रियों को लेकर आये। उन लोगों से देवघर-समझाना और मापक तथा आलमारियाँ बनाने का निर्णय हुआ।

पहले अरविन्द राय से मिलकर [illegible] करने का निश्चय हुआ। अरविन्द राय के यहाँ प्रमोद गये और बातें हुईं। उन्होंने [illegible] प्राप्त करने की व्यवस्था बतायी-तदनुसार डा० कमलेन्द्र राय द्वारा श्रीशिवकुमार सिंह को फोन द्वारा सूचना दी गई।

मेरे लिये "बाप तीरथ" दवा [illegible] नहीं था। सायंकाल इलाहाबाद से गर्मियों में स्नान/जलपान की इच्छा नहीं रहती। डा० श्री शिवकुमार सिंह के यहाँ से दवा आयी। उससे कुछ तात्कालिक अस्थायी सहज मिली।

आज श्रीरामेश्वर पाण्डे-सिजरी कैरा का कार्ड मिला ऋषिकेश से। वे अक्टूबर २६-२७ को चले गये थे। रामजन्म राय से आलोक तिवारी कुलदेवी की मूर्ति बनाने के बारे में विमर्श से उन्हें अवगत कराया। कुछ दिन बाद सीताराम राय को गये। अपराह्न दैशाग्राम कैलाहाबाद से नेपाल पर आने के लिये आये।

जगत् दुःखी क्यों है? अपने मँगतेपन और कामनाके कारण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्। इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्।१३।
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि। ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी।१४।
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः।१५।

idamadya mayā labdhamimaṁ prāpsye manoratham ।
idamastīdamapi me bhaviṣyati punardhanam ॥ 13 ॥
asau mayā hataḥ śatrurhaniṣye cāparānapi ।
īśvaro'hamahaṁ bhogī siddho'haṁ balavānsukhī ॥ 14 ॥
āḍhyo'bhijanavānasmi ko'nyo'sti sadṛśo mayā ।
yakṣye dāsyāmi modiṣya ityajñānavimohitāḥ ॥ 15 ॥

सूर्यो० ६।१५, सूर्या० ५।६

आज कोई विशेष काम नहीं।
आलस्य में पड़े रहे। निर्माण कार्य की बात सोचते रहे।

आज मोट में [illegible] उनकी पत्नी [illegible]
प्रमोद कुमार की पत्नी प्रातः ही [illegible] चली गयीं।
और मैंने सीताराम राम की कमी [illegible] गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ।१६।
आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः। यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्।१७।
अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः। मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।१८।

anekacittavibhrāntā mohajālasamāvṛtāḥ |
prasaktāḥ kāmabhogeṣu patanti narake'śucau || 16 ||
ātmasambhāvitāḥ stabdhā dhanamānamadānvitāḥ |
yajante nāmayajñaiste dambhenāvidhipūrvakam || 17 ||
ahaṅkāraṁ balaṁ darpaṁ kāmaṁ krodhaṁ ca saṁśritāḥ |
māmātmaparadeheṣu pradviṣanto'bhyasūyakāḥ || 18 ||

सूर्यो० ६।१६, सूर्या० ५।६

आज लकड़ी मिली कोलोनी
प्रमोदकुमार महादेव रायके यहाँ गये। बातें की उनकी लेकर पश्चात लौटे। आठ के डिग्री सलुआकी जोमठमें लकड़ी भी करीब मिस्त्री के राल पर चीरने के लिये गई।

दो घंटेमें प्रमोदकुमार की भवैवी और मोलर जीन्यदंध आवश्यकतानुसार लकड़ियाँ चीरकर मठ में आ गई। करीब मिस्त्री को सिफ दे दी गई। ४००रुपये। उन्होंने पहले आन बीस रुपये लौटा दिये। छलीवाले को ७०रुपये रात्रि भाड़ा दिया जायेगा।
आठ बजे रात को महादेव रायसे मालोटी उजाला सीमेंट, दो पेटी शीशा, दो बोरी मवारी कोर्ट सामान मठमें भेज दिया।
कालोनी से लकड़ी का कार्य होगा।
कल रथ आठ बजे में। उनका पोता अस्पताल में था। चोट लगी थी। वे पूर्ण सीमेंट पत्थर आदि सामानकी व्यवस्था के लिये चले गये।
प्रमोद कुमार कहते हैं की कभी कुछ टकराइक के बाद गये गये। मैं लिखकर आज भी नाना रोज़ना अतिरिक्त था।
मैंने रामकिशोर पांडे और राजनीति मिश्रको पत्र लिख भेजा।

आप लखपति नहीं, लखदास हो और पराधीन हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् । उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ।१०।
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते । यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ।११।
अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् । इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ।१२।

yātayāmaṁ gatarasaṁ pūti paryuṣitaṁ ca yat |
ucchiṣṭamapi cāmedhyaṁ bhojanaṁ tāmasapriyam || 10 ||
aphalākāṅkṣibhiryajño vidhidṛṣṭo ya ijyate |
yaṣṭavyameveti manaḥ samādhāya sa sāttvikaḥ || 11 ||
abhisandhāya tu phalaṁ dambhārthamapi caiva yat |
ijyate bharataśreṣṭha taṁ yajñaṁ viddhi rājasam || 12 ||

सूर्यो० ६ । २२, सूर्या० ५ । ३

कार्तिक शुक्ल १४, रविवार, 24 NOV.

सूर्यो० ६ । २३, सूर्या० ५ । ३

व्रत-पूर्णिमा

आज न्याय समिति की बैठक हुई। डा० योगेन्द्र नाथ. राजेन्द्र शर्मा. [illegible] चन्द्रकान्त तिवारी. प्रमोद कुमार और मेरे अतिरिक्त श्री [illegible] के अवधकुमार सिंह [illegible]. [illegible] आये। [illegible] कार्य की समीक्षा हुई और सभी न्यायियों से [illegible] [illegible] के प्रयोग [illegible] के [illegible] । [illegible] सुझाये.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्। श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते।१३।
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्। ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते।१४।
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।१५।

vidhihīnamasṛṣṭānnaṁ mantrahīnamadakṣiṇam ।
śraddhāvirahitaṁ yajñaṁ tāmasaṁ paricakṣate ॥ 13 ॥
devadvijaguruprājñapūjanaṁ śaucamārjavam ।
brahmacaryamahiṁsā ca śārīraṁ tapa ucyate ॥ 14 ॥
anudvegakaraṁ vākyaṁ satyaṁ priyahitaṁ ca yat ।
svādhyāyābhyasanaṁ caiva vāṅmayaṁ tapa ucyate ॥ 15 ॥

पूर्णिमा, कार्तिक-स्नान समाप्त सूर्यो० ६।२४, सूर्या० ५।३

आज सोमवार कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर श्री [illegible] सविधि तीन सनातनी पंडितों द्वारा रुद्राभिषेक एवं [illegible] का पाठ हुआ। सौभाग्यवश प्रयाग उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री [illegible] सहयोग में गंगा [illegible] प्रसन्न हुए तथा समारोह की [illegible]। अपराह्न गुप्तेश्वर स्वामी के अनुरोध पर [illegible] गया। गंगा तट स्थित नवनिर्मित घाट पर गये वहाँ भी [illegible] के सहयोग से [illegible] संस्थान में कम्प्यूटर केन्द्र स्थापना का उद्घाटन किया। साथ में प्रमोद कुमार दीक्षित एवं [illegible] भी [illegible] महत्वपूर्ण [illegible]।

निर्धनतासे नहीं, अपितु याचनासे आदमीकी दीनता प्रकट होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः । भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते । १६ ।
श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः । अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते । १७ ।
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत् । क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् । १८ ।

manaḥprasādaḥ saumyatvaṁ maunamātmavinigrahaḥ ।
bhāvasaṁśuddhirityetattapo mānasamucyate ॥ 16 ॥
śraddhayā parayā taptaṁ tapastattrividhaṁ naraiḥ ।
aphalākāṅkṣibhiryuktaiḥ sāttvikaṁ paricakṣate ॥ 17 ॥
satkāramānapūjārthaṁ tapo dambhena caiva yat ।
kriyate tadiha proktaṁ rājasaṁ calamadhruvam ॥ 18 ॥

सूर्यो० ६ । २५, सूर्या० ५ । ३

आश्वासन देकर भी श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह, गाँव में नहीं आये।

मैंने [illegible] डा० रामनरेश पाण्डेय, श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह - [illegible] पाण्डेय के [illegible] को [illegible] तथा [illegible] खेद प्रकट किया। [illegible] स्वामी [illegible] को भी [illegible] प्रकट किया।

सायंकाल श्री [illegible] आये। स्वामी [illegible] [illegible] के [illegible] और मैंने [illegible] किया। मेरे एवं श्री [illegible] का मत प्रायः समान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः। परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्।१९।
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।२०।
यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः। दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्।२१।

mūḍhagrāheṇātmano yatpīḍayā kriyate tapaḥ |
parasyotsādanārthaṁ vā tattāmasamudāhṛtam || 19 ||
dātavyamiti yaddānaṁ dīyate'nupakāriṇe |
deśe kāle ca pātre ca taddānaṁ sāttvikaṁ smṛtam || 20 ||
yattu pratyupakārārthaṁ phalamuddiśya vā punaḥ |
dīyate ca parikliṣṭaṁ taddānaṁ rājasaṁ smṛtam || 21 ||

आज अपने कमरे के एक मुलाकाती हुए
सूर्या० ६।२५, सूर्या० ५।३
[illegible] कहते और [illegible] रूप है मुझे
भी [illegible] देखा। लखीमपुर के [illegible] भी [illegible]
[illegible] के [illegible] में
[illegible] व्यतीत करते रहे।
लखनऊ में उनके पुत्र [illegible] के यहाँ उनका देहावसान
हुआ था।
आज भी [illegible] की [illegible] मिले रहे।
[illegible] चाहते
हैं। [illegible] को [illegible] गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते। असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्।२२।
ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः। ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।२३।
तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः। प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्।२४।

adeśakāle yaddānamapātrebhyaśca dīyate ।
asatkṛtamavajñātaṁ tattāmasamudāhṛtam ॥ 22 ॥
oṁ tatsaditi nirdeśo brahmaṇastrividhaḥ smṛtaḥ ।
brāhmaṇāstena vedāśca yajñāśca vihitāḥ purā ॥ 23 ॥
tasmādomityudāhṛtya yajñadānatapaḥkriyāḥ ।
pravartante vidhānoktāḥ satataṁ brahmavādinām ॥ 24 ॥

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत   सूर्यो० ६।२६, सूर्या० ५।३

श्री डा० आनन्द प्रताप सिंह की भेंट हुई की खबर
ज्ञानप्रकाश यादव-कुल सचिव, इन्जीनियरिंग के सहित। विश्वविद्यालय
के अन्यान्य विभागों के प्राध्यापकों एवं व्याख्याताओं
में सम्मिलित हुए। मणिक चित्रा चाटर्जी उनकी भेंट कर
हुई। पोद्दार आदि कि श्री आचार्य जी मंगाया।
कृष्णकान्त बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार के लिये दूध के
बदले ५० रुपये - प्रमोद पति को दे दिया।

जो अदृश्य है वह मिटनेवाला नहीं, जो दृश्य है वह मिटेगा ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्। ३७।
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् । परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम्। ३८।
यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः। निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्। ३९।

yattadagre viṣamiva pariṇāme'mṛtopamam I
tatsukhaṁ sāttvikaṁ proktamātmabuddhiprasādajam II 37 II
viṣayendriyasaṁyogādyattadagre'mṛtopamam I
pariṇāme viṣamiva tatsukhaṁ rājasaṁ smṛtam II 38 II
yadagre cānubandhe ca sukhaṁ mohanamātmanaḥ I
nidrālasyapramādotthaṁ tattāmasamudāhṛtam II 39 II

सूर्यो० ६।३९, सूर्या० ५।६

आज जंगल में [illegible]
[illegible] दानवेन्द्र का काम पूरा हो गया।
स्वामी हरिदर्शनानन्द को [illegible] के लिये [illegible] भेजा।

आप स्वच्छन्द संसारके क्षुद्र बन्धनोंसे मुक्त आत्मा हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः। सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः।४०।
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप। कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।४१।
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।४२।

na tadasti pṛthivyāṁ vā divi deveṣu vā punaḥ |
sattvaṁ prakṛtijairmuktaṁ yadebhiḥ syāttribhirguṇaiḥ || 40 ||
brāhmaṇakṣatriyaviśāṁ śūdrāṇāṁ ca parantapa |
karmāṇi pravibhaktāni svabhāvaprabhavairguṇaiḥ || 41 ||
śamo damastapaḥ śaucaṁ kṣāntirārjavameva ca |
jñānaṁ vijñānamāstikyaṁ brahmakarma svabhāvajam || 42 ||

सूर्यो० ६।४०, सूर्या० ५।६

आज स्वामी विश्वानंद गिरि महामंडलेश्वर
महर्षि [illegible] कैलाश आश्रम की [illegible] के [illegible] में व
अमृत [illegible] के प्रकाश [illegible] प्रकाशित लेख, [illegible]
[illegible] के सदैव [illegible]
गया। आज ही रामरूप पांडे [illegible] हैं तथा सहस्त्र एवं
और [illegible] लिफाफे के २५ [illegible] तथा अन्य
आवश्यक कागजों के पत्र लिखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्। दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्।४३।
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।४४।
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु।४५।

śauryaṁ tejo dhṛtirdākṣyaṁ yuddhe cāpyapalāyanam ।
dānamīśvarabhāvaśca kṣātraṁ karma svabhāvajam ॥ 43 ॥
kṛṣigaurakṣyavāṇijyaṁ vaiśyakarma svabhāvajam ।
paricaryātmakaṁ karma śūdrasyāpi svabhāvajam ॥ 44 ॥
sve sve karmaṇyabhirataḥ saṁsiddhiṁ labhate naraḥ ।
svakarmanirataḥ siddhiṁ yathā vindati tacchṛṇu ॥ 45 ॥

सूर्यो० ६।४०, सूर्या० ५।७

आज प्रमोद जी आ गये। ककड़ी मिसी को एक हजार रुपये दिये गये। कल्लू का भी हिसाब हुआ। उन्हें २६०० रुपये देना है तथा ककड़ी मिसी को लगभग १५००।

आज रजनीत राय को एवं राजेश पाडे को भी पत्र भेजा, तथा २१ दिसम्बर की बैठक में कुछ सहयोग, सुझाव लोगों का अपेक्षित किया। डा० चन्द्रेमान्द मिश्र को भी पत्र भेजकर बैठक में आने का अनुरोध किया।

पवहार से पंचांग के सम्बन्ध बातें की ५०० रुपये कागज के लिये प्रमोद को एडवान्स दिया।

श्री पारसनाथ साही को तथा वीरेन्द्र नाथ शर्मा बैरिस्टर को भी पत्र भेजा। कल्लू को औषधि के लिये २० रुपये दिया। पहले भी पाँच रुपये दिये गये थे जिससे दो हफ्ते की ही औषधि आ सकी थी।

भगवान्‌से प्रार्थना करनी चाहिये कि आपकी निरन्तर स्मृति बनी रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि । अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ।५८।
यदहङ्कारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे । मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति ।५९।
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा । कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत् ।६०।

maccittaḥ sarvadurgāṇi matprasādāttariṣyasi |
atha cettvamahaṅkārānna śroṣyasi vinaṅkṣyasi || 58 ||
yadahaṅkāramāśritya na yotsya iti manyase |
mithyaiṣa vyavasāyaste prakṛtistvāṁ niyokṣyati || 59 ||
svabhāvajena kaunteya nibaddhaḥ svena karmaṇā |
kartuṁ necchasi yanmohātkariṣyasyavaśo'pi tat || 60 ||

पूर्णिमा   सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।१०

आज स्वामी चिदानंद गिरि जी महाराज का पत्र प्राप्त हुआ। अमृत महोत्सव पर न पहुँचने की चर्चा की। मैंने तुरन्त उत्तर लिख भेजा। श्री अवधेश प्रसाद सिंह का [illegible] फोन किया कि [illegible] जा रहे हैं, मना कर [illegible]। वे लोग कुछ [illegible] नहीं चाहते हैं। राजनीतिक [illegible] है। बातें करते हैं। डा० राजाराम शर्मा - श्रीरामपुर - अयोध्या का० [illegible] को पत्र लिखा।

आज [illegible] शर्मा [illegible] चार सौ रुपये [illegible] कोष के लिये दे गये। कल [illegible] में [illegible] लेंगे। डा० [illegible] [illegible] से दो किलो [illegible]।

सद्विचारोंके परायण होना ईश्वरकी कृपाका चिह्न है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति । भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ।६१।
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत । तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ।६२।
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया । विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ।६३।

īśvaraḥ sarvabhūtānāṁ hṛddeśe'rjuna tiṣṭhati ।
bhrāmayansarvabhūtāni yantrārūḍhāni māyayā ॥ 61 ॥
tameva śaraṇaṁ gaccha sarvabhāvena bhārata ।
tatprasādātparāṁ śāntiṁ sthānaṁ prāpsyasi śāśvatam ॥ 62 ॥
iti te jñānamākhyātaṁ guhyādguhyataraṁ mayā ।
vimṛśyaitadaśeṣeṇa yathecchasi tathā kuru ॥ 63 ॥

सूर्यो० ६।४३, सूर्या० ५।१०

~~आज मालवीय [illegible] के अवसर पर [illegible]~~
~~[illegible]~~

भ्रम से लिखित

आज न्यास समिति के सदस्य [illegible]
[illegible]

किसीकी सेवा करके यह मत मानो कि हमने उसका उपकार किया है।

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः। इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्। ६४।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे। ६५।
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः। ६६।

sarvaguhyatamaṁ bhūyaḥ śṛṇu me paramaṁ vacaḥ I
iṣṭo'si me dṛḍhamiti tato vakṣyāmi te hitam II 64 II
manmanā bhava madbhakto madyājī māṁ namaskuru I
māmevaiṣyasi satyaṁ te pratijāne priyo'si me II 65 II
sarvadharmānparityajya māmekaṁ śaraṇaṁ vraja I
ahaṁ tvā sarvapāpebhyo mokṣayiṣyāmi mā śucaḥ II 66 II

सूर्यो० ६।४४, सूर्या० ५।११

आज श्री राजनरेश पाण्डेय और
श्री राजनीति[illegible] व [illegible] श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह को पत्र लिख
कर [illegible] [illegible] में भेज [illegible],

आज
कल श्री [illegible] दर्भंगा, समस्तीपुर
तथा राजनरेश पाण्डे [illegible] और स्वामी
[illegible] को पत्र लिखे गये।
कल स्वामी [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] दिया है।
आज स्वामी हरिदेवानन्द को एक पत्र भेजा।

विश्वास करो कि भगवान्‌से विरहित संसार सर्वथा सब ओरसे दुःखमय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKṢ-MoE-Grant-2

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन। न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति।६७।
य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति। भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः।६८।
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः। भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि।६९।

idaṁ te nātapaskāya nābhaktāya kadācana ।
na cāśuśrūṣave vācyaṁ na ca māṁ yo'bhyasūyati ॥ 67 ॥
ya imaṁ paramaṁ guhyaṁ madbhakteṣvabhidhāsyati ।
bhaktiṁ mayi parāṁ kṛtvā māmevaiṣyatyasaṁśayaḥ ॥ 68 ॥
na ca tasmānmanuṣyeṣu kaścinme priyakṛttamaḥ ।
bhavitā na ca me tasmādanyaḥ priyataro bhuvi ॥ 69 ॥

सूर्यो० ६।४४, सूर्या० ५।११

आज स्वामी हरिदर्शनानन्द। [illegible] से
23 किलो गेहूं [illegible] पांच किलो गुड़ भी
[illegible] आये।

जो मनुष्य अभिमानी होता है वह प्रभुभक्त नहीं हो सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः। ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः।७०।
श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः। सोऽपिमुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्।७१।
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा। कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय।७२।

adhyeṣyate ca ya imaṁ dharmyaṁ saṁvādamāvayoḥ I
jñānayajñena tenāhamiṣṭaḥ syāmiti me matiḥ II 70 II
śraddhāvānanasūyaśca śṛṇuyādapi yo naraḥ I
so'pi muktaḥ śubhā̐llokānprāpnuyātpuṇyakarmaṇām II 71 II
kaccidetacchrutaṁ pārtha tvayaikāgreṇa cetasā I
kaccidajñānasammohaḥ pranaṣṭaste dhanañjaya II 72 II

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत — सूर्यो० ६। ४५, सूर्या० ५। १२

अपराह्न हेरम्ब राम वीरपुर से आये। प्रमोद जी
नहीं आये। हरिशंकर जी कल सेमि आये हैं महामहोपा
ध्याय के लिये अत्यन्त बेचैन हैं। पेट फूलने और
पेट टाइट होने और अनेक गैस का उत्पन्न उद्देश्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत। स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव। ७३।

सञ्जय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः। संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्। ७४।

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम्। योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्। ७५।

arjuna uvāca

naṣṭo mohaḥ smṛtirlabdhā tvatprasādānmayācyuta ।
sthito'smi gatasandehaḥ kariṣye vacanaṁ tava ॥ 73 ॥

sañjaya uvāca

ityahaṁ vāsudevasya pārthasya ca mahātmanaḥ ।
saṁvādamimamaśrauṣamadbhutaṁ romaharṣaṇam ॥ 74 ॥
vyāsaprasādācchrutavānetadguhyamahaṁ param ।
yogaṁ yogeśvarātkṛṣṇātsākṣātkathayataḥ svayam ॥ 75 ॥

सूर्यो० ६।४५, सूर्या० ५।१२

आज स्वामी हरिश्चन्द्रानन्द सरस्वती
को पुनः उन्हें. उनके उपेक्षा करने के आवेदन पत्र लिख भेजा।
स्वामी शिवानी को पत्र - श्री कैलाश राय को पत्र।
श्री प्रमोद कुमार दीक्षित जी को पत्र लिखकर वैधानिक
सीमा प्रमाणपत्र भेजा जायेगा।
स्वामी हरिश्चन्द्रानन्द को पुनः इसरा पत्र. तथा
डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा को भी कार्यवाहक पत्र लिखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।७८।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसन्न्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः।१८।

yatra yogeśvaraḥ kṛṣṇo yatra pārtho dhanurdharaḥ |
tatra śrīrvijayo bhūtirdhruvā nītirmatirmama || 78 ||

सूर्यो० ६। ४६, सूर्या० ५। १३

आज [illegible] राम., पं० रामधर राय शर्मा,
संन्यासी : [illegible] स्वामी श्री [illegible] सरस्वती जी ने. तथा [illegible] जी
[illegible] : [illegible] मठ में मिलना और [illegible] किया
[illegible] सत्संग [illegible], मठ के अधिष्ठान की
[illegible] मठ में [illegible] वातावरण। [illegible]
बनाएं. [illegible] रहे हैं. इसके बाद भी [illegible]
कठिन होगा और मठ की स्थिति दयनीय हो जायेगी।

चित्तकी शान्ति ही सुख है और चित्तकी अशान्ति ही दुःख है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते॥ जय०
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्तिहरा।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि, तारिणि परमानन्दप्रदा॥ जय०
आसुर-भाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी॥ जय०
समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै॥ जय०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

"महामृत्युञ्जय मंत्र"–

ॐ ह्रौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।"
ॐ सः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ ह्रौं ॐ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Our English Publications

कोड		मूल्य		डाकखर्च
457	Shrimad Bhagavadgita-Tattva-Vivechani (*By Jayadayal Goyandka*) Detailed Commentary, Pages736	35.00	■	8.00
458	Shrimad Bhagavadgita-Sadhak-Sanjivani (*By Swami Ramsukhdas*) (English Commentary)Pages 896	45.00	■	8.00
459	„ „ Pocket size, Vol.I	20.00	■	2.00
490	„ „ „ Vol.II	20.00	■	3.00
493	Shrimad Bhagavadgita— The Gita—A Mirror (Pocket size)	20.00	■	3.00
455	Bhagavadgita (With Sanskrit Text and English Translation) Pocket size	3.50	■	1.00
470	Bhagavadgita-Roman Gita (With Sanskrit Text and English Translation)	10.00	■	2.00
487	Gita Madhurya—English (*By Swami Ramsukhdas*) Pages 155	8.00	▲	1.00
452	Shrimad Valmiki Ramayana (With Sanskrit Text and English Translation) Part I	80.00	■	8.00
453	„ „ Part II	80.00	■	8.00
454	„ „ Part III	90.00	■	8.50
456	Shri Ramacharitamanas (With Hindi Text and English Translation)	70.00	■	8.50
	by Jayadayal Goyandka			
477	Gems of Truth [Vol. I] Pages 204	5.00	▲	1.00
478	„ „ [Vol. II]	5.00	▲	1.00
479	Sure Steps to God-Realization	8.00	▲	2.00
482	What is Dharma? What is God?	1.00	▲	1.00
480	Instructive Eleven Stories	2.50	▲	1.00
520	Secret of Jnana Yoga	5.00	▲	1.00
521	„ „ Prem Yoga	4.00	▲	1.00
522	„ „ Karma Yoga	5.00	▲	2.00
523	„ „ Bhakti Yoga	7.50	▲	2.00
658	Secrets of Gita	4.00	▲	1.00
	by Hanuman Prasad Poddar			
484	Look Beyond the Veil	7.00	▲	1.00
622	How to Attain Eternal Happiness ?	6.00	▲	1.00
483	Turn to God			
485	Path to Divinity Pages 166	6.00	▲	1.00
	by Swami Ramsukhdas			
498	In Search of Supreme Abode	4.00	▲	1.00
619	Ease in God-Realization	4.00	▲	1.00
471	Benedictory Discourses	3.50	▲	1.00
473	Art of Living Pages 124	3.00	▲	1.00
472	How to Lead A Household Life	3.00	▲	1.00
620	The Divine Name and Its Practice	2.50	▲	1.00
486	Wavelets of Bliss & the Divine Message	1.50	▲	1.00
570	Let us Know the Truth Pages 92			
638	Sahaj Sadhna			
474	Be Good			
497	Truthfulness of Life			
476	How to be Self-Reliant	1.00	▲	1.00
552	Way to Attain the Supreme Bliss	1.00	▲	1.00
494	The Immanence of God (*By Madanmohan Malaviya*)	0.30	■	1.00
562	Ancient Idealism for Modernday Living	1.00	▲	1.00

Subscribe our English Monthly

THE KALYANA-KALPATARU

Oct. to Sept. Subscription Rs. 50.00

"WOMAN-NUMBER"

(Vol. XLI No. 1 October 1995)

गीताप्रेस गोरखपुरसे प्रकाशित

''कल्याण''

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार एवं साधन–सम्बन्धी मासिक पत्र

'कल्याण' वर्ष ७० (सन् १९९६ ई०) का विशेषाङ्क

''धर्मशास्त्राङ्क''

वार्षिक शुल्क रु० ८०.०० (सजिल्द रु० ९०.००) डाकखर्चसहित

स्वयं ग्राहक बनें—दूसरोंको ग्राहक बनावें, दस वर्षीय शुल्क रु० ५०० (रु० ६०० सजिल्द)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

प्रा० आवश्यक पते :→

(१) डा० लक्ष्मी नारायण तिवारी, 'प्रोफेसर-निदेशक' मोतीलाल-केहरचन्द-इंस्टिट्यूट आफ इन्डोलॉजी २०वाँ किलोमी० जी०टी० करनाल रोड, दिल्ली 110036
दूरभाष — Phone - 720.2065.

(२) त्रिपुरारी राय- संस्थापक-अध्यक्ष, श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती- हितकारिणी- समाज 109. पी०, आश्रमबाग- नई दिल्ली, 110055

(३) पं० श्यामनन्दन मिश्र- (पूर्व विदेश-मंत्री) 2, सविता-विहार, नई दिल्ली, 110092
फोन- दूरभाष —— 223431 97.

(४) श्री हरिकृष्ण ठाकुर, सरस्वती- सदन, पटना
राजेन्द्र नगर — रोड नं० 12
पटना — 800016
फोन — 650045 S.T.D. Code. 0612.

(५) श्री सुरेन्द्रनाथ राय, अभियन्ता,
सेक्टर — 4F, क्वार्टर नं० 3141
बोकारो- स्टील-सिटी, बोकारो, 827004

(६) डा० रामकरण शर्मा. ६३, विज्ञानविहार, नईदिल्ली 110092.

(७) पं० कैलाशपति मिश्र — भारतीय जनता पार्टी कार्यालय,
क्वार्टर नं० 7; वीरचन्द पटेल मार्ग. पटना.

(८)
दिनेश कुमार पाण्डेय - सेक्टर नं० 3, बी
क्वार्टर नं० 449, बोकारो स्टील सिटी
बोकारो. बिहार

(९) श्री डी० पी० सिंह, "तीर्थङ्कर डिजाइन"
111.A. आशियाना-प्लाजा, बुद्ध मार्ग
पटना - 800001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS MoE Grant-2

श्री महेश पाण्डेय - टाटा - फोन - 4875585
टेलको सरीया।

स्मरण-पत्र

(१०) श्री रामप्रवेश शास्त्री, B। २९९,
इन्दिरानगर कॉलोनी, लखनऊ

(११) डा० एस० वी० सोहोनी, २, मनाली, प्रभात रोड, (१५)
पुणे - ४११००४.

Dr. S.V. Sohoni, Manali
Prabhat Road (15) Pune 411 004.

(१२) श्री राधेश्याम पाण्डेय (श्री महेश पाण्डेय के पुत्र
सिमरी बकुलाहा पट्टी, बक्सर)
लालडेंगा - Laldenga.
पो० आद्रा, जिला- पुरुलिया (पश्चिम बंगाल)
(श्री शिवपूजन शास्त्री, सिमरी बकुलाहा के छोटे भाई)

(१३) श्री रामेश्वर शर्मा - बादीपुर - ग्राम
पो० चिरैयाँ - जिला - पटना.

(१४) श्री महाकवि भिक्षु नागार्जुन,
बी १३१, सादतपुर - पो० गोकुलपुरी
दिल्ली - ९४;

(१५) श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह - पूर्व विधायक. अधिवक्ता
चक्कर - मुजफ्फरपुर, बिहार.
फोन - डेरा - २५४२२२.

(१६) श्री राम सिंह तोमर; पूर्वपल्ली - शान्तिनिकेतन
पश्चिम - बंगाल — पिन - 731235
रेलस्टेशन - बोलपुर

(१७) श्री अभयनारायण राय,
श्री रामफेर राय
} साकिन गौतमीय.
पो० विश्वामित्र कॉलेज
मठिया - चौसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

(१८).

श्री सिद्धेश्वरी प्रसाद सिंह } सहोदर भाई.
श्री रत्नेश्वरी प्रसाद सिंह }
खरौना कोठी - I A. सूपिबाग-महमूरगंज
वाराणसी - फोन नं. ३६०५९३.
श्री अरुण सिंह —— रेली० १९८० पेज नं. 146

(१९) श्री धर्मदेव शर्मा - रेल-अधिकार इन्चार्ज. मूरी
मूरी-स्टेशन पर

" रेलवे स्टेशन पर पश्चिम और-दक्षिण बंगाल में जी० आर० पी० थाना है. वहाँ पूछने पर भेंट हो सकती है।"

(२०) श्री बिक्रमा ठाकुर, आवास संख्या "F-N" २८२
सी० सी० एल० कालोनी, पी०टी०पी० एस० पतरातू
हजारी बाग, पिन - 829119

(२१) श्री हरिकृष्ण पाण्डेय, क्वार्टर नं० - बी - 143
सेक्टर II, सेल सेटेलाइट कालोनी
धुर्वा - राँची / फोन नं० - 409245

श्री महेश पाण्डेय, क्वार्टर नं० 19, रोड नं० 17
टेल्को कालोनी - टाटानगर (घड़ी पार्क के नजदीक)
श्री रामसुरेश सिंह प्रमुख, ग्राम व पो० - बरबीघा
जिला - शेखपुरा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

से

H.K. Pandey
B. 1.43
जेट लाईट कालनी.

रेलवे लाईन से पार के

भीम नाथ राय - ग्रा० पो० अँजोरपुर
जि० बलिया (उ०प्र०)

दूरभाष - फोन - कोड नं० 0549
टेलीफोन - 892144.
05480 - 25521.44

प्रशिक्षण केन्द्र - सीतापुर का अखिलेश समझ

पता: →
अखिलेश राय
आर० एस० आई० कोर्स
एच० टी० सी० सीतापुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

श्री रामलखन राय. द्वारा श्री [illegible]

ग्राम - ~~लालपुर~~ लालपुर,
डा० - बघराई,
जि० - गोरखपुर,

श्री राधाकृष्ण राय

श्री इन्द्रजीत शर्मा
26/5. आर्मेनियन स्ट्रीट
कलकत्ता.
(पं० बं०).

सुरेन्द्र नाथ शर्मा. (सी० टी० ओ०)
कालीन-बुनाई-प्रशिक्षण केन्द्र
ग्राम-पो० नागथात, देहरादून
जिला- देहरादून (उ०प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

परानीपुर, मंजा तहसील के रिश्तों का पता : →

① शंभुनाथ मिश्र –
② हरिप्रसाद मिश्र, रमाशंकर मिश्र
④ चन्द्रमा प्रसाद मिश्र · उर्फ बाबूजी.

~~श्री विश्वेश्वरशंकर मिश्र~~ — (श्री शम्भुनाथ मिश्र)
~~दुर्गापुर सिमेन्टवर्क्स~~
~~स्टोर्स विभाग~~
~~दुर्गापुर~~ – 3 (पं.बं.)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

N. Rai - 351569

Dr. Ramtwakya Sharma - 654099

Shastri K.P. Mishra (B.J.P. office) - 230529

" Hari Krishna Thakur - 650045

त्रिभुवन ~~नाथ~~ शर्मा

ग्रा० पो० - सहरोज

आजमगढ़

ि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओमप्रकाशराय - अजोधपुर -
जौनपुर
[illegible] - [illegible]
[illegible]

[illegible] इश्तमाम.

सौरा [illegible] -
कलकत्ता.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection